केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN AYURVEDA AND SIDDHA

वार्षिक प्रतिवेदन

ANNUAL REPORT

2002-2003

29

आयुर्वेद, योग व प्राकृतिक चिकित्सा, सिद्ध एवं होम्योपैथी विभाग (आयुष)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
(भारत सरकार) नई दिल्ली

Department of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH)
Ministry of Health & Family Welfare.
(Govt. of India) New Delhi.

वार्षिक प्रतिवेदन

ANNUAL REPORT
2002-2003

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद
(भारत सरकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन गठित स्वशासी निकाय)
जवाहर लाल नेहरु भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी अनुसंधान भवन
नं0 61-65 संस्थानिक क्षेत्र सम्मुख डी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली -110058

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN AYURVEDAAND SIDDHA
(An autonomous organization under Ministry of Health & Family Welfare, Govt. of India)
Jawahar Lal Nehru Bhartiya Chikitsa Evam Homeopathy Anusandhan Bhawan
No.61-65, Institutional Area, Opp. 'D' Block, Janakpuri, New Delhi-110058

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
I	प्राक्कथन	1
II	प्रशासनिक प्रतिवेदन	4
III	तकनीकी प्रतिवेदन	
अ.	**आयुर्वेद**	
1.	संस्थान/केंद्र/एकक के लिए प्रयुक्त संकेताक्षर	15
2.	निदानचिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम	17
	(अ) निदानचिकित्सात्मक परीक्षण	17
	(ब) रोग सममूह, रोगियों की संख्या और निदानचिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम	32
	(स) बहिरंग रोगी विभाग और अंतरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट/निर्मुक्त रोगियों की संख्या	34
	(द) स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम	35
3.	चिकित्सा-प्रजाति वानस्पतिक सर्वेक्षण कार्यक्रम	36
4.	औषध पादप कृषि कार्यक्रम	39
5.	कस्तूरी मृग प्रजनन कार्यक्रम	42
6.	भेषजअभिज्ञानीय अनुसंधान अध्ययन	43
7.	पादप ऊतक संजनन	44
8.	औषध मानकीकरण अनुसंधान कार्यक्रम	45
9.	भेषज गुण विज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम	54
10.	वाङ्.मय अनुसंधान कार्यक्रम	60
11.	परिवार कल्याण अनुसंधान कार्यक्रम	62
12.	आमची चिकित्सा अनुसंधान कार्यक्रम	65
13.	प्रकाशन एवं सहभागिता	66

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
ब.	**सिद्ध**	
1.	संस्थान / एककों के लिए प्रयुक्त संकेताक्षर	87
2.	निदानचिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम	88
3.	चिकित्सा - वानस्पतिक अनुसंधान कार्यक्रम	92
4.	भेषजअभिज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम	97
5.	भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम	98
6.	औषध मानकीकरण अनुसंधान कार्यक्रम	100
7.	भेषज निर्माण	103
8.	वाड.मय अनुसंधान कार्यक्रम	103
9.	प्रकाशन एवं सहभागिता	104
IV.	**आभार**	107
V.	**अंग्रजी रूपान्तर**	1 से 94

I. प्राक्कथन

केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद, आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त शासी निकाय है तथा भारत में आयुर्वेद एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति में वैज्ञानिक विधि से शोध कार्य प्रतिपादित करने, उसमें समन्वय स्थापित करने, उसका विकास करने एवं समुन्नत करने से संबंधित शीर्ष संस्था है । यह परिषद देश के विभिन्न भागों में स्थित आयुर्वेद एवं सिद्ध के विश्वविद्यालयों/संस्थानों/अस्पतालों के माध्यम से अपने उद्देश्यों एवं कार्यों का संचालन एवं नियंत्रण करती है । प्रतिवेदन अवधि के दौरान विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों के अंतर्गत किए गए कार्यों का विवरण इस प्रकार है:-

निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम

आयुर्वेद में निदान चिकित्सात्मक कार्यक्रम के अंतर्गत तमक श्वास, परिणामशूल, ग्रहणी, अर्श, भगन्दर, कामला, मूत्राश्मरी, मधुमेह, व्यानबल वैषम्य, मेदोरोग, पक्षवध, पंगु, गृध्रसी, आमवात, मनोद्वेग, अपस्मार, मानसमंदता, तिमिर रोग, किटिभ, विषमज्वर एवं श्लीपद आदि का अध्ययन किया गया ।

सिद्ध चिकित्सा पद्धति के निदान चिकित्सात्मक कार्यक्रम के अंतर्गत इस वर्ष कलंजगपादाई, पुत्रुनोई, वलिगुन्मम्, मांजलकामलाई, संधिवाथशुलाई, यनिक्कल नोई, वेन्कुट्टम आदि रोगों का अध्ययन किया गया ।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत परिषद के विभिन्न संस्थानों/केंद्रों/एककों के अंतर्गत 5,20,732 रोगियों को बहिरंग रोगी विभाग तथा 2,479 रोगियों को अंतरंग रोगी विभाग में चिकित्सा प्रदान की गई ।

स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम

स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान को ग्रामोन्मुखी बनाया गया है ताकि अनुसंधान कार्यक्रमों का लाभ जनसामान्य को मिल सके । इस कार्यक्रम के अंतर्गत अनुसंधान कार्मिकों का दल अध्ययन के लिए चुने/अपनाए गए गांवों आदिवासी पॉकेटों में घर-घर जाते हैं और क्षेत्र में व्याप्त रोगों की प्रकृति एवं प्रसार, विभिन्न ऋतुओं के आहार-विहार, सामाजिक, आर्थिक पहलुओं, प्राकृतिक संसाधनों, रहने के स्तर तथा ग्रामीण/आदिवासी क्षेत्रों में उपलब्ध चिकित्सा के प्रकार से संबंधित आंकड़े एकत्र करने के अतिरिक्त आकस्मिक चिकित्सा सहायता प्रदान करता है । प्रतिवेदन अवधि के दौरान इस

कार्यक्रम के अंतर्गत 15 गांवों की 22,226 आबादी का अध्ययन किया गया तथा 7,299 रोगियों को आकस्मिक चिकित्सा सहायता प्रदान की गई ।

औषध अनुसंधान कार्यक्रम

औषध अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण, औषध पादप कृषि, भेषजअभिज्ञानीय, पादप-रासायनिक, भेषजगुणविज्ञानीय/विषाक्तता अध्ययन के अतिरिक्त औषध मानकीकरण अनुसंधान कार्यक्रम भी सम्मिलित है । औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत 14 सर्वेक्षण दौरे किए गए जिनमें 1658 पादप किस्में, 175 कच्ची औषधियों के अतिरिक्त 85 संग्रहालय नमूनों को एकत्र किया गया । इसके अतिरिक्त 165 औषध नमूनों, जिनका वजन 774.5 कि.ग्रा. था, को आपूर्ति के लिए एकत्र किया गया । सर्वेक्षण एककों द्वारा उद्भिदालय और संग्रहालय के रखरखाव का कार्य किया गया । लगभग 455 औषध पादप किस्मों के साथ 14817 गुग्गुलु के पादप वर्तमान में विभिन्न औषध पादप उद्यानों में उग रहे हैं । 204.27 कि.ग्रा सूखी एवं ताजी कच्चो औषधियों का विभिन्न उद्यानों से संग्रह किया गया और अनुसंधान के उद्देश्य के लिए विभिन्न संस्थानों को आपूर्ति की गई। प्रतिवेदन अवधि के दौरान आयुर्वेद एवं सिद्ध चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाली औषधियों में से 19 औषधियों पर भेषजअभिज्ञानीय अध्ययन, 11 औषधियों पर रसायनिक अध्ययन तथा 29 औषधियों पर भेषजगुणविज्ञानीय अध्ययन तथा विषाक्तता अध्ययन किए गए ।

औषध मानकीकरण अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत 38 एकल पादप औषधियों पर भेषजअभिज्ञानीय, पादप-रसायनिक/टी.एल.सी. अध्ययन किए गए । आयुर्वेद एवं सिद्ध में प्रयुक्त होने वाले 84 औषध योगों के विश्लेषित मानक तैयार किए गए । इसके अतिरिक्त भारतीय चिकित्सा पद्धति की औषधियों के भेषज संहिता मानकों के विकास के लिए केंद्रीय योजना के अंतर्गत आबंटित आयुर्वेदिक फार्माकोपिया मानकों के फार्मेट के अनुसार 33 एकल मिश्रित योगों का मानकीकरण किया गया तथा प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत तीन योगों के मानकीकरण का कार्य भी किया गया । परियोजना के अंतर्गत भारतीय चिकित्सा पद्धति को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के स्तर तक शुरु करने के लिए 14 आयुर्वेदिक योग तैयार किए गए तथा गुणवत्ता आश्वस्त की गई ।

परिषद द्वारा कुमाऊँ की पहाड़ियों में महरुरी में एक कस्तूरी मृग प्रजनन फार्म का रखरखाव किया जाता है तथा वहां पर प्रतिवेदन अवधि के अंत तक 22 वयस्क मृग थे ।

वाङ्.मय अनुसंधान कार्यक्रम

वाङ्.मय अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत चिकित्सा इतिहास अध्ययन, शास्त्रीय ग्रंथों, कोषविज्ञान, समसामयिक साहित्य, आयुर्वेद एवं सिद्ध तथा आधुनिक चिकित्सा के प्रकाशनों,

औषध एवं रोगों से संबंधित संदर्भों के संकलन के कार्य को जारी रखा गया । परिषद् द्वारा 'आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका,' 'चिकित्सा प्रजाति-वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका,' 'भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका' के अतिरिक्त परिषद समाचार भी प्रकाशित किए जाते हैं । प्रतिवेदन अवधि के दौरान आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका और चिकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका के पिछले अंकों का भी प्रकाशन किया गया तथा 3 पुस्तकों/मोनोग्राफों का प्रकाशन किया गया ।

परिवार कल्याण अनुसंधान कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के अंतर्गत गर्भनिरोधक औषधियों का निदान-चिकित्सात्मक तथा भेषजगुणविज्ञानीय अध्ययन किया जाता है । पिप्पल्यादि योग (मुखीय) और नीम तैल (स्थानीय) गर्भ निरोधकों का निदान चिकित्सात्मक मूल्यांकन हेतु 182 पुराने रोगियों के अतिरिक्त 93 नए रोगियों पर अध्ययन किया गया । 4 औषधियों पर भेषजगुणविज्ञानीय अध्ययन किया गया । प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत बालकास, बालातिसार, बाल दौर्बल्य तथा शिशुपरिचर्या पर कार्य किया गया तथा कुल 335 रोगियों पर अध्ययन किया गया ।

संगोष्ठी, सम्मेलन और कार्यशाला

प्रतिवेदन अवधि के दौरान परिषद ने अक्तूबर, 2002 में नई दिल्ली में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रायोजित आयुर्वेद एवं सिद्ध में अनुसंधान कार्य-प्रणाली पर एक पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की जब कि केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, कोलकाता ने भारतीय आयुर्वेदिक डाक्टर संघ के साथ संयुक्त रूप से 'गुद रोगों' पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला जुलाई, 2002 में आयोजित की । परिषद के अधिकारियों ने अनेक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया ।

(जी. एस. लव्हेकर)
निदेशक एवं
सदस्य-सचिव,
शासी निकाय,
के.आयु.सि.अनु.परि.

दिनांक 10.12.2003

II. प्रशासनिक प्रतिवेदन

केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद सोसायटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1860 के नियम XXI के अंतर्गत 30 मार्च, 1978 को पंजीकृत एक संस्था है । 31 मार्च, 2003 को समाप्त प्रतिवेदन अवधि में संस्था तथा शासी निकाय के सदस्य इस प्रकार हैं-

अध्यक्ष

(i). डा. सी. पी. ठाकुर
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री,
(जून, 2002 तक)

(ii). श्री शत्रुघन सिन्हा
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री,
(जुलाई, 2002 से जनवरी, 2003 तक)

(iii). श्रीमती सुषमा स्वराज
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री,
(29 जनवरी, 2003 से)

उपाध्यक्ष

वैद्य श्रीराम शर्मा

शासकीय सदस्य

1. सचिव (भा.चि.प.एवं हो.) — श्रीमती मालती एस. सिन्हा
2. संयुक्त सचिव (भा.चि.प.एवं हो. — श्री एल. प्रसाद
3. संयुक्त सचिव (वित्त सलाहकार) — श्री राकेश बिहारी

अशासकीय सदस्य

1. डा. आई. संजीव राव
2. डा.(श्रीमती) जी. वी. सत्यवती
3. डा.(सुश्री.) पी. वी. तिवारी
4. डा. डी. के. त्रिगुणा
5. डा. नरेन्द्र एस. भट्ट
6. डा. एस. के. मिश्रा
7. प्रो. एस. डी. सेठ
8. प्रो. के. वी. राघवन
9. डा. पी. पुष्पांगदन
10. डा. जे. आर. कृष्णामूर्ति

निदेशक, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर
निदेशक, राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान, चैन्नई
सदस्य सचिव

11. डा. पी. जयप्रकाश नारायण
12.डा.(श्रीमती) गौरी देवी
-डा. बी. एल. गौड़
- रिक्त -
(i) डा. जी. वेलुचामी
(8 जनवरी, 2003 तक)
(ii) डा. जी. एस. लक्हेकर
(9 जनवरी, 2003 से)

प्रतिवेदन अवधि में शासी निकाय की कोई बैठक नहीं हुई ।

वित्त समिति

स्थायी वित्त समिति निम्नप्रकार से गठित है -

1.	श्री एल. प्रसाद संयुक्त सचिव (भा.च.प.एवं हो.)	अध्यक्ष
2.	श्री राकेश बिहारी संयुक्त सचिव (वि.स.)	सदस्य
3.	वैद्य डी. के. त्रिगुणा	सदस्य
4.	डा. (सुश्री) पी. वी. तिवारी	सदस्य
5.	परिषद निदेशक	सदस्य-सचिव

प्रतिवेदन अवधि के दौरान स्थायी वित्त समिति की 11 जून, 2002 और 22 जनवरी, 2003 को बैठकें हुईं तथा वित्तीय मामलों से संबंधित विषयों पर विचार किया गया और स्वीकृति दी गई ।

परिषद की सेवाओं में अनुसूचित जाति/जन-जाति का प्रतिनिधित्व एवं अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति के लिए कल्याणकारी उपाय

परिषद की सेवाओं में अनुसूचित जाति/अनु.जन जाति के आरक्षण और प्रतिनिधित्व के संबंध में भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए गए आदेशों और दिशा-निर्देशों का

पालन किया जा रहा है । भर्ती/पदोन्नति रोस्टर बिंदु के अनुसार की जा रही है । परिषद में विभिन्न समूहों में 1.1.2003 के अनुसार कर्मचारियों की कुल संख्या इस प्रकार है:-

समूह	कर्मचारियों की संख्या	अनुसूचित जाति	कर्मचारियों का कुल प्रतिशत	अनुसूचित जन-जाति के कर्मचारी	कुल का प्रतिशत
क	218	26	11.93	9	4.12
ख	66	10	15.15	2	3.03
ग	580	79	13.62	22	3.79
घ	651	227	34.87	57	8.75
योग	**1515**	**342**	**22.58**	**90**	**5.94**

परिषद के अंतर्गत आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा कार्यक्रम परियोजना (आयु.) है जो कि विशेषरूप से आदिवासी क्षेत्रों में स्थित है । इस कार्यक्रम में न केवल स्थानीय स्वास्थ्य समस्याओं और उनसे संबंधित विषयों पर अपितु इन समस्याओं को सुलझाने की विधियों/उपायों की पहचान और कार्यान्वयन पर अधिक ध्यान दिया जाता है । इसके अतिरिक्त कुछ अनुसंधान संस्थान/केंद्र/एकक भी ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं तथा इन संस्थानों/केंद्रों/एककों के बहिरंग रोगी विभाग/अंतरंग रोगी विभाग के माध्यम से और चल निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम/सामुदायिक स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत आकस्मिक चिकित्सा प्रदान की जाती है एवं अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन-जाति बहुल संख्या वाले क्षेत्रों में स्वास्थ्य लाभ की सुविधा प्रदान की जाती है । परिषद के बजट में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन-जाति संबंधी योजना के लिए विशेष बजट आबंटन है ।

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (आयुर्वेद)

प्रतिवेदन अवधि के अंतर्गत वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (आयु.) निम्नप्रकार से गठित थी:-

1.	डा.(श्रीमती) जी. वी.सत्यवती (24 फरवरी, 2003 तक)	अध्यक्ष
	प्रो. जी. पी. दूबे (25 फरवरी, 2003 से)	अध्यक्ष
2.	वैद्य नरेन्द्र एस. भट्ट	सदस्य
3.	वैद्य डी. के. त्रिगुणा	सदस्य
4.	वैद्य बालेन्दु प्रकाश	सदस्य
5.	श्री प्रमोद कुमार शर्मा	सदस्य
6.	डा. एस. के. मिश्रा	सदस्य

7.	वैद्य नन्द किशोर	सदस्य
8.	डा. कुलवन्त सिंह	सदस्य
9.	डा.(श्रीमती) एम. गौरी देवी	सदस्य
10.	डा.एस.एन.पी.सिन्हा	सदस्य
11.	डा. एस. के. सिन्हा	सदस्य
12.	प्रो. के. वी. राघवन	सदस्य
13.	डा. राधा कृष्णन	सदस्य
14.	डा. एस. के. शर्मा, सलाहकार (आयु.),भा.चि.प.एवं हो.विभाग	पदेन सदस्य
15.	प्रो. अरुण बालकृष्णन (7 नवम्बर, 2002 से)	सदस्य
16.	(i) डा. जी. वेलुचामी	सदस्य-सचिव
	(ii) डा. जी. एस. लव्हेकर	सदस्य-सचिव

प्रतिवेदन अवधि में दिनांक 5-6 अगस्त, 2002 एवं 28 मार्च, 2003 को वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (आयु.) की दो बैठकें हुईं । समिति ने कार्यक्रमों का मूल्यांकन कर, आवश्यक मार्गदर्शन का प्रावधान किया ।

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (सिद्ध)

प्रतिवेदन अवधि के दौरान वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (सिद्ध) निम्नप्रकार से गठित थी:-

1.	डा. के. जयपाल	अध्यक्ष
2.	डा. जे. आर. कृष्णामूर्ति	सदस्य
3.	डा. वी. सुब्बालक्ष्मी	सदस्य
4.	डा. के. जयपाल (24 फरवरी, 2003 तक)	सदस्य
	डा. वी. अरुणाचलम (25 फरवरी, 2003 से)	सदस्य
5.	डा. जोसफ थास	सदस्य
6.	डा. नारायणाप्पा	सदस्य
7.	डा. एस. राधाकृष्ण	सदस्य
8.	निदेशक, केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध), चेन्नई	सदस्य
9.	निदेशक, के.आयु.सि.अनु.परि.	सदस्य-सचिव

प्रतिवेदन अवधि में दिनांक 24 मार्च, 2003 को वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (सिद्ध) की बैठक संपन्न हुई ।

केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद का संगठनात्मक स्वरूप

परिषद के अंतर्गत 10 केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, 15 क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, एक क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, एक आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना, एक तिब्बती चिकित्सा पर अनुसंधान परियोजना, केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध), चेन्नई के सीधे नियंत्रण में मैट्टूर में सिद्ध चिकित्सा पद्धति पर एक औषध पादप उद्यान, भारतीय चिकित्सा इतिहास संस्थान, हैदराबाद, ए. लक्ष्मीपति आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र और कैप्टन श्रीनिवासमूर्ति आयुर्वेद औषध अनुसंधान संस्थान, चेन्नई तथा आयुर्वेदिक अनुसंधान एकक, बंगलूर, निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (आयु.), कोटाकल अहमदाबाद और जामनगर में कार्यरत है ।

बज़ट

निम्नलिखित तालिका में परिषद के बज़ट प्रावधान को दिखाया गया है:-

योजना व्यय	बज़ट अनुमान 2002-2003	2002-2003 मे जारी निधियां (रुपये लाखों में)	2002-2003 में वास्तविक व्यय
योजना	800.00	741.00	807.60
गैर-योजना	1988.00	2041.50	2216.26

परिषद के वर्ष 2002-2003 के 1 अप्रैल, 2002 से 31 मार्च, 2003 तक के लेखों की महानिदेशक लेखा परीक्षा, केंद्रीय राजस्व द्वारा परीक्षित किया गया ।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

परिषद के अंतर्गत राजभाषा कार्यान्वयन समिति परिषद निदेशक की अध्यक्षता में बनी हुई है जो राजभाषा अधिनियम/नीति/नियमों/आदेशों, कार्यक्रमों आदि के कार्यान्वयन की स्थिति तथा परिषद में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए परामर्श देती है । प्रतिवेदन अवधि के दौरान समिति की दो बैठकें 13.8.02 तथा 9.12.2002 को हुईं ।

संगोष्ठी तथा सम्मेलन

1. गुद रोगों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला में केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद), कोलकाता की सहभागिता ।

भारत के आयुर्वेदिक चिकित्सकों के संघ एवं केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), कोलकाता द्वारा संयुक्त रूप से गुद रोगों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह कार्यशाला का केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, कोलकाता के परिसर में 28 से 30 जुलाई, 2002 तक आयोजन किया गया तथा भारत के विभिन्न भागों से 250 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसमें विशेषज्ञ विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सक शामिल थे । इसमें आयुर्वेदिक कॉलेज, कोलकाता,

नागपुर और मुम्बई के संकाय सदस्यों के साथ छात्र भी उपस्थित थे । संगोष्ठी का उद्घाटन पश्चिमी बंगाल सरकार के माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री, श्री प्रत्यूष मुखर्जी ने किया तथा शमयिता मठ, बंकुरा जनपद, पश्चिम बंगाल की माता ऋषि रिधा अनाहता ने सभा को संबोधित किया । श्री आदित्य अग्रवाल, निदेशक, हिमानी आयुर्वेद साईंस फाऊन्डेशन ने विशेष अतिथि के रूप में भाग लिया जबकि डा.के.वी.देवीदास, अध्यक्ष, संगोष्ठी आयोजन समिति ने वहां उपस्थित लोगों का स्वागत किया । डा. एम.एम. राव, आयोजन सचिव ने संगोष्ठी के विषय क्षेत्र और संभावनाओं के बारे में बताया ।

डा. के. के. चोपडा, पूर्व निदेशक, केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), मुम्बई, डा. वी.सन्धवी, क्षार सूत्र के विशेषज्ञ, मुम्बई, डा. मुकुल पटेल तथा डा. श्रीमती मेधा पटेल, सूरत, डा. टी. के. दास गुप्ता, सदस्य, लूथरन वर्ल्ड सर्विस, इंडियन और जे. आई.एम.ए. के उप-संपादक जैसे विद्वान लोगों ने सभा को संबोधित किया । केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद एवं अन्य सरकार द्वारा स्थापित संस्थानों के अंतर्गत कार्यरत अनुसंधान कार्मिकों ने गुद रोगों के विभिन्न पहलुओं पर 6 अतिथि व्याख्यान, 21 अनुसंधान पत्रक प्रस्तुत किए गए । इसके अतिरिक्त गुद रोगों के विभिन्न पहलुओं को जीवित प्रस्तुत किया गया तथा कुछ भाग का नवीकरण किए गए ऑपरेशन थियेटर में क्षार सूत्र पद्धति का प्रदर्शन किया गया तथा उसे ऑपरेशन थियेटर के बाहर रखे गए टेलिविज़न सैट के द्वारा भी दिखाया गया ।

2. केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद के मुख्यालय, नई दिल्ली में अनुसंधान कार्यप्रणाली पर प्रशिक्षण कार्यशाला ।

परिषद ने 21 से 25 अक्तूबर, 2002 तक परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली में विश्व-स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रायोजित 'आयुर्वेद एवं सिद्ध में अनुसंधान कार्यप्रणाली पर प्रशिक्षण कार्यशाला' का आयोजन किया । इस कार्यशाला के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम को डा.जी.वी.सत्यवती, पूर्व महानिदेशक, आई.सी.एम.आर. तथा अध्यक्ष, वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (आयु.), डा.एस.राधाकृष्णन, पूर्व निदेशक, आई.आर.एम.एस.(आई.सी.एम.आर.) चेन्नई तथा सदस्य (वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (आयु.)/वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (सिद्ध) से विचार-विमर्श करने के बाद अंतिम रूप दिया गया । कार्यशाला का उद्घाटन डा.जी.वी.सत्यवती ने किया, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विशेष क्षेत्रों जैसे अच्छी निदान चिकित्सात्मक प्रक्रिया, निदानचिकित्सात्मक परीक्षणों की योजना से संबंधित मुद्दों, आचार संबंधी विचार, निदान-चिकित्सात्मक परीक्षणों की योजना में बायो-स्टेटिस्टिशियन की भूमिका, प्रयोगशालाओं का मानक तथा औषधियों के गुणवत्ता नियंत्रण पर प्रकाश डाला गया । इसके अतिरिक्त कम्प्यूटर एप्लीकेशन पर व्याख्यान दिया गया । डा. जी.वी.सत्यवती, पूर्व-महानिदेशक, आई.सी.एम.आर., डा.एस.डी.सेठ, पूर्व औषधि विभागाध्यक्ष, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली, डा. वसन्था मुथुस्वामी, वरिष्ठ उपमहानिदेशक, आई.सी.एम.आर., डा.राधाकृष्णन, पूर्व निदेशक, आई.आर.एम.एस.(आई.सी.एम.आर.), चेन्नई,

डा.एस.एस.हान्डा, पूर्व निदेशक, क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला (सी.एस.आई.आर.), जम्मू, डा. पी. जयबल, उपनिदेशक, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एपिडेमिआलोजी, (आई.सी.एम.आर.), चेन्नई, डा.एन.एस.भट्ट, निदेशक, बायो-वेद फार्मा, पुणे, डा. जयप्रकाश नारायण, प्रधानाचार्य, गवर्नमेंट सिद्ध मेडिकल कॉलेज, चेन्नई, डा. आर. एम. पाण्डेय, सहायक प्रोफैसर (बायो-स्टेट.), अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली ने प्रशिक्षण में भाग लिया । केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों से 42 वैज्ञानिकों तथा दीनदयाल उपाध्याय अनुसंधान संथान, चित्रकूट से दो वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में भाग लिया ।

प्रतिभागियों को डाबर रिसर्च फाऊन्डेशन, गाजियाबाद की आर. एण्ड डी. लैब. में भी ले जाया गया । पूर्व में बनाई गई एक प्रश्नोत्तरी का प्रयोग करके प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया का मूल्यांकन किया गया तथा मूल्यांकन में अच्छी प्रतिक्रिया पाई गई ।

3. काठमांडू, नेपाल में "कंजर्वेशन एण्ड मैनेजमेंट ऑफ हिमालयान मेडिसिनल प्लांट्स" पर क्षेत्रीय कार्यशाला, में परिषद की सहभागिता ।

डा. पदम गुरमेत, अनुसंधान अधिकारी, आमची औषधि अनुसंधान एकक, लेह-लद्दाख (जम्मू एवं कश्मीर) ने 'वाइज़ प्रैक्टिसिज एण्ड एक्सपैरिमेंटल लर्निंग इन द कंजर्वेशन एण्ड मैनेजमेंट ऑफ हिमालयान मेडिसिनल प्लांट्स' की क्षेत्रीय कार्यशाला में (आमंत्रण पर) भाग लिया । कार्यशाला 15-20 दिसंबर, 2002 तक काठमांडू नेपाल में आयोजित हुई । इसका आयोजन मुख्य अंतर्राष्ट्रीय परिरक्षण संगठन जैसे डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ., आई.डी.आर.सी. (एम.ए.पी.पी.ए.), केनेडा, पिपुल एण्ड प्लांट्स इनिशियेटिव, यूनेस्को एण्ड नेपाल सरकार द्वारा किया गया । कार्यशाला में आठ देशों के विशेषज्ञों ने भाग लिया जिसमें नेपाल, चीन, भारत, भूटान तथा पाकिस्तान आदि सम्मिलित थे ।

डा. गुरमेत ने 'स्टेट्स एण्ड कंजर्वेशन ऑफ ट्रांस-हिमालयान मेडिसिनल प्लांट्स' पर पत्रक प्रस्तुत किया, जिसमें विभिन्न ट्रांस हिमालयान सर्वेक्षण के दौरान किए गए अवलोकनों पर प्रकाश डाला तथा उनके परिरक्षण के लिए प्रयास किए । उन्होंने कार्यशाला की संस्तुतियों पर बहुत कार्य किया ।

4. राजभाषा की संसदीय उप-समिति का केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद मुख्यालय और क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जम्मू में आगमन ।

राजभाषा की तीसरी संसदीय उप-समिति ने परिषद मुख्यालय की राजभाषा से संबंधित उन्नति एवं कार्यों का 19 सितम्बर, 2002 को निरीक्षण किया । श्री नवल किशोर राय ने बैठक की अध्यक्षता की और श्री अमल राय प्रधान, श्रीमती कान्ता सिंह, श्रीमती सरला महेश्वरी, प्रो. प्रमोद सिंह भण्डारी और डा. सी. नारायण पाद्दी ने बैठक में सक्रिय रूप से भाग लिया । समिति ने सुझाव दिया कि क्योंकि यह आयुर्वेद की परिषद है इसलिए इसमें

अधिकाधिक कार्य हिंदी में होना चाहिए । डा. जी. वेलुच्चामी, निदेशक ने आश्वासन दिया कि समिति द्वारा दिए गए सभी सुझावों पर परिषद विचार करेगी ।

उप-समिति ने क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जम्मू का 3 फरवरी, 2003 को राजभाषा से संबंधित प्रगति एवं कार्य का भी निरीक्षण किया ।

5. परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली में केंद्रीय और क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थानों (आयुर्वेद एवं सिद्ध) के प्रभारियों की बैठक

केंद्रीय अनुसंधान संस्थानों और क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थानों (आयुर्वेद एवं सिद्ध) के प्रभारियों की नए कार्यक्रम परियोजना के लिए चल रहे अनुसंधान प्रस्तावों का पुनरावलोकन करने के लिए 20 एवं 27 फरवरी, 2003 को परिषद मुख्यालय में बैठक हुई ।

डा. के. डी. शर्मा, उप-निदेशक (तकनीकी) ने वरिष्ठ अधिकारियों का स्वागत किया और निदेशक महोदय से परिचय करवाया ।

सभी प्रभारियों ने अपने-अपने संस्थान की पिछले वर्षों की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया तथा अपने संस्थान की वैज्ञानिक उपलब्धियों के बारे में भी बताया ।

6. 'कश्मीर-विज़न 2002 - एक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी और व्यवसाय - शिखर सम्मेलन - में परिषद की सहभागिता

20-23 जून, 2002 को एस.के.आई.सी.सी., श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर में आयोजित 'कश्मीर-विज़न 2002 - एक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी और व्यवसाय - शिखर सम्मेलन - में भाग लेने के लिए परिषद के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), जम्मू से एक दल को प्रतिनियुक्त किया गया ।

श्री जार्ज फर्नान्डिस, रक्षा मंत्री, भारत सरकार ने व्यवसाय शिखर सम्मेलन और प्रदर्शनी का उद्घाटन किया ।

परिषद की गतिविधियों ओर उपलब्धियों से संबंधित सूचना सामग्री को आगन्तुकों में बाँटा गया तथा परिषद के चिकित्सकों द्वारा रोगियों को परामर्श दिया गया एवं निःशुल्क आयुर्वेदिक औषधियाँ दी गईं ।

प्रदर्शनियाँ/मेलेः

परिषद ने निम्नलिखित प्रदर्शनियों/मेलों में भाग लियाः

1. आरोग्य-2002, होटल शिवालिक, चण्डीगढ़

चण्डीगढ़ पर्यटन विभाग और सी.आई.टी.सी.ओ., इंस्टीट्यूट ऑफ टूरिज्म एण्ड फ्यूचर ट्रेन्ड्स (आई.टी.एफ.टी.) ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, भारत सरकार (भा.चि.प.एवं

हो.) के तत्वावधान में भारतीय चिकित्सा पद्धति के माध्यम से पर्यटन और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए आरोग्य विषयवस्तु पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। इसके अतिरिक्त होटल शिवालिक वियू, सैक्टर-17, चंडीगढ़ में 31 मार्च से 2 अप्रैल, 2002 तक एक 'एक्सपो' भी आयोजित किया, जिसमें भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी विभाग के अंतर्गत आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी, होम्योपैथी, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा जैसी विभिन्न परिषदों ने भाग लिया तथा आम जनता की जानकारी के लिए प्रदर्शनी का आयोजन किया ।

2. परिवार कल्याण एवं स्वास्थ्य मेला

(क) धर्मशाला, जनपद कांगड़ा (हि.प्र.)

श्री किशन कपूर, परिवहन मंत्री, हिमाचल प्रदेश ने, कांगड़ा जनपद के लोगों में जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ निःशुल्क चिकित्सा सेवा देने के लिए 31 मई, 2002 को धर्मशाला, जनपद कांगड़ा (हि.प्र.) में, 'परिवार कल्याण एवं स्वास्थ्य मेले' का उद्घाटन किया । केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद ने क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, मण्डी के माध्यम से इसमें भाग लिया तथा आगंतुकों को उनके स्वास्थ्य के विषय में शिक्षा देने संबंधी पोस्टरों और परिषद की अनुसंधान गतिविधियों पर प्रकाशनों का प्रदर्शन करने के अतिरिक्त रोगियों के निदान के लिए 31 मई से 2 जून, 2002 तक एक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया ।

(ख) चम्बा (हि.प्र.)

केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), मण्डी से एक दल को 6 से 8 जून, 2002 तक चम्बा में आयोजित स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मेले में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्त किया । श्री मोहन लाल, आयुर्वेद मंत्री, हिमाचल प्रदेश ने चम्बा में मेले का उद्घाटन किया । क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), मण्डी ने रोगियों के निदान के लिए और निःशुल्क औषधियों की आपूर्ति के लिए चिकित्सा शिविर का आयोजन किया तथा आगंतुकों के लिए परिषद के प्रकाशनों, परिषद की अनुसंधान गतिविधियों से संबंधित पोस्टरों को प्रदर्शित किया ।

3. 'स्वास्थ्य मेला - आरोग्य-2002' द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण के बारे में जागरूकता ।

भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार तथा भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से 'आरोग्य-2002' मेले का 11 से 15 दिसंबर, 2002 तक, हॉल नं. 12, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजन किया गया । इस प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी के विभिन्न पहलुओं के बारे में सामान्य जनता में जारूकता पैदा करना तथा स्वास्थ्य

रक्षा में उसकी भूमिका के विषय में बताना है । प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री आर. पी. रुड़ी माननीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री द्वारा किया गया ।

हजारों आगंतुकों के अतिरिक्त कई गणमान्यों जैसे श्री शत्रुघ्न सिन्हा, माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, भारत सरकार, श्री विनोद खन्ना, माननीय पर्यटन राज्य मंत्री, श्री आई.डी.स्वामी, माननीय गृह राज्य मंत्री भी प्रदर्शनी में आए तथा परिषद की गतिविधियों में गहरी रुचि दिखाई । डा.सी.पी.ठाकुर, संसद सदस्य ने समापन भाषण दिया ।

4. टीकमगढ़ (म.प्र.)

डा. हरिमोहनलाल मीणा, सहायक अनुसंधान अधिकारी (आयु.), केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ग्वा.लियर के नेतृत्व में पांच सदस्यों के एक दल ने 21-28 दिसम्बर, 2002 तक राजेन्द्र अस्पताल, टीकमगढ़ (म.प्र.) में आयोजित स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मेले में भाग लिया ।

परिषद के स्टॉल में उद्भिदालय तथा औषधीय पादपों के नमूनों, औषधीय पादपों के रंगीन छाया चित्र और कच्ची औषधियों के नमूनों को प्रदर्शित किया गया । चिकित्सकों ने रोगियों का निरीक्षण किया तथा निःशुल्क औषधियों का वितरण किया ।

5. जोधपुर (राजस्थान)

भारतीय विपणन विकास केंद्र, जोधपुर में 22.12.2002 से 31.12.2002 तक स्वदेशी मेले का आयोजन किया गया । केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), जयपुर ने मेले में भाग लिया और रोगियों के निदान के लिए चिकित्सा शिविर का आयोजन किया तथा उन्हें निःशुल्क औषधियां वितरित कीं । स्वदेशी मेले का उद्घाटन श्री शाह नवाज हुसैन, माननीय नागर विमानन मंत्री, भारत सरकार द्वारा किया गया ।

श्री जसवन्त सिंह, सदस्य, राज्य सभा, श्री मुरलीधर रॉव, संयोजक, अखिल भारतीय स्वदेशी जागरण मंच, स्वामी सत्य मित्रानन्द, महामण्डलेश्वर आदि प्रमुख गणमान्यों ने परिषद के स्टॉल को देखा । श्री एल. के. अडवाणी, भारत के उप-प्रधानमंत्री ने मेले का समापन किया ।

6. सोनपुर, छपरा (बिहार)

सोनपुर, छपरा (बिहार) में 22.11.2002 से 2.12.2002 तक परिवार कल्याण एवं स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया । श्री रमई राम, माननीय मंत्री, बिहार सरकार ने मेले का उद्घाटन किया । क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), पटना से डा. डी. एन. सिंह, प्रभारी अनुसंधान अधिकारी (आयु.) के नेतृत्व में सात सदस्यों के एक दल ने परिवार कल्याण एवं स्वास्थ्य मेले में भाग लिया ।

7. झांसी (उ.प्र.)

परिषद के अंतर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), झांसी ने 14 से 19 नवम्बर, 2002 तक झांसी में आयुर्वेद फेस्टिवल में भाग लिया । संस्थान के कर्मचारियों ने मेले में एक स्टॉल लगाया और प्रमाणित कच्ची औषधियों के नमूनों, औषधीय पादपों के पैनल तथा स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के विषय में जानकारी देने वाले चार्टों को प्रदर्शित किया ।

राजभाषा हिंदी सप्ताह का आयोजन

परिषद ने राजभाषा अनुभाग द्वारा परिषद मुख्यालय में 14 से 21 सितम्बर, 2002 तक राजभाषा हिंदी सप्ताह का आयोजन किया । इस अवसर पर वाद-विवाद, निबंध-लेखन और प्रश्नोत्तरी (क्विज़) प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिसमें कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया ।

III. तकनीकी प्रतिवेदन

अ - आयुर्वेद

1. संस्थान/केंद्र/एकक के लिए प्रयुक्त संकेताक्षर

क्र.सं.	संस्थान/केंद्र/एकक का नाम	संकेताक्षर
1.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	के.अनु.सं.दि.
2.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर	के.अनु.सं.भु.
3.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, मुम्बई	के.अनु.सं.मु.
4.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पटियाला	के.अनु.सं.प.
5.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, चेरुतुरुति	के.अनु.सं.चे.
6.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, कोलकाता	के.अनु.सं.को.
7.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, लखनऊ	के.अनु.सं.ल.
8.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर	के.अनु.सं.ग्वा.
9.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जयपुर	के.अनु.सं.ज.
10.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पटना	क्षे.अनु.सं.प.
11.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जूनागढ	क्षे.अनु.सं.जू.
12.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, त्रिवेन्द्रम	क्षे.अनु.सं.त्रि.
13.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ईटानगर	क्षे.अनु.सं.ई.
14.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, गुवाहाटी	क्षे.अनु.सं.गु.
15.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, गंगटोक	क्षे.अनु.सं.गं.
16.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, मंडी	क्षे.अनु.सं.मं.
17.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जम्मू	क्षे.अनु.सं.ज.
18.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, झांसी	क्षे.अनु.सं.झां.
19.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, नागपुर	क्षे.अनु.सं.ना.

20.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, विजयवाड़ा	क्षे.अनु.सं.वि.
21.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, बंगलूर	क्षे.अनु.सं.बं.
22.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ताडीखेत	क्षे.अनु.सं.ता.
23.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पुणे	क्षे.अनु.सं.पु.
24.	भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, हैदराबाद	भा.आयु.इ.सं.है.
25.	कैप्टन श्रीनिवासमूर्ति आयुर्वेद औषध अनुसंधान संस्थान,चेन्नई	कै.श्री.मू.आयु.औ.अनु.सं.चे.
26.	डा.ए.लक्ष्मीपति आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र, वी.एच.एस.चेन्नई	डा.ए.ल.आयु.अनु.के.चे.
27.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र, हस्तिनापुर	क्षे.अनु.के.ह.
28.	चल निदानचिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, जामनगर	च.नि.अनु.ए.जा.
29.	आयुर्वेद अनुसंधान एकक, निम्हांस, बंगलूर	आयु.अनु.ए.बं.
30.	निदानचिकित्सात्मक अनुसंधान एकक(आयु.),कोट्टाकल	नि.चि.अनु.ए.को.
31.	निदानचिकित्सात्मक अनुसंधान एकक परि.क.अनु.प. अहमदाबाद	नि.चि.अनु.ए.अह.
32.	भेषजगुणविज्ञानीय अनुसंधान एकक,परि.क.अनु.प. ,जामनगर	भेवि.अनु.ए.परि.क.जा.
33.	आदिवासी स्वास्थ्य-रक्षा अनुसंधान परियोजना, कार निकोबार	आ.स्वा.अनु.परि.का.नि.
34.	औषध मानकीकरण अनुसंधान परियोजना, जामनगर	औ.मान.अनु.परि.जा.
35.	आमची अनुसंधान एकक, लेह	आ.अनु.ए.ले.
36.	आयुर्वेद चिकित्सा केंद्र, सफदरजंग, नई दिल्ली	आयु.चि.के.सफ.दि.

6.	Group-III The above course without Panchakarma using Panchakola Churna as Prakshepa and Patra Pinda Sweda	RRIN CRIP	14 2	1 -	5 1	7 -	1 1	- -
	Total		487	94	152	110	22	~~42~~ 109

BHAGANDARA (Fistula-in-ano)

Clinical trials on Bhagandara (Fistula-in-ano) were conducted at CRIs: Delhi, Mumbai and Kolkata. A total number of 62 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: BHAGANDARA

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Kshara sutra karma	CRID CRIM	22 11	21 8	- 1	- -	- -	1 2
2.	Ksharavarti (Apamarga)	CRID CRIM CRIK	4 2 23	- - 23	2 - -	- 1 -	- - -	2 1 -
	Total		62	52	3	1	-	6

GRAHANI ROGA (Malabsorption syndrome)

Clinical trials on Grahani Roga (Malabsorptio syndrome) were conducted at CRI, Gwalior, RRIs: Patna & Gangtok. A total number of 51 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following table summarizes the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: GRAHANI ROGA

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Panchamrita Parpati Kalpa with milk	CRIG	11	-	2	4	2	3
2	Bilwa Majjachurna Takrarishta	CRIG RRIG	12 13	- 5	2 7	7 -	- -	3 1
3	Takrarishta	RRIP	15	5	3	5	-	2
	Total		51	10	14	16	2	9

summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: AMAVATA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Pippali Vardhamana Ksheera Paka Samira Pannagarasa	CRIM	19	12	7	-	-	-
		CRIP	9	1	3	2	-	3
		CRIL	12	2	5	4	1	-
		RRIM	13	-	7	5	-	1
		RRIT	11	1	1	2	-	7
		RRIV	12	2	6	3	-	1
2	Combination of Shunthi Guggulu and Godanti	CRIG	54	2	12	17	-	23
		CRIM	22	5	12	5	-	-
		CRIP	6	1	3	2	-	-
		CRIJ	27	8	7	5	1	6
		CRID	10	-	6	-	-	4
		RRIM	19	-	6	10	1	2
		RRIT	3	-	1	1		1
		RRIV	13	1	7	3	1	1
		RRIJh	18	5	7	4	2	-
		RRIJ	13	8	4	1	-	-
		RRIJu	3	2	1	-	-	13
		RRII	18	2	1	1	1	- 12
3.	Suranjana and Shallaki	CRIJ	28	7	5	3	1	12
		CRIP	20	-	2	11	-	7
		RRIN	15	-	1	4	2	8
4.	Panchakarma therapy Group-I Deepana-Pacana (Balaguducyadi kwatha Snehapana with Indukanta ghrita Svedana Vamana	CRI Ch	9	2	1	-	-	6
		CRIK	26	1	15	5	2	3
5.	Group-II Snehapana with Indukanta ghrita Swedana Vamana Samsarjana	CRI Ch	20	6	5	2	4	3
		CRIK	20	3	8	5	3	1
		CRIP	21	4	5	5	-	7
		CRIBh	30	18	7	1	1	3

2. निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम

किसी भी जैव-चिकित्सा अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य चिकित्सीय उपयोग है । अतः विभिन्न प्रकार के चिकित्सा अनुसंधान में इसे विशिष्ट माना जाता है । आयुर्वेद के पक्ष में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि यह मुख्य रूप से निदान चिकित्सात्मक अवलोकनों पर आधारित है ।

प्रतिवेदन अवधि में तमक श्वास, परिणामशूल, ग्रहणी रोग, कामला, अर्श भगन्दर, मुत्राश्मरी, मधुमेह, व्यानबलवैषम्य, मेदोरोग, मनोद्वेग, मानस मंदता, अपस्मार, पक्षाघात, पंगु, गृध्रसी, आमवात, तिमिर रोग, किटिभ, विषमज्वर तथा श्लीपद आदि रोगों पर निदान चिकित्सात्मक अध्ययन किए गए । परिषद के अंतर्गत कार्यरत चिकित्सालयों के बहिरंग रोगी विभाग में 4,53,647 रोगियों को और अंतरंग रोगी विभाग में 2,201 रोगियों को चिकित्सा सहायता प्रदान की गई । विधि, भाग लेने वाले संस्थानों/केंद्रों/एककों, अध्ययन किए गए रोगियों की कुल संख्या तथा परिणामों का विवरण अगले पृष्ठों पर दिया गया है ।

(अ) निदानचिकित्सात्मक परीक्षण

अपस्मार

अपस्मार पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली और आयुर्वेदिक अनुसंधान एकक, बंगलूर में किए गए । कुल 12 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:-

अपस्मार पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	वचादि योग, घन सत्व वचा, ब्राह्मी	के.अनु.सं.दि. आयु.अनु.ए.बं.	11 1	1	2 1		2	6
	योग		**12**	**1**	**3**		**2**	**6**

अर्श

अर्श पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, ग्वा.लियर, कोलकाता, दिल्ली, मुम्बई, भुवनेश्वर, लखनऊ, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पटना, जम्मू, मंडी, बंगलूर और क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, हस्तिनापुर, में किए गए । कुल 695 रोगियों पर विभिन्न प्रकार के निदानचिकित्सात्मक अध्ययन किए गए । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

अर्श पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	कंकायन वटी, त्रिफला चूर्ण एवं सोते समय काशिसादि तैल स्थानीय प्रयोग के लिए	के.अनु.सं.भु.	39	2	2			35
		के.अनु.सं.ल.	46	16	14			16
		के.अनु.सं.ग्वा.	27		3	10		14
		के.अनु.सं.को.	49	14	21	3	1	10
		के.अनु.सं.दि.	38	15	15	4	2	2
		के.अनु.सं.मु.	63	10	13	4		36
		क्षे.अनु.के.ह.	41	11	4	21	5	
		क्षे.अनु.सं.प.	12	3	4	1		4
		क्षे.अनु.सं.ज.	10	8				2
		क्षे.अनु.सं.मं.	25		19	5		1
		क्षे.अनु.सं.बं.	18	5	7			6
2.	ककायन वटी + क्रव्यादि रस, अभयारिष्ट और जात्यादि तैल का स्थानीय प्रयोग ।	के.अनु.सं.ग्वा.	35		11	12	1	11
		के.अनु.सं.को.	105	34	43	10		18
		के.अनु.सं.दि.	29	5	15	5	3	1
		के.अनु.सं.मु.	64	7	14	5		38
		क्षे.अनु.के.ह.	17	6	4	6	1	
		क्षे.अनु.सं.प.	12	3	7			2
		क्षे.अनु.सं.ज.	25	15	8			2
		क्षे.अनु.सं.मं.	22	1	13	7		1
		क्षे.अनु.सं.बं.	18	2	6			10
	योग		**695**	**157**	**223**	**93**	**13**	**209**

आमवात

आमवात पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, मुम्बई, जयपुर, चेरुतुरुति, कोलकाता, पटियाला, लखनऊ, दिल्ली, भुवनेश्वर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, मंडी, त्रिवेंद्रम, विजयवाड़ा, नागपुर, झांसी, जूनागढ़, जम्मू और ईटानगर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 487 रोगियों पर विभिन्न प्रकार से निदानचिकित्सात्मक अध्ययन किए गए । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:-

आमवात पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	वर्धमान पिप्पली क्षीरपाक समीर पन्नगरस	के.अनु.सं.मु.	19	12	7			
		के.अनु.सं.प.	9	1	3	2		3
		के.अनु.सं ल.	12	2	5	4	1	
		क्षे.अनु.सं.मं.	13		7	5		1
		क्षे.अनु.सं.त्रि.	11	1	1	2		7
		क्षे.अनु.सं.वि.	12	2	6	3		1
2.	शुंठी गुग्गुलु एवं गोदन्ती का मिश्रण	के.अनु.सं.ग्वा.	54	2	12	17		23
		के.अनु.सं.मु.	22	5	12	5		
		के.अनु.सं.प.	6	1	3	2		
		के.अनु.सं.ज.	27	8	7	5	1	6
		के.अनु.सं.दि.	10		6			4
		क्षे.अनु.सं.,मं.	19		6	10	1	2
		क्षे.अनु.सं.,त्रि.	3		1	1		1
		क्षे.अनु.सं.,वि.	13	1	7	3	1	1
		क्षे.अनु.सं.,झां.	18	5	7	4	2	
		क्षे.अनु.सं.,ज.	13	8	4	1		
		क्षे.अनु.सं.,जू.	3	2	1			13
		क्षे.अनु.सं.,ई.	18	2	1	1	1	
3.	सुरान्जन एवं शल्लकी	के.अनु.सं.,ज.	28	7	5	3	1	12
		के.अनु.सं.,प.	20		2	11		7
		क्षे.अनु.सं.,ना.	15		1	4	2	8

4.	पंचकर्म चिकित्सा **समूह-I** दीपन-पाचन (बलागुडुच्यादि क्वाथ स्नेहपान -इंदुकांत घृत स्वेदन, वमन	के.अनु.सं.चे. के.अनु.सं.को.	9 26	2 1	1 15	5	2	6 3
5.	**समूह-II** स्नेहपान - इंदुकांत घृत स्वेदन, वमन संसर्जन	के.अनु.सं.चे. के.अनु.सं.को. के.अनु.सं.प. के.अनु.सं.भु.	20 20 21 30	6 3 4 18	5 8 5 7	2 5 5 1	4 3 1	3 1 7 3
6.	**समूह-III** उपरोक्त(बिना पंचकर्म) पंचकोल चूर्ण	क्षे.अनु.सं.ना. के.अनु.सं.प.	14 2	1	5 1	7	1 1	
	योग		**487**	**94**	**152**	**110**	**22**	**112**

भगन्दर

भगन्दर पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली, मुम्बई और कोलकाता में किए गए । कुल 62 रोगियों पर विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:-

भगन्दर पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	क्षार सूत्र कर्म	के.अनु.सं.दि. के.अनु.सं.मु.	22 11	21 8	 1			1 2
2.	क्षारवर्ती (अपामार्ग)	के.अनु.सं.दि. के.अनु.सं.मु. के.अनु.सं.को.	4 2 23	 23	2 	 1 		2 1
	योग		**62**	**52**	**3**	**1**		**6**

ग्रहणी रोग

ग्रहणी रोग पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, ग्वा.लियर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पटना और गंगटोक में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 51 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:-

ग्रहणी रोग पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	पंचामृत पर्पटी कल्प दूध के साथ	के.अनु.सं.ग्वा.	11		2	4	2	3
2.	बिल्वमज्जा चूर्ण तक्र रिष्ट	के.अनु.सं.ग्वा.	12		2	7		3
		क्षे.अनु.सं.गं.	13	5	7			1
3.	तक्ररिष्ट	क्षे.अनु.सं.प.	15	5	3	5		2
	योग		**51**	**10**	**14**	**16**	**2**	**9**

गृध्रसी

गृध्रसी पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, चेरुतुरुति, दिल्ली, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, झांसी, पटना और ईटानगर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 76 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:-

गृध्रसी पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	हिंगु त्रिगुण तैल	के.अनु.सं.चे.	20	6	9	2	1	2
		के.अनु.सं.दि.	8		1			7
		क्षे.अनु.सं.ई.	6	1	3		1	1
		क्षे.अनु.सं.प.	11		3	6		2
		क्षे.अनु.सं.झा.	7	2	3	2		

2.	पंचकर्म चिकित्साः स्नेहपान (दशमूल बला तैलच स्वेदन (वाष्प), विरेचन (एरण्ड तैल) संसर्जन एवं वस्ति (वैथरण)	के.अनु.सं.चे.	19	4	9	3	1	2
3.	हिंगु त्रिगुण तैल, निर्गुण्डी पत्र पिंडस्वेद	क्षे.अनु.सं.ई.	5	1	2	1		1
	योग		**76**	**14**	**30**	**14**	**3**	**15**

किटिभ

किटिभ पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान,पटियाला, भुवनेश्वर, चेरुतुरुति, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जूनागढ़, त्रिवेन्द्रम, जम्मू तथा क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, हस्तिनापुर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 129 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:-

किटिभ पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	आरोग्यवर्धिनी, कैशोर गुग्गुलु एवं चक्रमर्द तैल स्थानीय प्रयोग	के.अनु.सं.प.	18	6	8	2		2
		के.अनु.सं.भु.	11	3	6	2		
		क्षे.अनु.सं.ज.	6	3	1			2
		के.अनु.सं.चे.	3		2	1		
		क्षे.अनु.सं.जू.	3		1	1		1
		क्षे.अनु.के.ह.	29	4	5	8	4	8
2.	पंचनिम्ब लौह चूर्ण, कामदुधा रस, हरिद्राखण्ड	के.अनु.सं.प.	11	2	1	2		6
		के.अनु.सं.भु.	13	1	8	2		2
		क्षे.अनु.सं.ज.	8	2	4			2
3.	स्नेहपान (महातिक्त घृत), स्वेदन (मृदु), वमन (अल्प) सम्सर्जन, भल्लातक रसायन प्रयोग	के.अनु.सं.चे.	12	2	4	1		5

4.	पंचनिम्ब लौह चूर्ण, कामदुधा रस और हरिद्रा खंड	क्षे.अनु.सं.त्रि.	15	-	4	2	1	8
	योग		**129**	**23**	**44**	**21**	**6**	**35**

तिमिर रोग

तिमिर रोग पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली में किया गया । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 50 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:-

तिमिर रोग पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	नेत्र बिंदु एवं सप्तामृत लौह नेत्र व्यायाम के साथ	के.अनु.सं.दि.	50	10	14	21	5	
	योग		**50**	**10**	**14**	**21**	**5**	

मानसमंदता

मानसमंदता पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण आयुर्वेदिक अनुसंधान एकक, बंगलूर में किया गया । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 16 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को भी निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

मानस मंदता पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	वचा, ब्राह्मी, घन सत्व	आयु.अनु.ए.बं.	16		4	1		11
	योग		**16**		**4**	**1**		**11**

मधुमेह

मधुमेह पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली, भुवनेश्वर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, ईटानगर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 134 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:-

मधुमेह पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	तुलसी पत्र, बिल्व पत्र, निम्ब एवं कालीमिर्च	के.अनु.सं.दि. क्षे.अनु.सं.ई.	25 17	1 2	2 1	 1	6 3	16 10
2.	करेला, एवं जामुन बीज (घनसत्व)	के.अनु.सं.दि. के.अनु.सं.भु. क्षे.अनु.सं.ई.	25 54 10	2 2 1	12 5	5 12 1	6	 35 8
3.	आयुष-82	के.अनु.सं.दि.	3	1			1	1
	योग		**134**	**9**	**20**	**19**	**16**	**70**

मनोद्वेग

मनोद्वेग पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, पटियाला, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, बंगलूर, और आयुर्वेदिक अनुसंधान एकक, बंगलूर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 71 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:-

मनोद्वेग पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	मेध्य रसायन (वचा, ब्राह्मी घन सत्व बराबर मात्रा में)	के.अनु.सं.ल. के.अनु.सं.प. क्षे.अनु.सं.बं. आयु.अनु.ए.बं	8 33 25 5	2 6 17	1 17 7 2	 6	 4 1	5 3
	योग		**71**	**25**	**27**	**6**	**5**	**8**

मूत्राश्मरी

मूत्राश्मरी पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान,त्रिवेन्द्रम, जम्मू, ईटानगर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 86 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:-

मूत्राश्मरी पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	पाषाण भेद, गोक्षुरु क्वाथ घन सत्व	के.अनु.सं.दि.	20	3	8	6	2	1
		क्षे.अनु.सं.त्रि.	12	2	1	2		7
		क्षे.अनु.सं.ज.	14	7	2	1		4
		क्षे.अनु.सं.ई.	4	2	1	1	-	-
2.	पलाशक्षार	के.अनु.सं.दि.	22	3	7	5	5	2
		क्षे.अनु.सं.त्रि.	3				2	1
		क्षे.अनु.सं.ज.	4	3				1
		क्षे.अनु.सं.ई.	7	4				1
	योग		86	24	21	15	9	17

मेदोरोग

मेदोरोग पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान,लखनऊ, पटियाला, कोलकाता, दिल्ली, मुम्बई, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जम्मू तथा ए. लक्ष्मीपति आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र, चेन्नई में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 194 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:-

मेदोरोग पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	वचा एवं कटुकी (बराबर मात्रा में)	के.अनु.सं.ल.	30	8	6	6		10
		के.अनु.सं.प.	75	5	16	9		45

		के.अनु.सं.को.	25	4		9	2	10
		के.अनु.सं.दि.	27	5	9	8	2	3
		के.अनु.सं.मु.	10	1	4	1	1	3
		ए.ल.आयु.अनु						
		के.चे.	13	4	5			4
		क्षे.अनु.सं.ज.	14	8	3			3
	योग		**194**	**35**	**43**	**33**	**5**	**78**

पक्षाघात

पक्षाघात पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, पटियाला, चेरुतुरुति, दिल्ली, भुवनेश्वर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान,नागपुर और आयुर्वेदिक अनुसंधान एकक, बंगलूर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 127 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

पक्षाघात पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	स्नेहपान (क्षीरबला तैल), स्वेदन(वाष्प), विरेचन (एरण्ड तैल), संसर्जन वस्तिकर्म (योग वस्ति), दशमूल क्वाथ, निरुह एवं क्षीरबला तैल अनुवासन हेतु एवं नस्य (क्षीरबला तैल)	के.अनु.सं.चे. के.अनु.सं.दि. क्षे.अनु.सं.ना.	29 11 11	4 2 1	11 3 4	7 2 4	2 2	5 2 2
2.	घनधान्यादि क्वाथ क्षीरबला तैल के साथ, अभ्यंग (क्षीरबलातैल), पटोल पत्र स्वेदन क्षीरबला तैल के साथ, विरेचन(एरण्डतैल)	के.अनु.सं.चे. के.अनु.सं.भु. क्षे.अनु.सं.ना. आयु.अनु.के.बं.	30 7 16 7	2 1 1	7 3 5 4	13 2 6	2	6 1 4 3

3.	महा वातविध्वंसन रस, धान्यआमल सेक, विरेचन, नस्य (क्षीरबला तैल), सिरोवस्ति (क्षीरबला तैल)	के.अनु.सं.प. क्षे.अनु.सं.ना.	1 15		1 4	5	1	5
	योग		**127**	**11**	**42**	**39**	**7**	**28**

पंगु

पंगु पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, चेरुतुरुति, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नागपुर और आयुर्वेदिक अनुसंधान एकक, बंगलूर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 41 रोगियों पर अध्ययन किया गया। इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

पंगु पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	स्नेहपान (दशमूल बला तैल), स्वेदन (वाष्प), विरेचन (एरंड तैल), संसजन एवं योग वस्ति (निरुह दशमूल क्वाथ और अनुवासन दशमूल बला तैल)	के.अनु.सं.चे. क्षे.अनु.सं.ना.	14 5	2	 2	4 1	2 1	6 1
2.	दशमूल बला क्वाथ, चन्द्रप्रभावटी के साथ, अभ्यंग (दशमूल बला तैल), मात्रा वस्ति (दशमूल बला तैल) और व्यायाम।	के.अनु.सं.चे. क्षे.अनु.सं.ना.	17 5	2 1	4 1	5 1	4 1	2 1
	योग		**41**	**5**	**7**	**11**	**8**	**10**

परिणामशूल

परिणामशूल पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, विजयवाड़ा और जम्मू में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 21 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

परिणामशूल पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	आमलकी रसायन	के.अनु.सं.भु.	3			2		1
2.	इंदुकांत घृत स्नेहपान	क्षे.अनु.सं.वि.	5		4	1		
3.	महातिक्त घृत स्नेहपान	क्षे.अनु.सं.वि. क्षे.अनु.सं.ज.	5 2	1	3 1	1		 1
4.	शतावरी मधुयष्टिघन सत्व वटी	क्षे.अनु.सं.वि.	6		6			
	योग		**21**	**1**	**14**	**4**		**2**

श्लीपद

श्लीपद पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान,भुवनेश्वर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पटना और विजयवाड़ा में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 121 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

श्लीपद पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1	कांचनार गुग्गुलु, गोक्षुरादि गुग्गुलु के साथ	के.अनु.सं.भु.	18	3	8	3		4
		क्षे.अनु.सं.प.	10	3	3	4		
		क्षे.अनु.सं.वि.	30	6	11	6		7
2	श्लीपदारि रस, पुनर्नवादिचूर्ण	के.अनु.सं.भु.	19	4	6	5		4
		क्षे.अनु.सं.प.	8	2	3	3		
		क्षे.अनु.सं.वि.	36	8	14	7	5	2
	योग		**121**	**26**	**45**	**28**	**5**	**17**

तमकश्वास

तमकश्वास पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर, जयपुर, पटियाला, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पटना, विजयवाड़ा और आयुर्वेदिक अनुसंधान एकक, बंगलूर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 129 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया हैः

तमकश्वास पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	गध्यगत
1	पिप्पली वर्धमान, क्षीर पाक, समीर पन्नग रस	क्षे.अनु.सं.,वि.	16	3	6	3	1	3
		क्षे.अनु.सं.,प.	15	1	4	1		9
2	शिरीष त्वक् क्वाथ	क्षे.अनु.सं.वि.	16	2	4	6	1	3
		के.अनु.सं.प.	16	2	2	1		11
		के.अनु.सं.भु.	4		2	1		1
		के.अनु.सं.ज.	26	3	6	4		13
		क्षे.अनु.सं.ब.	12	10	2			
3	शोधन चिकित्सा	क्षे.अनु.सं.वि.	24	10	12	1		1
	योग		**129**	**31**	**38**	**17**	**2**	**41**

विषमज्वर

विषमज्वर पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, जयपुर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नागपुर, ईटानगर, क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, हस्तिनापुर ए,लक्ष्मीपति आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र चेन्नई, में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 354 रोगियों पर अध्ययन किया गया ।इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

विषमज्वर पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	गध्यगत
1	आयुष-64	के.अनु.सं.ज.	13	9	4	-	-	-
	स्फटिक भस्म	ए.ल.अनु.के.आयु.चे.	61	12	1	5	10	33
	गुडूची सत्व	क्षे.अनु.सं.ई.	27	18	3	-	-	6
		क्षे.अनु.सं.ना.	10	-	3	3	2	2
		क्षे.अनु.के.ह.	103	15	52	27	9	-
2.	सप्तपर्ण घनवटी	क्षे.अनु.सं.ना.	8	-	2	3	-	3
		के.अनु.सं.ज.	17	10	6	1	-	-
		ए.ल.अनु.के.आयु.चे.	93	4	-	3	8	78
		क्षे.अनु.सं.ई.	14	9	2	-	-	3
3	पारिजात पत्र घनवटी	क्षे.अनु.सं.ना.	8	-	1	6	-	1
	योग		**354**	**77**	**74**	**48**	**29**	**126**

व्यानबल वैषम्य

व्यानबल वैषम्य पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर, कोलकाता, पटियाला, दिल्ली, ग्वा.लियर, मुम्बई, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान,नागपुर, बंगलूर, झांसी, ईटानगर और ए.लक्ष्मीपति अनुसंधान केंद्र आयुर्वेद,चेन्नई में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 397 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

व्यानबल वैषम्य पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	वचा, ब्राह्मी, जटामांसी एवं	के.अनु.सं.भु.	27	8	11	7		1

	अर्जुन का मिश्रण बराबर मात्रा में ।	के.अनु.सं.को.	6		3			3
		के.अनु.सं.ग्वा.	12		2	7	1	2
		के.अनु.सं.मु.	13	3	3	3		4
		के.अनु.सं.दि.	22	3	9	3	1	6
		के.अनु.सं.प.	46	4	8	7	1	26
		क्षे.अनु.सं.झां.	4	-	2	2	-	-
		क्षे.अनु.सं.ना.	31	4	4	9		11
		क्षे.अनु.सं.बं.	8	3	2	1	3	2
		क्षे.अनु.सं.ई.	36	9	11	3		11
		क्षे.अनु.सं.ज.	18	9			2	8
		क्षे.अनु.सं.जू.	4	1	1	1	1	1
2	चन्द्रप्रभा वटी स्वेत पर्पटी एवं पुनर्नवा मण्डूर विशिष्ट आहार-विहार के साथ	के.अनु.सं.भु.	32	22	6	4		
		के.अनु.सं.को.	10	2	1	1	3	3
		के.अनु.सं.ग्वा.	18		4	6	4	4
		के.अनु.सं.मु.	17	5	4	2	1	5
		क्षे.अनु.सं.ना.	26	3	7	6	4	6
		क्षे.अनु.सं.बं.	12	3	3	5		1
		क्षे.अनु.सं.ई.	32	11	5	3	1	12
		क्षे.अनु.सं.झां.	12	6	3			3
		क्षे.अनु.सं.जू.	3	3				
		ए.ल.आयु.अनु.के.चे.	7	1	4			2
	योग		**396**	**100**	**93**	**70**	**22**	**111**

कामला

कामला पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, हस्तिनापुर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 66 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण, अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

कामला पर आयुर्वेदीय योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणाम:

क्र. सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र/ एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1	पुनर्नवा मण्डूर	के.अनु.सं.ल.	19	7	3			8
	आरोग्यवर्धिनी	क्षे.अनु.के.ह.	47	13	4	29		1
	योग		**66**	**20**	**7**	**29**	**1**	**9**

(ब) रोग समूह, रोगियों की संख्या और निदानचिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत सम्मिलित परियोजनाएं:

क्र. सं.	रोग समूह	रोगी संख्या	परियोजनाएं
1.	**प्राणवह स्रोतस व्याधि**		
	तमक श्वास	129	के.अनु.सं.मु., के.अनु.सं.ज., के.अनु.सं.प., क्षे.अनु.सं.प., क्षे.अनु.सं.वि., क्षे.अनु.सं.बं.
2.	**अन्नवह स्रोतस व्याधि**		
	परिणामशूल	21	के.अनु.सं.मु., क्षे.अनु.सं.वि., क्षे.अनु.सं.ज.
	ग्रहणी रोग	51	के.अनु.सं.ग्वा.., क्षे.अनु.सं.प., क्षे.अनु.सं.गं.
3.	**पुरीषवह स्रोतस व्याधि**		
	अर्शक	695	के.अनु.सं.ग्वा.., के.अनु.स.को, के.अनु.सं.दि., के.अनु.सं.मु. के.अनु.सं.भु., के.अनु.सं.ल., क्षे.अनु.सं.प., क्षे.अनु.सं.ज., क्षे.अनु.सं.मं., क्षे.अनु.सं.बं., क्षे.अनु.के.,ह.,
	भगन्दर	62	के.अनु.सं.दि., के.अनु.सं.मु., के.अनु.स.को.
	कामला	66	के.अनु.सं.ल., क्षे.अनु.के.ह.
4.	**मूत्रवह स्रोतस व्याधि**		
	मूत्राश्मरी	86	के.अनु.सं.,दि.,क्षे.अनु.सं.,त्रि.,क्षे.अनु.सं.,ज., क्षे.अनु.सं.,ई.
	मधुमेह	134	के.अनु.सं.,दि, के.अनु.सं.,मु., क्षे.अनु.सं.,ई.
5.	**रस,रक्तवह स्रोतस व्याधि** व्यानबल वैषम्य	396	के.अनु.सं.मु.,के.अनु.सं.,को.,के.अनु.सं.,प.,के.अनु.सं.,दि., के.अनु.सं.,ग्वा.,के.अनु.सं.,मु.,क्षे.अनु.सं.,ना.,क्षे.अनु.सं.,बं., क्षे.अनु.सं.,झां.,क्षे.अनु.सं.,ई.,ए.ल.अनु.के.आयु.,चे., क्षे.अनु.सं.,ज., क्षे.अनु.सं.,जू.
6.	**मेदोवह स्रोतस व्याधि**		
	मेदोरोग	194	के.अनु.सं.ल.,के.अनु.सं.,प.,के.अनु.सं.,को.के.अनु.सं.,दि., के.अनु.सं.,मु.,ए.ल.अनु.के.आयु.,चे., क्षे.अनु.सं.,ज.

7.	**वात व्याधि**		
	आमवात	487	के.अनु.सं.ग्वा., के.अनु.सं., मु., के.अनु.सं.चे., के.अनु.सं.ज., के.अनु.सं.को., के.अनु.सं.प., के.अनु.सं.ल., के.अनु.सं.दि., के.अनु.सं.भु., क्षे.अनु.सं.त्रि., क्षे.अनु.सं.वि., क्षे.अनु.सं.मं., क्षे.अनु.सं.झां., क्षे.अनु.सं.जू., क्षे.अनु.सं.ज., क्षे.अनु.सं.ई.
	पक्षाघात	127	के.अनु.सं.प., के.अनु.सं.चे., के.अनु.सं.दि., के.अनु.सं.भु., क्षे.अनु.सं.ना., आयु.अनु.ए.बं.
	पंगु	41	के.अनु.सं., चेरु., क्षे.अनु.सं., ना.
	गृध्रसी	76	के.अनु.सं.चे., के.अनु.सं.दि., क्षे.अनु.सं.झां. क्षे.अनु.सं.प., क्षे.अनु.सं.ई.
8.	**मनोवह स्रोतस व्याधि**		
	मनोद्वेग	71	के.अनु.सं.ल., के.अनु.सं.प., क्षे.अनु.सं.बं., आयु.अनु.ए.बं.
	अपस्मार	12	के.अनु.सं.दि., आयु.अनु.ए.बं.
	मानस मंदता	16	आयु.अनु.ए.बं.
9.	**नेत्रगत व्याधि**		
	तिमिर रोग	50	के.अनु.सं.दि.
10.	**सर्वदेहगत व्याधि**		
	किटिभ	129	के.अनु.सं.प, के.अनु.सं.भु., के.अनु.सं.चे, क्षे.अनु.सं.जू, क्षे.अनु.सं.त्रि., क्षे.अनु.सं.ज., क्षे.अनु.के.ह.
11.	**आगतुज व्याधि**		
	विषमज्वर	354	के.अनु.सं.ज., क्षे.अनु.सं.ना., क्षे.अनु.सं.ई., ए.ल.आयु.अनु.के.चे., क्षे.अनु.के.ह.
	श्लीपद	121	के.अनु.सं.भु., क्षे.अनु.सं.प., क्षे.अनु.सं.वि.

(स) बहिरंग रोगी विभाग और अंतरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट/निर्मुक्त रोगियों की संख्या को तालिका में दर्शाया गया है:

क्र. सं.	संस्थान/केंद्र/एकक का नाम	बहिरंग रोगी विभाग में रोगी			अंतरंग रोगी विभाग में रोगी		
		नए	पुराने	कुल	प्रविष्ट	विमुक्त	% शैय्या
1.	के.अनु.सं., दिल्ली	18436	23345	41781	305	286	42.32
2.	के.अनु.सं., भुवनेश्वर	8567	8517	17084	240	223	58.00
3.	के.अनु.सं., मुम्बई	2682	8724	11406	183	189	45.02
4.	के.अनु.सं., पटियाला	6769	5364	12133	99	100	21.12
5.	के.अनु.सं., चेरुतुरुति	13483	66628	80111	398	399	74.98
6.	के.अनु.सं., लखनऊ	7465	6548	14013	-	-	-
7.	के.अनु.सं., कोलकाता	6881	13280	20161	145	152	66.45
8.	के.अनु.सं., ग्वालियर	5101	4642	9743	18	17	13.00
9.	के.अनु.सं., जयपुर	17033	19134	36167	433	426	70.97
10.	क्षे.अनु.सं., जूनागढ	2035	3340	5375	-	-	-
11.	क्षे.अनु.सं., पटना	6007	5963	11970	29	29	16.6
12.	क्षे.अनु.सं., त्रिवेन्द्रम	5671	25813	31484	56	51	67.7
13	क्षे.अनु.सं., नागपुर	5603	8412	14015	70	71	74.8
14.	क्षे.अनु.सं., बंगलूर	2803	6842	9645	-	-	-
15.	क्षे.अनु.सं., जम्मू	6080	10246	16326	-	-	-
16.	क्षे.अनु.सं., मंडी	12963	8441	21404	34	33	14.27
17.	क्षे.अनु.सं., गंगटोक	2819	2867	5686			
18.	क्षे.अनु.सं., विजयवाड़ा	4499	12348	16847	118	107	92.62
19.	क्षे.अनु.सं., ईटानगर	12125	9104	21229	-	-	-
20.	क्षे.अनु.सं., झांसी	350	491	841	-	-	-
21.	क्षे.अनु.के., ह.	8851	10500	19351	-	-	-
22.	ए.ल.अनु.के.आयु., चेन्नई	1066	2881	3947	-	-	-
23.	आयु.अनु.ए., बंगलूर	1775	1850	3625	-	-	-
24.	नि.चि.अनु.ए., कोट्टाकल	-	-	-	73	70	24.00
25.	आयु.चि.के., सफदरजंग, नई दिल्ली	17614	11689	29303	-	-	-
	योग	**1,76,678**	**2,76,969**	**4,53,647**	**2,201**	**2,153**	

(द) स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रमः

आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आदिवासी लोगों के रहन-सहन की स्थिति का अध्ययन करना, उनके द्वारा प्रयुक्त क्षेत्रीय औषधियों, उस क्षेत्र में पाये जाने वाले औषध पादपों की प्राप्ति, स्वास्थ्य विज्ञान संबंधी मौखिक जानकारी देना, रोगों से बचाव, उस क्षेत्र में पाये जाने वाले सामान्य औषध पादपों का प्रयोग तथा घर-घर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना है । इस कार्यक्रम की अलग-अलग आदिवासी एककों को विभिन्न केंद्रीय अनुसंधान संस्थान और क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान जैसे केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, ग्वा.लियर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.); पटना, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, ईटानगर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गोहाटी में विलय कर के जारी रखा गया है। आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना कार-निकोबार एक एकक के रूप में कार्य कर रहा है। प्रतिवेदन अवधि 2002-2003 के दौरान इस कार्यक्रम में हुई प्रगति को यहां पर बताया गया हैः

क्र. सं.	संस्थान/एकक का नाम	सम्मिलित गांव का नाम	सम्मिलित जनसंख्या	चिकित्सित रोगियों की संख्या	सामान्य रोग
1.	के.अनु.सं.(आयु.), ग्वालियर	गांधी पुरा, रैका पुरा	2361	614	कास, श्वास, अतिसार, कण्डु, कृमि रोग, संधिशूल, प्रतिश्याय, व्रण ।
2.	क्षे.अनु.सं.(आयु.), पटना	जमुई दुमका	10500	1056	श्वास, कास, कृमि रोग, उदरशूल, त्वक रोग, अम्लपित्त, आमवात ।
3	क्षे.अनु.सं.(आयु.), ईटानगर	गुरुवर्धा, बिष्णुपुर	500	972	कास, त्वक रोग, उदरशूल, वात व्याधि, श्वास, ज्वर, अतिसार, अम्लपित्त, व्यानबल वैषम्य ।
4.	क्षे.अनु.सं.(आयु.), नागपुर	बोथाली, दहेगांव, सिर्सी, आमरुल, गुडा, भेंडाटा, सातर भोस्ले	2385	623	कटिशूल, प्रतिश्याय, ज्वर, कास, त्वक रोग, वातव्याधि, श्वास, अम्लपित्त, परिणामशूल, कृमि रोग, उदरशूल ।
5.	क्षे.अनु.स.(आयु.), गुवाहाटी	तप्सिआ योग्दल कटकी पुरा	5030	2179	कास, श्वास, अतिसार, कण्डु, कृमि रोग, त्वक रोग, संधिशूल, प्रतिश्याय, व्रण ।
6.	आ.स्वा.र.अनु.परि. कार निकोबार	मुख्यालय	–	1855	अतिसार, कास, प्रतिश्याय, व्यानबल वैषम्य, अग्निमंद्य, आमवात, अम्लपित्त, अर्श, त्वक रोग, वातव्याधि ।
	योग	15	22,226	7,299	

3. चिकित्सा-प्रजाति वानस्पतिक सर्वेक्षण कार्यक्रम

चिकित्सा-प्रजाति वानस्पतिक सर्वेक्षण, औषध अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अवयव है । यह निदान चिकित्सात्मक, पादप-रसायन, भेषजगुणविज्ञानीय, भेषजअभिज्ञानीय एवं औषध मानकीकरण आदि जैसी अनुसंधानिक अध्ययनों की शुरुआत के लिए मौलिक सूचना एवं प्रमाणिक कच्ची औषधीय पदार्थों को सुलभ करता है । क्षेत्रीय केंद्रों एवं संस्थानों के अधीन कार्यशील अनेक सर्वेक्षण एककों द्वारा सभी पहलुओं जिसमें विभिन्न महत्वपूर्ण फाइटोजियोग्रैफिक क्षेत्र, राज्य, जनपद एवं आदिवासी क्षेत्र भी सम्मिलित हैं, से उपयोगी एवं मौलिक सूचनाओं का संग्रह किया जाता है । इनके आंकड़ों को औषध वानस्पतिक मोनोग्राफों में समय-समय पर प्रकाशित किया जाता है । वर्तमान में केवल 8 औषध पादप सर्वेक्षण एकक ही क्रियारत है यथा - बंगलूर, गुवाहाटी, ग्वालियर, ईटानगर, झांसी, नागपुर, ताड़ीखेत एवं त्रिवेंद्रम । सभी के सहयोग से लगभग 727.5 कि.ग्रा.कच्ची औषधीय पदार्थों का संग्रह किया गया तथा 30 चिन्हित संस्थानों को 98 नमूनों की आपूर्ति की गई ।

परिषद के सर्वेक्षण एककों द्वारा वर्ष 2002-2003 के मध्य निम्नलिखित कार्य किए गए:

किए गए महत्वपूर्ण कार्य:

सर्वेक्षण एककों की संख्या	यात्राएं की गईं	संग्रह किए गए पादप प्रजाति की संख्या	कच्ची औषधीय नमूने			आपूर्ति किए गए संस्थानों की संख्या
			संग्रहीत	आपूर्ति	भार	
8	10 सर्वेक्षण + 42 स्थानीय यात्राएं, औषध संग्रह हेतु	1141	156	98	727.5 कि.ग्रा.	30

हर्बेरियम शीट्स तैयार/निर्निंत (बैक लाग के साथ)	चिन्हित हर्बेरियम शीट्स बैक लॉग के साथ	हर्बेरियम शीटों की प्राप्ति	संग्रहालयीय नमूने का संग्रह	संग्रहीत लोक प्रचलित चिकित्सा दावा
1332	870	883	66	177

पत्र प्रकाशित/ संचारित	अपनाया गया तकनीकी ज्ञान	प्रदर्शनी का आयोजन	संगोष्ठी/कार्यशाला में सहभागिता
20	-	1	7

वर्तमान वर्षावधि में किए गए कार्यों का विवरण निम्नानुसार है:

1. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद), बंगलूर (कर्नाटक)

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), बंगलूर के अधीन सर्वेक्षण एकक क्रियारत है जिसके द्वारा एक सर्वेक्षण यात्रा की गयी । इन यात्रा के माध्यम से 135 वंशों एवं 65 परिवारों से संबंधित 161 पादप प्रजातियों का संग्रह किया गया । इन नमूने को प्रक्रमण निमित एवं

चिन्हित किया गया । 20 कि.ग्रा. संग्रहीत कच्ची औषध की आपूर्ति की गयी । हर्बेरियम अनुभाग में 197 नमूने तैयार किए गए एवं 166 नमूने का अधिमिलन किया गया तथा संस्थान के संग्रहालय में 7 नमूने बढ़ाए गए । एकक के सर्वेक्षण अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा 6 अनुसंधान पत्रिकाओं का अंशदान किया गया । एकक ने 3 कार्यशालाओं/संगोष्ठियों में सहभागिता की ।

2. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद), गुवाहाटी (असम)

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), गुवाहाटी में स्थित सर्वेक्षण एकक द्वारा औषध संग्रह हेतु 6 संग्रह यात्राएं की गयी । संग्रहीत 165 कि.ग्रा. भार औषध तथा 33 कि.ग्रा. शुष्क औषधीय पदार्थ को विभिन्न संस्थानों को आपूर्ति की गई । सर्वेक्षण एकक ने तीन लोक प्रचलित दावों को संग्रहीत किया तथा संस्थान के संग्रहालय में 5 नमूने बढ़ाये गए ।

3. केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ग्वा.लियर के सर्वेक्षण एकक द्वारा कच्ची औषध संग्रह हेतु स्थानीय यात्रा की गई । संग्रहीत 6 कि.ग्रा. औषध को परिषद के विभिन्न संस्थानों को आपूर्ति की गई। 'ए स्टडी आफ हर्बल वेल्थ ऑफ सरगुजा' शीर्षक नामक मोनोग्राफ के प्रथम भाग को पूर्ण कर परिषद मुख्य कार्यालय को प्रस्तुत किया गया । मोनोग्राफ का अंतिम भाग संपादन एवं संगणक में फीड करने हेतु प्रक्रियाधीन है ।

4. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), ईटानगर (अरुणाचल प्रदेश)

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.) में स्थित सर्वेक्षण एकक द्वारा एक सर्वेक्षण एवं 14 संग्रह यात्राएं की गईं । इन यात्राओं में 140 वंशों एवं 94 परिवारों से संबंधित 175 पादप नमूनों का संग्रह किया गया । इसके अतिरिक्त 63.5 कि.ग्रा. कच्ची औषध का संग्रह किया गया तथा आपूर्ति की गई। दो पौधों के जर्म प्लाज्म पदार्थ (बीज), एन.बी.पी.जी.आर., पूसा, नई दिल्ली को जीन बैंक हेतु आपूर्ति की गई । संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा तीन शोध-पत्र प्रकाशित किए गए तथा दो कार्यशालाओं/संगोष्ठियों में सम्मिलित हुए ।

5. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), झांसी (उत्तर प्रदेश)

क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, झांसी में स्थिति सर्वेक्षण एकक द्वारा स्थानीय यात्राएं की गयी तथा 180 कि.ग्रा. ताजा औषध का संग्रह किया गया । संस्थान द्वारा कुल 290 कि.ग्रा. औषधों का परिषद के विभिन्न संस्थानों को आपूर्ति की गई । संस्थान के उद्यान से 150 कि.ग्रा. ताजा कच्ची औषध का संग्रह किया गया ।

6. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), नागपुर (महाराष्ट्र)

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), नागपुर में स्थित सर्वेक्षण एकक द्वारा दो यात्राऐं संचालित की गयीं । इन यात्राओं में उद्भिदालय हेतु 108 पादप नमूनों का संग्रह किया गया तथा 55 लोक प्रचलित दावों, 8 संग्रहालय नमूनों का संग्रह संस्थान के संग्रहालय के लिए किया गया । तीन संग्रह यात्राएं भी संचालित की गयी तथा आपूर्ति हेतु 62 कि.ग्रा. कच्ची औषध का संग्रह किया गया ।'मेलघाट वन क्षेत्र' पर मोनोग्राफ समीक्षाधीन है ।

7. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), ताड़ीखेत (उत्तरांचल)

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), ताड़ीखेत द्वारा दो यात्राऐं की गयीं तथा 177 पादप-प्रजातियों का संग्रह किया गया । 30 कच्ची औषध (109 कि.ग्रा. भार) का भी संग्रह किया गया तथा विभिन्न संगठनों को आपूर्ति की गयी । संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा 6 शोध-पत्र प्रकाशित किए गए ।

8 क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (औ.अनु.), त्रिवेन्द्रम (केरल)

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (औ.अनु.), त्रिवेन्द्रम द्वारा एक सर्वेक्षण यात्रा की गई तथा 84 पादप नमूनों एवं 5 लोक प्रचलित नमूनों का संग्रह किया गया । कुल 25 कच्ची औषधियों जिसके भार 25 कि.ग्रा. थे, का संग्रह किया गया तथा विभिन्न संस्थानों को अपूति की गई । उद्भिदालय अनुभाग में 58 नमूनों को चिन्हित किया गया एवं 252 नमूनों का निर्धारण किया गया । संग्रहालय में 14 नमूनों को जोडा गया । संस्थान के वैज्ञानिक द्वारा एक शोध-पत्र प्रकाशित किया गया एवं एक संगोष्ठी/कार्यशाला में भाग लिया ।

परिषद के मुख्यालय, नई दिल्ली में केंद्रीय उद्भिदालय और संग्रहालय

प्रतिवेदन अवधि में केंद्रीय उद्भिदालय और संग्रहालय का रख-रखाव किया गया । इस अनुभाग ने देश के विभिन्न भागों में प्रदर्शनियां आयोजित की । देश के विभिन्न शहरों यथा - मुम्बई, धर्मशाला, चम्बा, टीकमगढ़, जोधपुर, हैदराबाद, कटिहार तथा नई दिल्ली में स्वास्थ्य मेला का आयोजन किया गया । इसके अतिरिक्त झांसी, कश्मीर विज़न- श्रीनगर, नेत्र कैम्प पंजाबी बाग, नई दिल्ली तथा आरोग्य 2003 का नई दिल्ली और चंडीगढ़ में आयोजन किया गया । वैज्ञानिक समुदाय तथा सामान्य जनता को जन स्वास्थ्य में आयुर्वेद एवं सिद्ध की भूमिका के विषय में जानकारी देने के लिए विश्व आयुर्वेद महासम्मेलन, कोचि एवं प्रथम प्रवासी भारतीय दिवस, नई दिल्ली में भी भाग लिया ।

4. औषध पादप कृषि कार्यक्रम

परिषदाधीन आयुर्वेद एवं सिद्ध के पांच औषध पादप उद्यान हैं जो पुणे (महाराष्ट्र), नंगलियावास नजदीक अजमेर (राजस्थान), ईटानगर (अरुणाचल प्रदेश), झांसी (उत्तर प्रदेश) एवं ताड़ीखेत (उत्तरांचल) में स्थित है । इन औषध उद्यानों में लघु एवं बृहद् स्तर पर आयुर्वेद एवं सिद्ध की कुछ महत्वपूर्ण औषध पादपों की प्रायोगिक कृषि की जाती है ।

पुणे का औषध पादप उद्यान ऊतक संजनन पर अनुसंधान गतिविधियों के साथ एक प्रदर्शक/प्रतिनिधि उद्यान है ।

गुग्गुलु औषध फार्म, मंगलियावास में बृहद् स्तर पर शुष्क/अर्द्ध शुष्क क्षेत्र में गुग्गुलु प्रजातियों की कृषि कार्यक्रम की जाती है । रंगीन गोंद को धूप से संरक्षण/पाने एवं उपलब्धि की दृष्टि से सुरक्षित एवं गोंद के दोहन हेतु उपयुक्त विधि विकसित की गई । रानीखेत में स्थित हर्बल उद्यान में, परिषद ने सफलतापूर्वक कुमकुम के प्रचार हेतु तकनीक को विकसित किया है ।

1. क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पुणे (महाराष्ट्र)

संस्थान के पास 19.5 एकड़ जमीन है, जिसमें से लगभग 15 एकड़ जमीन को विकसित किया गया है और प्रदर्शक उद्यान तथा औषध पादप कृषि कार्यक्रम के लिए उपयोग में लाया जा रहा है । 360 से ज्यादा औषधीय प्रजातियों तथा आर्थिक महत्व के पादपों का रख-रखाव किया जा रहा है, जिनमें से 132 औषध पादप आयुर्वेदिक फार्मुलरी ऑफ इंडिया भाग-I में सम्मिलित है । बृहद् स्तर पर गंभारी, अर्जुन, बिल्व पादपों का पहले से ही रख-रखाव किया जा रहा है । आयुर्वेदिक महत्व के औषध पादपों के 9 औषधि प्रजातियों यथा ब्राह्मी, शतावरी, शालपर्णी, बृहती, दंती, वासा, मंडूकपर्णी, कुमारी एवं पाठा पादपों को समुचित ढंग से उद्यान के क्यारियों में लगाया गया इसके अतिरिक्त 79 गुग्गुलु पादपों को भी लगाए गए । सर्पगंधा, अशोक, रक्त चन्दन, चन्दन (श्वेत) तथा पाठा आदि जैसे पादपों के संरक्षण एवं रोपण के लिए कदम उठाए गए ।

उद्यान उत्पादों में से 55 किस्मों संबंधित 73.61 कि.ग्रा. शुष्क कच्ची ओषधियों की परिषद के अधीन कार्यरत विभिन्न एककों/संस्थानों में आपूर्ति की गई । 29.45 कि.ग्रा. बीज पदार्थ जीन बैंक, नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सिज, नई दिल्ली को आपूर्ति की गई । 57 औषध पादप प्रजातियों के फल/बीज एवं 27 प्रजातियों का संग्रह उद्भिदालय के लिए किया गया । संस्थान ने परिषद प्रकाशन एवं गुग्गुलु तथा अन्य पादप अंगों के विक्री से रु. 37,908/- अर्जित किये ।

औषधीय पादपों की कृषि के संबंध में निःशुल्क मार्गदर्शन और तकनीकी जानकारी अनेक इच्छुक व्यक्तियों और संस्थानों को दी गई ।

2. गुग्गुलु औषध फार्म, मंगलियावास, अजमेर (राजस्थान)

गुग्गुलु औषध फार्म, मंगलियावास, केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जयपुर के अधीन में कार्यरत है तथा अजमेर से लगभग 26 कि.मी. की दूरी पर स्थित है । फार्म लगभग 142 एकड़ भूमि में फैला हुआ है तथा मुख्य रूप से इसका उद्देश्य विशाल स्तर पर गुग्गुलु संरक्षण, कृषिकरण एवं बहुमूल्य औषध पादप 'गुग्गुल' का प्रसार करना है । विभिन्न प्रायोगिक दशाओं में इसके विकास से संबंधित व्यवहार का अवलोकन करना है । लगभग 40 एकड़ जमीन पर गुग्गुलु आरोपित किया जाता है ।

वर्तमान में 14817 गुग्गुलु पादपों को फार्म में उगाया जा रहा है । गुग्गुलु के अतिरिक्त अन्य 69 पादपों को विस्तृत रूप से उगाया जा रहा है, एवं कुछ अन्य प्रजातियों की लघु स्तर पर कृषि की जाती है जैसे - नीम, लांगली, बबूल, गुडूची, सतावरी, कुमारी, आमलकी, करंज, लताकरंज एवं अकेसिया सेनैगल इत्यादि ।

प्रतिवेदन अवधि में 2850 गुग्गुलु के पौधे क्यारियों में आरोपित किए गए जिसमें से 1322 पोधों के अंकुर को कटिंग की गई । क्यारियों में 1370 छोटे पौधों को भी विकसित किया गया । प्रतिवेदन अवधि में 13.300 कि.ग्रा. गुग्गुलु की गोंद का संग्रह किया गया तथा परिषदाधीन विभिन्न संस्थानों एवं संस्थान के चिकित्सालय अनुभाग को 30 कच्ची औषधियों सामग्री की आपूर्ति की गई। प्रतिवेदन अवधि में पौधों की मूल कटिंग एवं गोंद की बिक्री से रु. 87,875/- की राशि अर्जित की गई । 7 कि.ग्रा. गुग्गुलु क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, विजयवाड़ा को आपूर्ति की गई तथा 39.5 कि.ग्रा. गुग्गुलु वर्तमान में स्टॉक में है ।

3. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, ईटानगर (अरुणाचल प्रदेश)

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, ईटानगर का औषध पादप उद्यान लगभग 17 एकड़ भू-भाग में स्थित है । वर्तमान में लगभग 9.6 एकड़ क्षेत्र में औषध पादपों की कृषि की जाती है। उद्यान में आयुर्वेदिक महत्व की कुल 200 किस्मों के पादपों को उगाया जा रहा है । संपूर्ण पादपों में से 112 औषधीय पादपों की प्रजातियों का उल्लेख आयुर्वेदिक फार्मुलरी भाग-I में किया गया है ।

वर्तमान वर्ष के दौरान 28 पादप किस्मों को उद्यान में आरोपित किया गया । संस्थान के बहिरंग रोगी विभाग तथा परिषद के अन्य संस्थानों में प्रयोग के लिए 27 कि.ग्रा. कच्ची औषधिया प्राप्त की । नेशनल प्लांट जर्मप्लाज्म कलेक्शन कार्यक्रम के अंतर्गत एन.बी.पी.जी.आर., नई दिल्ली को औषधीय पादपों के बीजों की आपूर्ति की गई।

परियोजनाओं के अधीन (i) - केंद्रीय औषध पादप कृषि कार्यक्रम योजना परियोजना, (त्त) - मंत्रालय के भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं हो.विभाग के अधीन राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड के अन्तर्गत अशोक, अर्जुन, गंभारी, गुडूची, साईनोक, तुलसी, बिल्व, सतावरी, पिप्पली एवं चित्रक पोधे को आरोपित किया गया तथ नर्सरी के लिए भी उन्नत किया गया ।

4. क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, झांसी (उत्तर प्रदेश)

क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, झांसी में महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक औषध पादपों की प्रायोगिक आधार पर प्रदर्शक उद्देश्य के लिए कृषि का कार्य किया जा रहा है । वर्तमान में लगभग 15 एकड़ भूमि पर औषध पादप कृषि कार्यक्रम चलाया जा रहा है । उद्यान में लगभग 200 औषध पादप हैं । संपूर्ण पादपों में से लगभग 50 आयुर्वेदिक, किस्में आयुर्वेदिक फार्मुलरी भाग-। में उल्लिखित हैं । गुग्गुलु, सर्पगंधा, घृतकुमारी, कालमेघ, वासा, शालपर्णी, चित्रक, तुलसी एवं तुलसी भेद, श्वेतगुंजा, खस, तेजपत्र, चोपचिनि, ज्योतिष्मती, ब्राह्मी, प्रियंगु आदि पौधों को सफलतापूर्वक उगाया गया । समुद्र सोख, त्रिवित, प्रसारिणी, पाठा, गुडूची, बिंबी आदि जैसे महत्वपूर्ण आरोही लताओं को सफलतापूर्वक उगाया गया । पौधों के विभिन्न अंगों यथा - बीज, फूल, फल, तना, छाल आदि से प्राप्त लगभग 150 कि.ग्रा. शुष्क एवं ताजा पदार्थ का उद्यान से संग्रह किया गया तथा केंद्र के उद्यान डिपो को आपूर्ति हेतु आपूर्ति की गई । परिषद के विभिन्न संस्थानों को कुल 290 कि.ग्रा.कच्ची औषधियों की आपूर्ति की गई ।

5. क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ताड़ीखेत (उत्तरांचल)

क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान का औषध उद्यान, रानीखेत में 1700 मीटर की ऊंचाई पर लगभग 2.5 एकड़ भूमि में स्थित है । इसमें औषधीय पादपों की लगभग 215 किस्में हैं, इनमें अधिकतर आयुर्वेदिक महत्व की है और प्रदर्शन के उद्देश्य से इनकी कृषि की जा रही है । इसके अतिरिक्त अन्य पादपों को परिस्थिति और अनुकूलता के प्रायोगिक परीक्षण के लिए लिया गया है । कुल 63 पादप किस्मों को उद्यान में प्रथम बार लगाया गया । संस्थान का दूसरा 'वनौषधि वाटिका' नाम का लघु औषध पादप उद्यान टेहरी जनपद के अंतर्गत चम्मा में स्थित है । वर्तमान में 115 औषध पादपों को उगाया एवं रख-रखाव किया गया। प्रतिवेदन अवधि में कुछ औषध पादपों के बीज/पौधों को वन क्षेत्र से संग्रह किया गया तथा वाटिका में उत्पन्न किया गया ।

केसर की प्रायोगिक कृषि

उत्तरांचल की पहाड़ियों में केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद द्वारा केसर की कृषि की संभावना का पता लगाने के लिए उद्यान में इसके अनुसंधान स्थल पर इसके प्रसार,

सुग्राह्यता तथा कृषि के लिए प्रायोगिक परीक्षण प्रारंभ किए गए । कुल 1.53 एकड़ भू-भाग का क्षेत्र, वर्तमान में केसर की कृषि कार्यक्रम के अंतर्गत हैं । अक्तूबर-नवम्बर माह में पुष्पों से केसर एकत्र होती है । 4750 पुष्पों का संग्रह किया गया जिससे 36.2 ग्रा. केसर की उपज प्राप्त हुई ।

****

5. कस्तूरी मृग प्रजनन कार्यक्रम

मुख्य वन्य जीव संरक्षक उत्तर प्रदेश ने 1974 में अनुसंधान कार्य हेतु जीव हानि रहित जीव प्रजनन एवं संग्रह हेतु कस्तूरी मृग को पकड़ने की अनुमति दी थी । कस्तूरी एक जीवन-रक्षक औषधि है जो कई आयुर्वेदिक औषधि निर्माण में प्रयोग किया जाता है यथा - मृगमदाशव, कस्तूरी भैरव रस, कस्तूरीमोदक, वसन्त कुसुमाकर रस आदि । वर्तमान में 22 कस्तूरी मृग हैं जिसमें 18 वर्ष आयु की सबसे बड़ी तथा सबसे छोटी तीन वर्ष की मादा है । इस प्रकार सबसे बड़ा नर 15 वर्ष एवं सबसे छोटा 2 वर्ष का है । पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार की जीव नियंत्रण एवं प्रयोग पर्यवेक्षण समिति ने भी पत्रांक सं.707/ए./सीपीसीएसइए/03 के द्वारा कस्तूरी मृग फार्म पंजीकरण किया हुआ है ।

6. भेषजअभिज्ञानीय अनुसंधान अध्ययन

केंद्रोय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद की कोलकाता, पुणे, बंगलूर में स्थित भेषजअभिज्ञानीय अनुसंधान एककों में आयुर्वेद में प्रयोग की जा रही निम्नलिखित औषधियों के अन्वेषण का कार्य विस्तृत रुप से किया जा रहा है । ये अध्ययन एकल औषधियों के भेषज संहिता मानकों को विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं । इसके अतिरिक्त उनकी सही पहचान/प्रामाणिकता के बारे में होने वाले विवाद और भ्रम को भी दूर करने में सहायक होते हैं ।

1. अन्नानस (अनानस कॉमसस मेरी) - फल
2. फेनिला (स्पेनडस ट्रिफोलिटस लिन्न.) - फल
3. राजदानि (मनिलकारा एक्जन्ड्रा (रॉक्स) डब - पत्र, मूल, तना एवं तना छाल
4. तिनिस (डलब्रेजिआ ऊजेनेसिस रॉक्स) - तनाछाल
5. त्रपुश (कुकुमिस सेटिवस लिन्न.) -फल
6. द्रवन्ति (जट्रोफा गलेन्डलिफेरा रॉक्स) - संपूर्ण पादप
7. तितिणीक (रस सक्सीडनीआ लिन्न.) गॉल - (बाजार नमूना)
8. तक्कोल (इल्लिसिम वीरम हूक) - फल
9. हरिद्रा (करक्यूम लोंग लिन्न.) - कन्द
10. आमलकी (एमब्लीका ओफिसिनेल गार्टन) - फल

अध्ययन में औषधियों की मूल वानस्पतिक पहचान तथा वानस्पतिक विवरण तथा मुख्य विशेषता सहित पर्याय के साथ आयुर्वेदिक पारिभाषिक शब्दावली की सही निर्धारण का सही विवरण आता है । इस विस्तृत कार्य में विभिन्न तथ्यों का अध्ययन जैसे औषधि भागों का आकृति विज्ञान जिसमें संवेदी गुण, कोशिका एवं ऊतकों की गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों की संरचना, कोशिका, घटक प्राथमिक पादप रासायनिक विश्लेषण, वर्णात्मक अध्ययन, रसायनिक घटकों यथा - अल्कोलायड, स्टेरोयड्स तथा टर्पेनायड्स, फिनोलस, टेन्निस, सेपोनिंस, फलेवोनॉयड्स, प्रोटीन आदि का पता लगाना, प्रतिदीप्ती विश्लेषण, भौतिक स्थिर मूल्यों सहित भस्म और निस्कर्षण मूल्यों शुष्क और आर्द्र घटकों के बारे में विस्तार से पता लगाना आदि शामिल हैं । चूर्ण औषध में मिलावट का पता लगाने के लिए बृहद स्तर पर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है ।

कोलकाता, दिल्ली, पुणे, चेन्नई एवं लखनऊ स्थित एककों में भा.चि.प. औषधियों के भेषज संहिता मानकों को विकसित करने हेतु केंद्रीय योजना के तहत लगभग 20 एकल पादप औषधियों के भेषज संहिता मानकों का कार्य किया गया ।

7. पादप ऊतक संजनन

जवाहरलाल नेहरु आयुर्वेदिक औषध पादप उद्यान एवं उद्भिदालय, पुणे स्थित प्रयोगशाला में पादप ऊतक संजनन पर प्रायोगिक अध्ययन निरन्तर हो रहा है । वर्तमान में यह संस्थान क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान के नाम से जाना जाता है । परखनलीय प्रसार तकनीक का मानकीकरण के क्रम में, निम्नलिखित तीन महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक औषध पादपों पर तीव्र गुणात्मक, बीज अंकुरण एवं अन्य रसायनिक अध्ययन किया जा रहा है ।

1. शालपर्णी

परखनलीय द्वारा उगाए गए शालपर्णी पादपों के पत्तियां कोटेलेडोनेरी नोड्स तथा नोडल भाग को ऊतक संजनन के लिए एक्सप्लांट के रूप में प्रयोग किया जाता है । लीफ एक्सप्लांट पर एमएस + बीएपी (1.मि.ग्रा./ली.) + के.एन. (2.मि.ग्रा./ली.) + आईएए (1.मि.ग्रा./ली.) तथा एमएस + बीएपी (2.मि.ग्रा./ली.) + केएन (1, 1.5 एवं 2 मि.ग्रा./ली.) + आईएए (2 मि.ग्रा./ली.) का विभिन्न सांद्रताओं में कैलस विकास और टहनियों का 7-12 दिनों में पुनरुत्पादन (1-2 टहनी प्राप्त एक्स प्लांट) हेतु संचारित किया गया ।

2. पाठा

प्राकृतिक रुप से उगने वाले पादपों के नोडल भाग पर एमएस माध्यम से संचारित किया गया। 0.1 प्रतिशत पी.वी.पी. घटकों सहित बी.ए.पी., आई.ए.ए. तथा आई.बी.ए. (1-4 मि.ग्रा./ली.) के साथ परिपूरक किया गया । 15-20 दिनों के बाद (5-8 टहनी) टहनियों के विविध भागों का पुनरुत्पादन हुआ । 20-25 दनों के बाद मूल भाग में अनुकूल वृद्धि देखने को मिला जबकि परखनली में उगाने में टहनियों पर 1/2 एम.एस एवं आई.ए.ए. (1 से 4 मि.ग्रा./ली.) का संचारित किया गया । आगे परीक्षण किए जा रहे हैं ।

3. त्रिवृत

प्रतिवेदन अवधि में परखनलीय पुनरुत्पादन के अंतर्गत शीर्ष कली तथा नोडल भाग का एक्सप्लान्ट के रूप में प्रयोग किया जा रहा है ।

नोडल भाग एवं शीर्ष कली पर पूर्ण एवं अर्ध शक्ति एम.एस. माध्यक का के एन, बीएपी एवं आई.एए के साथ विविध सांद्रता में तथा एकल एवं अन्य घटकों के साथ संचारण किया गया । शीर्ष कलियों से विविध टहनी एवं नोडल भाग से एकल टहनियों को पुनरुत्पादन हेतु देखा गया । मूल परीक्षण में, 100 प्रतिशत मूल-उत्तर देखा गया तथा 1/2 एमएस एवं एमएस सतह पर टहनियों में संचारण किया और माध्यक का एन.ए.ए., आई.बी.ए. तथा आई.ए.ए. के साथ परिपूरक किया गया ।

8. औषध मानकीकरण अनुसंधान कार्यक्रम

आयुर्वेद एवं सिद्ध औषधियों/योगों की प्रभावकारिता में अपरिष्कृत औषधियों का मानकीकरण, विनिर्माण प्रक्रिया एवं तैयार उत्पाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । मिश्रित योगों जिनमें बहु बनस्पतियों, औषधियों/खनिज वनस्पति घटकों और औषधियों के विभिन्न वर्गों /योगों यथा भस्म, आसव तथा अरिष्ट और रसयोगादि का मानकीकरण कार्य बहुत ही कठिन है । परिषद ने अपने चेन्नई, कोलकाता, बंगलूर, त्रिवेन्द्रम, लखनऊ तथा जामनगर में स्थित एककों के माध्यम से एकल औषधियों के साथ-साथ मिश्रित योगों के मानकीकरण तथ उन्हें तैयार करने की विधि का कार्य शुरु किया है । विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशा निर्देशों के अनुसार जड़ी-बूटियों तथा उनके मिश्रित योगों का रख-रखाव पर अध्ययन का भी प्रयास किया जा रहा है । इस उद्देश्य के लिए टी.एल.सी. रूपरेखा, एच.पी.टी.एल.सी. फ्रिंगर प्रिंटिंग, माइक्रोबियल स्तर का निर्धारण तथा भारी धातु घटक आदि कुछ महत्वपूर्ण मापदण्ड प्रपत्र में सम्मिलित किए गए हैं । कैप्टन श्रीनिवास मूर्ति औषध अनुसंधान संस्थान, चेन्नई में उक्त परीक्षण पहले ही प्रारम्भ किए जा चुके हैं ।

भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने केंद्रीय योजना के अंतर्गत भारतीय चिकित्सा पद्धति के भेषजगुण विज्ञानीय मानकों को तैयार करने के लिए परिषद की चेन्नई, दिल्ली, पुणे, कोलकाता एवं वाराणसी स्थित पांच अनुसंधान प्रयोगशालाओं की परियोजनाएं भी स्वीकृत की गई हैं । परिषद की उक्त एककों द्वारा 33 एकल औषधियों/मिश्रित योगों की आयुर्वेदिक भेषज संहिता के प्रपत्र के अनुसार मानकीकरण किया जा चुका है ।

हास्पिटल सर्विसेज कंसल्टैंसी कार्पोरेशन (भारत सरकार) द्वारा तैयार किए गए परिवार कल्याण विभाग के आर.सी.एच. कार्यक्रम के अन्तर्गत बालरसायन, अर्क पोदीना, अर्क-अजवायन, क्षीर बला तेल एवं सुभाग्य शुंठी के विभिन्न नमूनों का परिषद की दिल्ली, चेन्नई, कोलकाता एवं पुणे स्थित विभिन्न प्रयोगशालाओं में परीक्षण किया गया। कुल 455 मिश्रित योगों का परीक्षण किया गया ।

वर्ष के दौरान किए गये कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है -

1. एकल औषधियों का मानकीकरणः

पादप मूल-

कोद्रव	-क्षे.अनु.सं.,त्रिवेन्द्रम
कुसुम्भ	-औ.मा.अनु.ए., जामनगर
घोंटा	-तदैव
एलावालुक	-के.अनु.सं., लखनऊ
करंकारा	-तदैव -
ऋद्धि	- तदैव -
ऋषिभक	- तदैव -
तिनिश	-क्षे.अनु.सं.बगलूर
त्रपुशा	- तदैव -

द्रवन्ती - तदैव -
तक्कोल - तदैव -

खनिज मूल

विडलवण -के.अनु.सं., लखनऊ
समुद्रलवण - तदैव -
औभिदलवण - तदैव -
सैंधव लवण - तदैव -
सौवर्चल लवण - तदैव -
नाग -क्षे.अनु.सं., बेंगलूर
विमल - तदैव -
यशद - तदैव -
गौदन्ती - तदैव -
मंडूर - तदैव -

चूर्ण

वैश्वानर चूर्ण (दो नमून) -क्षे.अनु.सं., त्रिवेंद्रम
श्रीग्यादि चूर्ण - तदैव -
संभाग्यादि चूर्ण - तदैव -
भास्कर लवण चूर्ण - तदैव -
समसकार चूर्ण -कै.श्री.मू.आयु.औ.अनु.सं.चेन्नई
सारस्वत चूर्ण - तदैव -

पाशाविक मूल -

सुक्ति -क्षे.अनु.सं., बंगलूर

2. औषध योगों का मानकीकरण -

भस्मः

महिष श्रृंग भस्म -क्षे.अनु.सं., बंगलूर
शंखनाभि भस्म - तदैव -
शुक्ति भस्म - तदैव -

अन्य योग-

गंधक रसायन -औ.मान.अनु.ए., जामनगर

3.एकल/मिश्रित औषध योगों का टी.एल.सी./एच.पी.टी.एल.सी अध्ययन-

शाल -कै.श्री.मू.आयु.औ.अनु.सं., चेन्नई
कंटकारी - तदैव -
सिरीष - तदैव -
भूआमलकी - तदैव -
पिप्पल्यादि योग - तदैव -
समासर्करा चूर्ण - तदैव -
सारस्वत चूर्ण - तदैव -

4. प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्तर पर भारतीय चिकित्सा पद्धति की परिचयात्मक साध्यता नामक परियोजना के लिए औषध योगों का एस.ओ.पी. का विकास/निर्माण की प्राप्ति एवं मानकीकरण।

अपरिष्कृत औषध की गुणवत्ता का निर्धारण -

प्रजनक एवं बाल स्वास्थ्य परियोजना के अंतर्गत औषधियों को तैयार करने के लिए 35 अपरिष्कृत औषधियों के अनेक नमूनों की गुणवत्ता का विश्लेषण भेषजिक मानकों के अनुरूप किया गया ।

इसके अतिरिक्त शहद, गुड, मुक्ता, शुक्ति भस्म एवं मंडूर भस्म आदि के नमूनों का उनकी गुणवत्ता निर्धारण हेतु परीक्षण किया गया ।

विभिन्न योगों के लिए एस.ओ.पी. का विकास -

15 योगों के निर्माण के लिए विभिन्न श्रेणी की औषधियों यथा - टैब्लेट, सीरप, अवलेह, लेहम एवं मलहम आदि के एस.ओ.पी. का विकास किया गया ।

योगों का मानकीकरण एवं निर्माण-

परिषदाधीन केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, कोलकाता द्वारा विकसित एस.ओ.पी. के अनुसार निम्नलिखित औषधियों को तैयार किया गया तथा उनका मानकीकरण किया गया ।

आयुष के वी एम सीरप	के.अनु.सं., कोलकाता, कै.श्री.मू.आयु.औ.अनु.सं.चेन्नई
आयुष पी.के.अवलेह	- तदैव -
आयुष एल.एन.डी.टैब्लेट	- तदैव -
आयुष ए.जी.टैब्लेट	- तदैव -
आयुंष यू.टी. पाउडर	- तदैव -
आयुष के.डी. पाउडर	- तदैव -
आयुष एस.एस. ग्रैनूल्स	- तदैव -
आयुष पी.जी.टैब्लेट	- तदैव -
आयुष बी.सी.टैब्लेट	- तदैव -
आयुष एस.डी.एम.टैब्लेट	- तदैव -
आयुष वी आर जी टैब्लेट	के.अनु.सं.कोलकाता
आयुष ए डी ई टैब्लेट	- तदैव -
आयुष जी.सी.टैब्लेट	- तदैव -
आयुष बी.आर.लेहम	- तदैव -

5. अन्य योग -

शिरीश्यादि क्वाथ चूर्ण	-कै.श्री.मू.आयु.औ.अनु.सं., चेन्नई
श्वास केसरी पाउडर (दो बैच)	- तदैव -
बाल रक्षक घुटी (बैच)	- तदैव -
आयुष घुट्टी (पांच बैच)	- तदैव -
आयुष बी.एल.तेल	-के.अनु.सं., कोलकाता

6. समग्र सूक्ष्म जैविक भार एवं रोगोत्पादक अवयवों की उपस्थिति हेतु परीक्षण

41 एकल औषधियों/मिश्रित योगों का सूक्ष्म जैविक भार एवं रोगोत्पादक अवयवों की उपस्थिति की जानकारी के लिए परीक्षण किया गया ।

कै.श्री.मू.आयु.औ.अनु.सं., चेन्नई

7. औषध/सत्व तैयार किये गये तथा भेषजगुण विज्ञानीय/निदान चिकित्सात्मक अध्ययन के लिए उनकी आपूर्ति की गईः

निम्बतिक्तम	200मि.ग्रा.के 35120 कैप्सूल	-क्षे.अनु.सं., त्रिवेंद्रम
गंधहर नीम्ब तैल	1.74 लीटर	- तदैव -
कास्टस स्पेसस का सत्व	16 ग्राम	- तदैव -
बूटीया मोनोस्पर्मा का सत्व	125 ग्राम	- तदैव -
कोकुलस हर्सुटस का सत्व		-के.अनु.सं., कोलकाता एवं नई दिल्ली
बर्जिनिया लिगुलेटा का बेंजीन एवं 90% जलीय आल्कोहलिक सत्व		-के.अनु.सं., नई दिल्ली
बर्जिनिया सिल्लियाटा का बेंजीन एवं 90% जलीय आल्कोलिक सत्व		- तदैव -
पेट्रोकार्पस सैंटेलीनस का बेंजीन एवं 90% जलीय आल्कोहलिक सत्व		- तदैव -
सोरिलिया कारीलिफोलिया का बेंजीन सत्व		- तदैव -

8. चिंहित द्रव्यों का अलगाव - के.अनु.सं.,कोलकाता

प्रतिवेदनावधि में निम्नलिखित पादपों का परीक्षण किया गया -

क्र.सं.	वैज्ञानिक नाम	संस्कृत/क्षेत्रीय नाम
1.	वोडा राक्सबर्घी आर.ब्र. (आर्किडैसी)	रास्ना
2.	मुर्रया कोनिजी स्प्रेंग (रुटैसी)	सुरभिनिम्ब
3.	कजैनस कैजान (लिन) मिल्लस्प (लेगुमिनासी)	अरहर
4.	क्लेरोसड्रम इंफार्चुनेटम लिन्न (वर्बेनासीय)	भंट
5.	स्वेर्टिया चिरात बच हम (जेन्सियेनेसी)	चिरायता

उपर्युक्त पांचों पादपों का रसायनिक परीक्षण किया गया तथा निम्नलिखित चिंहित द्रव्यों का सांद्रीकरण किया गया तथा विस्तृत विश्लेषणों (यू वी,आई आर, पीएमआर एवं सीएमआर) द्वारा उनकी पहचान की गई -

क्र.स.	पादप एवं परीक्षित भाग का नाम -	चिंहित मिश्रित योग में उनकी उपस्थिति एवं संरचना
1.	वांडा राक्सर्घी (संपूर्ण पादप) रास्ना	

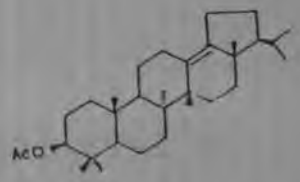

बोकमराइल एसीटेट

2. मर्रया कोनीगी (बीज)
सुरभिनिम्ब

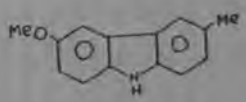

कोएनिम्बिन

3. कजानसकजन (मूल)
अरहर

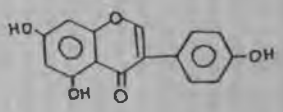

5, 7, 4-टाईहाइडाक्सी आइसो फ्लेवोन

4. क्लेरसोडहेंड्स इंफार्टुनैटम (पत्तियां)
भंट

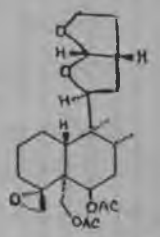

क्लेरोडिन

5. स्वेर्टिया चिरायता (संपूर्ण पादप)
चिरायता

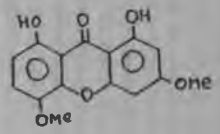

स्वेर्चिरिन

9. पूर्व आबंटित औषधियों पर सम्पन्न पादप रासायनिक अध्ययन

(i) शालपर्णी - कै.श्री.मू.आयु.औ.अनु.सं., चेन्नई

ठंडे पिरस्रवण विधि द्वारा पादपीय चूर्ण का एन-हेक्सेन, क्लोरोफार्म एवं मिथेनोल से सत्वीकरण किया गया । हेक्सेन सत्व का सिलिका जैल के ऊपर क्रोमैटोग्राफी किया गया । हेक्सेन से एक ठोस द्रव्य की प्राप्ति हुई जिसमें स्टीरोल के लिए लिर्बमेन बुर्कार्ड परीक्षण किया गया । हेक्सेन : बेंजीन का प्रयोग करते हुए टी.एल.सी. से स्टीरोल को शुद्ध किया गया । एक प्रामाणिक नमूना से तुलना करने पर बेंजीन एथिल एसिटेट से एक रंगरहित ठोस की प्राप्ति हुई जिसकी बीटा सीटोस्टीरोल के रुप में पहचान की गई ।

क्लोरोफार्म सत्व की सिलिका जैल के ऊपर क्रोमैटोग्राफी की गई जिससे क्लोफार्म मिथेनोल द्वारा एक रवेदार योग प्राप्त हुआ जिसने स्टीरोल एवं शर्करा का टेस्ट दिया । प्रमाणिक नमूने के साथ को-टी एलसी द्वारा मिश्रण की बीटा सीटोस्टीरोल, बीटा डी ग्लाकोसाइड के रुप में पहचान की गई ।

सिलिका जैल के ऊपर मिथेनोल सत्व की क्रोमैटोग्राफी की गई तथा एथिल एसीटेट एवं मिथेनोल मिश्रण से एक रंगरहित योग प्राप्त हुआ । इसकी पहचान एवं शुद्धिकरण का कार्य प्रगति पर है ।

(ii) चिन्नी **कै.श्री.मू.आयु.औ.अनु.सं., चेन्नई**

औषध पादप चूर्ण को हेक्सेन, क्लोरोफार्म एवं अल्कोहल के साथ शीत में निस्सार किया गय। सिलिका जैल के ऊपर अल्कोहल सत्व के एथिल एसिटेट के घुनलशील भाग की क्रोमैटोग्राफी करने पर एक रंगरहित ठोस प्राप्त हुआ । बाद में बार-बार क्रोमैटोग्राफी करके शुद्ध किया गया तथा एसिटोन हेक्सेन मिश्रण को पुनः रवे बनाने पर एक ठोस पदार्थ (गलनांक 295 सें.) प्राप्त हुआ । उस ठोस ने सकारात्मक सल्कोवस्की परीक्षण दिया जिससे ट्राइटर्पीनायड की उपस्थिति का संकेत मिला। विश्लेषण के आधार पर इसकी 2 अल्फा, 3 बीटा, 23-टाईहाइड्राक्सी ओलीयन-12-ईन-28-ओएक एसिड जिसकी अर्जुनोलिक एसिड (आकृति-1) के रुप में पहचान की गई । इस द्रव्य की इस पादप की यह पहली रिपोर्ट है ।

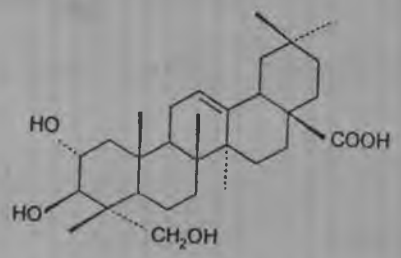

आकृति-1

(iii) लोध्र - **क्षे.अनु.सं., त्रिवेंद्रम**

अधोवाह के अन्तर्गत 85 प्रतिशत जलीय एथिल अल्कोहल में इसकी तना-त्वक का सत्वीकरण किया गया तथा एथनाल सत्व को सांद्रित कर इसे रेफ्रीजरेटर में 48 घंटे तक रखा गया। तत्पश्चात एक पीला पदार्थ प्राप्त हुआ जिसने फ्लेवेनायड ग्लाइकोसाइड का टेस्ट दिया ।

एक प्रमाणिक नमूने के गलनांक, आर.एफ. मूल्यांकन से इसकी रुटीन के रुप में पहचान की गई ।

जलीय सत्व के सकारात्मक निनहाईड्रिन परीक्षण से एमिनो अम्ल की उपस्थिति परिलक्षित हुई। इसकी दो तरह से उर्ध्वक्रम क्रोमैटोग्राफी की गई । क्रोमैटोग्राम के निनहाइड्रिन परीक्षण द्वारा आठ एमिनो अम्ल, एलानिन, वेलीन, सीरीन, ग्लाइसीन, एस्पेरेटिक एसिड, आर्जिनिन, ल्यूसिन तथा ग्लूटेमिक अम्ल की पहचान की गई ।

(iv) धातकी **क्षे.अनु.सं., त्रिवेंद्रम**

इसके पुष्पों को 85 प्रतिशत एथिल अल्कोहल तथा जल में अलग-अलग सात्वित किया गन। एथनालिक सत्व को सांद्रित किया गया तथा निनहाइड्रिन के साथ परीक्षण किया गया । इससे एमिनो अम्ल की उपस्थिति परिलक्षित हुई । इसके जलीय सत्व को प्रोटीन की प्राप्ति के लिए अमोनियम सल्फेट के साथ क्रिया कराई गई । यह सल्फुरिक अम्ल के साथ हाइड्रोलीसीस थी । हाइड्रोलाइसेट ने भी सकारात्मक निनहाइड्रिन टेस्ट दिया । पेपर क्रोमैटोग्राफी द्वारा आठ अमिनो अम्ल, यथा एलानिन, ग्लाइसीन वैलीन, सीरीन, ल्यूसीन, थ्रीओनिन, आस्परैटिक अम्ल एवं ग्लूटेमिक अम्ल की स्वतंत्र उपस्थिति परिलक्षित हुई तथा दस एमिनो अम्ल-एलानिन, ग्लाईसीन, वैलीन, सीरीन, ल्यूसीन, थ्रीओनिन, अस्परैटिक अम्ल, ग्लूटैमिक अम्ल एवं आर्जिनिन की प्रोटीन में उपस्थिति मिली । तीन शर्कराओं यथा - ग्लूकोज, गलैक्टोज एवं अरैबिनोज की भी पहचान की गई ।

(v) पिंडव **कै.श्री.मू.आयु.औ.अनु.सं., चेन्नई**

पादप के गोंद के क्लोरोफार्म सत्व से गार्डेनिन-अ प्राप्त हुआ ।

(vi) पाषाण भेद **के.अनु.सं., दिल्ली**

(अ) बर्जिनिया सिल्लियाटा

बेंजीन के सत्वीकरण के बाद पादप अवशेष को सुखाया गया तथा अधोवह के अन्तर्गत गर्म एथनाल (90%) से सत्वीकरण किया गया और गहरा रंग का ठोस पदार्थ प्राप्त हुआ । एथनाल सत्व को फिल्टर तथा कम दाब पर सांद्रित किया गया । एथनाल सत्व को दो भागों में बांटा गया । एक भाग को सुखा कर भेषजगुण विज्ञानीय परीक्षण के लिए भेजा गया तथा दूसरे भाग को 5 घंटे तक 200 मि.ली. तक जल अधोवह करके रुई से छाना गया ।

प्राप्त जलीय सत्व को बैंजीन, एथिलएसिटेट एवं एथिल मिथाइल कीटोन में प्रभाजित किया गया ।

बी. सिल्लियाटा के जलीय एथनालिक सत्व को बेंजीन, एथिलएसिटेट एवं एथिल मिथाइल कीटोन में प्रभाजित किया गया । मदर लिकर को 6 माह तक रेफ्रिजरेटर में रखा गया। फ्लास्क की पैंदी पर सफेद ठोस की पर्याप्त मात्रा पायी गई । इसको छानकर मिथाइल अल्कोहल के साथ बार-बार रवे बनाये गये । इसके दो योग अ और ब अलग करके उनके गलनांक का निर्धारण योग अ, गलनांक 244-45 डिग्री सें. एवं योग ब, गलनांक 152-54 डिग्री सें. पर किया गया । आगे का कार्य प्रगति पर है ।

(ब) बर्जिनिया लिगुलेटा

पाषाण भेद अवशेष भाग से बैंजीन को सुखा कर दूर किया गया तथा अधोवह के अंतर्गत गर्म एथनाल से (90%) सत्वीकरण किया गया । सात्वित एथनाल को फिल्टर (वाट मैन सं. -3) किया गया तथा कम दबाब पर सांद्रित करने पर गाढ़ा रंगीन ठोस पदार्थ प्राप्त हुआ । एथनाल सत्व को 150 मि.ली. जल में 5 घंटे तक अधोवह करके रुई से छाना गया । तत्पश्चात् जलीय सत्व को बैंजीन, एथिल एसिटेट एवं एथिल मिथाइल कीटोन में क्रमशः अवघटित किया गया । इसके बाद कम दाब पर इनको सांद्रित किया गया ।

10. पेटेंट — के.अनु.सं., कोलकाता

पेटेंट की चार विधियों को मंजूरी दी गई ।

9. भेषजगुणविज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम

भेषजगुण विज्ञानीय एवं विषाक्तता का प्रायोगिक जीवों पर अध्ययन एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है जो कि नई औषधियों के विकास या प्राचीन दावों की पुष्टि या लोक कथाओं में वर्णित औषधियों की पुष्टि करता है । इन्ही उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए परिषद ने भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम के माध्यम से चेरुथुरुथि, कोलकाता, मुम्बई, पटियाला एवं त्रिवेंद्रम में 18 एकौषधियों, सांकेतिक औषधियों एवं मिश्रित योगों पर अध्ययन किया । संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है-

1. अग्निमंथ **के.अनु.सं.को.**

रंजकहीन चूहों में 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा. औषध से महत्वपूर्ण ऐंठन प्रभाव पाया गया ।

100 मि.ग्रा./कि.ग्रा. औषधि से रंजकहीन चूहों ने कोई व्यग्रता नहीं प्रकट की जबकि 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा. औषधि ने मध्यम प्रभाव दिखाया ।

2. अरलु **के.अनु.सं.को.**

तीव्र विषाक्तता अध्ययन हेतु गिनी पिगों को अन्तः उदावरण द्वारा 10, 25, 50, 100 एवं 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार से औषधि दी गई । जन्तु जिन्हें 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार से औषधि दी गई, उनमें कम गतिशीलता देखी गई एवं 24 घंटे के अंदर मर गये जबकि दूसरे समूहों में कोई नश्वरता नहीं पायी गयी ।

पेंटोबार्बीटोन द्वारा उत्पन्न निद्रा में यह प्रभावहीन पाया गया ।

आंत्रिक गतिशीलता अध्ययन के अंतर्गत औषधि में 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार की मात्रा में महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया । एवं मानक नियंत्रण की तुलना में आंत्रिक गतिशीतलता में प्रबल क्रियाशीलता पायी गयी ।

मानक की तुलना में औषधि (मात्रा 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा.) ने चूहों में महत्वपूर्ण तड़पड़ाने वाला प्रभाव दर्शाया ।

रंजकहीन चूहों में औषधि (25, 50, 100 एवं 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा. अन्तः उदावरण) की नियंत्रण की तुलना में गतिशीलता में कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

दोनों लिंग के चूहों में औषधि का अतिसाररोधी अध्ययन किया गया । एरण्डी के तेल के प्रभाव की तुलना मानक औषधि डाई फिनोक्सीलेट से की गई । परिणामों से 50, 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा.,

शरीर भार की मात्रा में औषधि ने महत्वपूर्ण प्रभाव दिखाया जबकि कोई भी वेदनाहर प्रभाव नहीं पाया गया ।

के.अनु.सं.चे.

चूहों में केराजीन द्वारा उत्पन्न पंजाशोथ में न तो जलीय न ही क्वाथ में (500 एवं 1000 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, मुखीय) कोई महत्वपूर्ण शोथहर प्रभाव पाया गया।

क्वाथ (100 एवं 500 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, मुखीय) में कोई महत्वपूर्ण वेदनाहर प्रभाव नहीं पाया गया ।

चूहियों में पेंटोबार्बीटोन द्वारा उत्पन्न ऊतकक्षय में कोई महत्वपूर्ण केंद्रीय तंत्रिका तंत्र प्रभाव नहीं पाया गया ।

3. आयुष- 64 (नया योग) **के.अनु.सं.को.**

गिनीपिगों पर औषधि (10, 25, 50, 100 एवं 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा., अंतः उदावरण)का तीक्ष्ण विषाक्तता अध्ययन किया गया । मानक की तुलना में कोई मरणशीलता नहीं पायी गयी ।

पेंटोबार्बीटोन द्वारा उत्पन्न निद्रा मं यह औषधि (50 एवं 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा., मुखीय) प्रभावहीन पायी गयी । औषधि (50मि.ग्रा./कि.ग्रा. अंतः उदावरण) ने नर रंजकहीन चूहों में महत्वपूर्ण ऐंठनशीलता प्रदर्शित की ।

आयुष - 64 (25, 50, 100 एवं 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा. मुखीय) ने रंजकहीन चूहों में कोई वेदनाहर प्रभाव नहीं दिखाया ।

औषधि (25, 50 एवं 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा.), मुखीय ने रंजकहीन चूहों में गतिशीलता में कोई सार्थक प्रभाव नहीं दिखाया ।

के.अनु.सं.प.

आयुष-64 ने 50-500 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार, मात्रा में कोई विपरीत प्रभाव नहीं पैदा किया।

4. तनावहर औषधि - एक सांकेतिक औषधि **के.अनु.सं.को.**

तनावहर औषधि (100 एवं 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, मुखीय) में नियंत्रण औषधि की तुलना में ऐंठनशीलता में कोई संरक्षण नहीं पाया गया ।

दोनों मात्राओं (100 एवं 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा. मुखीय) में औषधि ने रंजकहीन चूहों में व्यग्रता में कोई प्रभाव नहीं दिखाया ।

5. प्रायोगिक हृद्पेशी रोधगलन **के.अनु.सं.चे.**

शिलाजीत, वेलाकोट्टम, आयुर्वेदिक संपाक-I एवं - II द्वारा एंजाइम सीपीके का महत्वपूर्ण ढ़ंग से दमन किया गया । हृद्रपेशी रोधगलन में आयुर्वेदिक संपाक- II-संपांक-I से ज्यादा प्रभावशाली पाया गया ।

6. जीवीके योग (एक सांकेतिक औषधि) के.अनु.सं.को.

पेंटोबार्बीटोन द्वारा उत्पन्न निद्रा में जीवीके (50 एवं 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा. मुखीय) प्रभावहीन पाया गया ।

मानक की तुलना में जीवीके (50 मि.ग्रा./कि.ग्रा., अंतः उदावरण) ने रंजकहीन नर चूहों में महत्वपूर्ण तड़पड़ाने वाला प्रभाव पैदा किया ।

जीवीके योग ने 25 मि.ग्रा./कि.ग्रा., मुखीय मात्रा में चूहियों में महत्वपूर्ण गतिशीलता दिखाई जबकि चूहों में औषधि ने 25, 50 एवं 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा. मुखीय मात्रा में सार्थक गतिशीलता नहीं प्रदर्शित की ।

जीवीके योग (30,150 एवं 300 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, चूहों में, मुखीय) ने 15 दिन के उपचार के दौरान शरीर भार में कोई सार्थक परिवर्तन नहीं दिखाया । 300 मि.ग्रा./कि.ग्रा., मात्रा तक मरणशीलता भी नहीं देखी गयी । मानक की तुलना में सजीव अंगों के भार में कोई परिवर्तन नहीं पाया गया । उप-तीक्ष्ण विषाक्तता अध्ययन के अंतर्गत औषधि (25, 125 एवं 250 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, मुखीय) ने चूहों के शरीर भार में कोई सार्थक परिवर्तन नहीं पाया गया ।

7. हम्सपदी **के.अनु.सं.चे.**

क्वाथ (500 एवं 1000 मि.ग्रा/कि.ग्रा., शरीर भार) जलीय सत्व (500 एवं 1000 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार) एवं अल्कोहल सत्व (100 एवं 500 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार) का पेंटोबार्बीटोन द्वारा उत्पन निद्रा के अध्ययन के दौरान कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया ।

क्वाथ एवं जलीय सत्व ने 1000 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार की मात्रा में महत्वपूर्ण ज्वरहर प्रभाव दिखाया जबकि अल्कोहल सत्व ने चूहों में कम प्रभाव दर्शाया । इसके प्रयोग से

समन्वेषी व्यवहार में कोई प्रभाव नहीं पाया गया । अवसादक रोधी अध्ययन के दौरान कोई सार्थक परिवर्तन परिलक्षित नहीं हुआ ।

चूहों में प्रायोगिक औषधि का वेदनाहर अध्ययन भी किया गया । जलीय सत्व (100 एवं 500 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार मुखीय) ने उन चूहों को जिन्हें आसवित जल दिया गया की तुलना में सार्थक वेदनाहर प्रभाव नहीं दिखाया ।

8. जामती की वेल, चिलाहिंता **के.अनु.स.को.**

औषधि के जड़ीय सत्व के भेषजगुण विज्ञानीय अध्ययन के अंतर्गत 200 एवं 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, की मात्रा में ऐंठन रोधी प्रभाव एवं व्यग्रता में कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया ।

9. जीरकादि मोदक **के.अनु.सं.को.**

तीक्ष्ण विषाक्तता अध्ययन के अंतर्गत जीरकादि मोदक (2000, 1000, 500, 200 एवं 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार) स्वस्थ रंजकहीन चूहों को खिलाया गया । इस औषधि मात्रा तक कोई मरणशीलता नहीं पायी गयी एवं औषधि इस मात्रा तक सुरक्षित है ।

औषधि ने तैराकी तनाव में कोई सार्थक प्रभाव नहीं दिखाया । औषधि(200 एवं 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार) ने गतिहीन जन्तुओं में कोई सार्थक प्रभाव नहीं दिखाया।

औषधि में 25, 50,100 एवं 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार मात्रा में सार्थक वेदनाहर प्रभाव नहीं पाया गया ।

10. कुटज **के.अनु.सं.को.**

गिनीपिगो पर औषधि (10, 25, 50, 100 एवं 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, अन्तः उदावरण) का तीक्ष्ण विषाक्तता अध्ययन किया गया । मानक की तुलना में कोई मरणशीलता नहीं पायी गयी ।

पेंटोबार्बीटोन द्वारा उत्पन्न निद्रा में यह औषधि (50 एवं 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा., मुखीय) प्रभावहीन पायी गयी ।

आंत्रिक गतिशीलता अध्ययन के अंतर्गत औषधि में 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार की मात्रा में महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया एवं मानक नियंत्रण की तुलना में आंत्रिक गतिशीलता मे प्रवल क्रियाशीलता पायी गयी ।

मानक की तुलना में औषधि (मात्रा 50 मि.ग्रा./कि.ग्रा., अन्तः उदावरण) ने चूहों में महत्वपूर्ण तड़पड़ाने वाला प्रभाव दर्शाया ।

औषधि ने 25, 50, 100 एवं 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा., मुखीय मात्रा में सार्थक वेदनाहर प्रभाव नहीं दिखाया ।

रंजकहीन चूहियों में औषधि (25, 50, 100 एवं 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा., अंतः उदावरण) की नियंत्रण की तुलना में गतिशीलता में कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

अतिसार रोधी अध्ययन के अंतर्गत औषधि (50 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार) में सार्थक अतिसार रोधी प्रभाव पाया गया ।

11. निम्बादि चूर्ण **के.अनु.सं.को.**

उप तीक्ष्ण विषाक्तता अध्ययन हेतु, निम्बादि चूर्ण रंजकहीन चूहियों को 250, 125, 25 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार मुखीय रुप में खिलाया गया । यह औषधि 7वें दिन तक दी गई । औषधि ने कोई विषाक्त प्रभाव नहीं दिखाया । जन्तु स्वस्थ पाये गये एवं कोई मरणशीलता नहीं पायी गयी ।

12 पाषाण भेद - (अ) बार्जिनिआ लिगुलेटा **के.अनु.सं.प.**

औषधि की जड़ के अल्कोहल सत्व ने मुखीय रुप में, व्यवहार में, रुग्णता, मरणशीलता, 1000 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार तक नहीं पैदा की । औषधि ने वेदनाहर, ऐंठन-रोधी, निम्नतापी, शोथहर प्रभाव नहीं दिखाये एवं पैंटोबार्बीटोन द्वारा उत्पन्न निद्रा में भी अप्रभावी रही ।

13. पाषाण भेद - (ब) बार्जिनिआ सिल्लियाटा **के.अनु.सं.प.**

औषधि ने 100, 200 एवं 300 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, मात्रा में कोई गतिविधि नहीं दिखाई ।

14. रक्त चंदन **के.अनु.सं.प.**

रक्त चंदन ने 50,150 एवं 500 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, मुखीय शोथहर प्रभाव दर्शाया ।

15. शिग्रु — के.अनु.सं.को.

शिग्रु की जड़ एवं तना त्वक के अल्कोहल सत्वों का वेदनाहर अध्ययन किया गया । रंजकहीन चूहों ने 100 एवं 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा., मुखीय, मात्रा में कोई सार्थक प्रभाव नहीं दिखाया ।

16. सुरभि निम्ब (एम के-2: एक सांकेतिक औषधि) — के.अनु.सं.को.

पादप सत्व के हेक्सेन प्रभाग से प्राप्त एक क्षारोद: एम के-2 का भेषजगुणविज्ञानीय अध्ययन किया गया । मानक की तुलना में एम के-2 (50 एवं 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा., मुखीय) ने आंत्रिक गतिशीलता में सार्थक प्रभाव दिखाया ।

मानक की तुलना में एम के-2 (50 एवं 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, मुखीय) में सार्थक अतिसार रोधी प्रभाव पाया गया ।

सुरभि निम्ब क्वाथ ने चूहों में लाभकारी यकृत रक्षी प्रभाव दर्शाया ।

17. तालिस पत्र — के.अनु.सं.को.

औषधि (200 मि.ग्रा./कि.ग्रा., मुखीय) ने मानक की तुलना में रंजकहीन चूहों में गतिशीलता में सार्थक प्रभाव नहीं पैदा किया ।

18. विरुद्ध आहार में विषाक्तता अध्ययन — कें.अनु.सं.चे.

रंजकहीन चूहों के 3 प्रायोगिक समूहों यथा झींगा, दुग्ध एवं झींगा-दुग्ध का अध्ययन किया गया। सीरम क्षारीय फास्फेट में वृद्धि और उपचयनरोधी इन्जाइम में कमी विरुद्ध आहार में व्यवस्थापरक विषाक्तता की सूचक है ।

10. वाङ्मय अनुसंधान कार्यक्रम

परिषद का वाङ्मय एवं इतिहास अनुसंधान कार्यक्रम वर्तमान में भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान , हैदराबाद के माध्यम से संचालित किया जा रहा है जिसको एक ऐतिहासिक अभिलेखागार एवं सांस्कृतिक संपदालय के रूप में मान्यता दी गई है । प्रतिवेदनावधि 2000-03 में इस संस्थान ने जो कि पूरे दक्षिण पूर्व एशिया में अपने प्रकार का है निम्नलिखित अनुसंधान कार्य संपन्न किएः-

1) दो ऐतिहासिक शोध-पत्रों के संपादन का कार्य पूर्ण हुआ यथा-किलसा रोग का ऐतिहासिक पहलू एवं अन्नवह स्रोतस की बीमारी संबंधी संकलन किया गया । इसके अतिरिक्त संस्थान की पत्रिका 'बुलेटिन आफ दी इंडियन इंस्टीच्यूट आफ हिस्ट्री आफ मेडिसिन' में प्रकाशन के लिए कुष्ठ नामक औषध के आलेख का कार्य भी पूर्ण किया ।

2) 'उर्दू भाषा में आयुर्वेदिक साहित्य' की शृंखला में चौथे भाग का संकलन किया गया । इसके अतिरिक्त आयुर्वेद एवं यूनानी के चिकित्सकों तथा समालोचकों के जीवन-वृत्त पर एक मोनोग्राफ भी तैयार किया गया । साथ ही दो जीवन वृत्तीय पत्रों जिनमें एक भावमिश्र पर तथा दूसरा निज़ाम -7 के चिकित्सकों से संबंधित था, का संकलन किया गया ।

3) 'ताड़ पत्रों पर उपलब्ध आयुर्वेदिक एवं यूनानी-पाण्डुलिपियों की विवरणात्मक टिप्पणियों का एकत्रीकरण करने का कार्य भी प्रारंभ किया गया ।

4) अनुवाद एवं दुर्लभ आयुर्वेदिक पुस्तकों के प्रकाशन से संबंधित कार्यक्रम के अंतर्गत संस्थान ने 'बासवराजीयम्' का तेलुगू से हिंदी/अंग्रेजी अनुवाद भी कराने का कार्य प्रारंभ किया ।

प्रतिवेदनावधि के दौरान संस्थान के पुस्तकालय को भारतीय चिकित्सा इतिहास एवं संबद्ध विज्ञान विषयक 27 नई पुस्तकें सुलभ हुई तथा 68 नये अध्येताओ को संदर्भ सेवा सुलभ कराई गयीं।

वर्तमान में इस संस्थान में एक प्राचीन भारतीय चिकित्सा से संबंधित एवं एक नूतन आयुर्विज्ञान विषयक संग्रहालय हैं जिनमें तीन नए दुर्लभ ऐतिहासिक रिकार्ड एवं तीन चार्ट/ फोटोग्राफों का संग्रहण हुआ । संस्थान के अनुसंधान अध्येताओं को भुगतान के आधार पर छाया प्रतियां एवं फोटो प्रतियां सुलभ कराई ।

विविध गतिविधियां -

1) प्रतिवेदनावधि में आयुर्वेद एवं यूनानी ताड़पत्रों की पाण्डुलिपियों के विस्तृत कैटलाग से संबंधित संकलन कार्य को प्रारंभ किया गया ।

2) 'रीवाइज्ड चैक लिस्ट आफ संस्कृत मेडिकल मैनुस्क्रीप्ट इन इंडिया' के प्रकाशन से संबंधित परियोजना जो पूर्व सेवा-निवृत्त निदेशक (संस्थान) डा0 वी.रामा राव के निर्देशन में चल रही थी, के लिए अतिरिक्त सामग्री जुटाई गई ।

सम्मेलनों/बैठकों आदि में सहभागिता

इस संस्थान ने हैदराबाद में 7 से 9 फरवरी, 2003 को आयोजित स्वास्थ्य पर्यटन मेला में सहभागिता की । डा. अल्लानारायण, प्रभारी सहायक निदेशक ने '16 दिसम्बर, 2002 को' आयोजित आंध्र प्रदेशीय एसोसिएशन आफ आयुर्वेदिक सर्जन के सी एम ई प्रोग्राम में भाग लिया तथा 'हिस्ट्री आफ मेडिसिन विद स्पेशल रिफरेंश टू एंशिएंट इंडियन सर्जरी' पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया । डा. वी.वी. प्रसाद, अनुसंधान अधिकारी (आयु.) ने 14-15 दिसम्बर, 2002 को आयोजित एक सम्मेलन में 'आंध्र प्रदेशीय फाक क्लेम्स, हर्ब्स एण्ड मेडसीनल प्लाण्ट्स' पर एक पत्र प्रस्तुत किया तथा कोची में 1 से 4 नवम्बर, 2002 को आयोजित विश्व आयुर्वेदिक कांग्रेस में भी भाग लिया ।

परिषद मुख्यालय के प्रकाशन प्रभाग द्वारा केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद की आयुर्वेदिक अनुसंधान में प्रयुक्त औषधीय पादपों पर डाटाबेस का चौथा एवं पांचवा अंक प्रकाशित किया गया तथा आयुर्वेदिक होमरेमेडीज के अतिरिक्त आयुर्वेद में प्रयुक्त औषधीय पादपों पर डाटाबेस एवं 'कामन हीलींग हर्ब (अंग्रेजी)' को पुनः मुद्रित किया गया । प्रतिवेदनावधि के दौरान 'आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका' का तीसरा एवं चौथा अंक वर्ष 2001 का एवं 1 एवं 2 अंक 2002 के साथ 'चिकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका' का जन.-जून, 2000 का अंक भी प्रकाशित किया गया ।

वर्ष 2002-03 में 5,28,080/- रुपये की परिषदीय प्रकाशनों की बिक्री की गई ।

11. परिवार कल्याण अनुसंधान कार्यक्रम

परिषद द्वारा कार्यक्रम परियोजना वर्ष 1998 -2003 के अधीन प्रजनक एवं शिशु स्वास्थ्य (आरसीएच) कार्यक्रम चलाया जा रहा है । प्रतिवेदनावधि के दौरान प्रजनक एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम के अधीन केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, पटियाला, लखनऊ एवं जयपुर तथा आरएसएससीए एकक, अहमदाबाद, त्रिवेन्द्रम एवं जामनगर में अनुसंधान अध्ययन किए गए । विस्तृत विवरण निम्नानुसार हैं -

निदान चिकित्सात्मक अध्ययन

मुखीय एवं स्थानीय आयुर्वेदिक गर्भ निरोधक -

जपा कुसुम की भावना से युक्त पिप्पल्यादि योग -

500 मि.ग्रा. की पिप्पली की दो टिकियां (जिसमें विडंग मिला हो) एवं टंकण की समान मात्रा चीनी गुलाब के पुष्प से युक्त करके, कांजी के साथ प्रत्येक मासिक धर्म के प्रथम दिन से अन्तिम दिन तक प्रयोग में लाई गई ।

नीम तेल -

प्रति संभोग से पहले नीम तेल की 1 मि.ली. मात्रा का योनि में प्रयोग किया गया । कुछ केंद्रों पर सुगंधीकरण के लिए लेमन ग्रास तेल का प्रयोग किया गया ।

परिणाम -

गर्भधारण के कारण काफी महिलाएं बाहर हो गई । अतः प्रतिवेदनावधि में औषध की असफलता, औषध का त्याग या अन्य कारणों को निम्नलिखित तालिका में दिखाया गया है -

औषध का नाम	केंद्र	रोगियों की संख्या					
		अध्ययन		चिकित्सा छोड़ने का कारण			अध्ययन की निरंतरता
		नए	पुराने	औषध की असफलता	औषध छोड़ना	अन्य कारण	
पिप्पल्यादि योग जपाकुसुमकी भावनाके साथ	के. अनु.स.को	15	63	3	3	48	24
	क्षे.अनु.सं.त्रि.	46	23	2	2	44	21
	के.अनु.स.प.	5	13	-	2	7	9
नीम तैल	के.अनु.सं.को	27	83	4	4	62	40
	कुल	**93**	**182**	**9**	**11**	**161**	**94**

शिशु एवं बाल परिचर्याः

इस कार्यक्रम के अंतर्गत बालकास, बालातिसार एवं बाल दौर्बल्य को आबंटित किया गया । प्रतिवेदनावधि के दौरान अध्ययन परिणाम निम्नानुसार हैः

परिणामः

औषध का नाम	रोग	केंद्र	रोगियों की संख्या	परिणाम				
				अच्छा	उत्तम	कम	अपरि-वर्तित	मध्यगत
5 वर्ष तक	बालकास	के.आयु.अनु.सं. लखनऊ	149	10	26	95	18	–
1.वासावलेह								
2.कंटकारी अवलेह								
3.यष्टिमधु + दाडिम चूर्ण बनफसा शहद के साथ दिया गया		के.आयु.अनु.सं. जयपुर	81	28	27	1	1	24
6-12 वर्ष तक								
1.चंद्रामृत रस तालिसादि चूर्ण के साथ								
2. नारदीय लक्ष्मी विलास रस गोदंती भस्म एवं टंकण भस्म								
3. वासावलेह								
5 वर्ष तक	बालातिसार	के.आयु.अनु.सं. लखनऊ	54	9	8	25	12	–
बाल चतुरभद्र चूर्ण, दाड़िमस्तक चूर्ण के साथ		के.आयु.अनु.सं. जयपुर	8	9	–	–	–	–
5 वर्ष तक								
मंडूरादि अवलेह	बालदौर्बल्य	के.आयु.अनु.सं. लखनऊ	43	1	4	20	18	–
6-12 वर्ष तक								
मंडूरादि वटी								
योग			**335**	**56**	**65**	**141**	**49**	**24**

पिप्पल्यादि योग परियोजना का वर्तमान स्वरुप

वर्तमान में पिप्पल्यादि योग पर स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के परिवार कल्याण विभाग द्वारा इसके गर्भाधानरोधी प्रभाव के मूल्यांकन के लिए राष्ट्रीय जनसंख्या कार्यक्रम में महिलाओं से संबंधित इस मुखीय आयुर्वेदिक गर्भनिरोधक के अन्तर्वेशन के लिए कार्य किया जारहा है । इस उद्देश्य के लिए प्रो0 रंजीत राय चौधरी, सेवामुक्त वैज्ञानिक, नेशनल इंस्टिच्यूट आफ इम्मुनालाजी, नई दिल्ली की अध्यक्षता में भारतीय चिकित्सा पद्धति में, गर्भाधानरोधी अनुसंधान के लिए एक विशेषज्ञ समूह का गठन किया गया है ।

प्रो. रंजीत राय चौधरी के निरीक्षण में नेशनल इंस्टीच्यूट आफ इम्मुनालाजी, नई दिल्ली में विषाक्तता एवं भ्रूणीय विषाक्तता अध्ययन किया गया । फलतः पिप्पल्यादि योग में कोई विषाक्तता या भ्रूणीय विषाक्तता प्रभाव नहीं पाया गया ।

प्रतिवेदनावधि के दौरान केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पटियाला द्वारा फेज-II परीक्षण के लिए पिप्पल्यादि योग का कैप्सूल तैयार किया गया जिसका अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, स्नातकोत्तर संस्थान, चंण्डीगढ़, जिपमेर, पाण्डिचेरी एवं के.ई.एम. मुम्बई में परीक्षण किया गया । इस नमूने को निपेर, मोहाली में विश्लेषित किया गया । फलतः क्रोमैटाग्राफी प्रोफाइल में परिवर्तन दिखाई दिया जो ,कैप्सूल का परिवर्तनीय अवयव इंगित करता है । चूंकि ये कैप्सूल केंद्रीय अनुसंधान संस्थान पटियाला द्वारा तैयार किये गये हैं जो निदान चिकित्सात्मक परीक्षण के लिए उपयुक्त नहीं पाए गए । इसलिए यह निर्णय लिया गया है कि जीव-प्राप्य, वानस्पतिक चिन्हों को विकसित करने, निदान चिकित्सात्मक अध्ययनों की सहायता एवं चिंहित रसायनों के योग के लिए इसके मानकीकरण एवं स्थायित्व से संबंधित अध्ययन कार्य को निर्धारित किया जाए । साथ ही द्वि-मासिक आधार पर 18 माह के लिए इसके निदान चिकित्सात्मक परीक्षण हेतु औषध निर्माण को भी निर्धारित किया जाए । एतद्नुसार डा. भुटानी, निपेर ने संबंधित धनराशि की प्राप्ति के लिए परिवार कल्याण विभाग में अपना प्रस्ताव प्रस्तुत किया है । फेज-II परीक्षण निपेर के प्रस्ताव प्राप्ति के पश्चात शुरु किया जाएगा । इस प्रस्ताव की स्वीकृति होने पर पिप्पल्यादि योग कैप्सूल का मया बैच तैयार किया जाएगा । पिप्पल्यादि योग की गर्भनिरोधक क्षमता के निर्धारण के पश्चात इसकी राष्ट्रीय जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम में अन्तर्वेशन के लिए संस्तुति की जा सकती है ।

परिषद के अधीन लेह, लद्दाख में एक तिब्बतीय/आमची चिकित्सा एकक है । इस एकक द्वारा तिब्बतीय चिकित्सा का निदान चिकित्सात्मक परीक्षण/आमची औषध योग से चिकित्सा, औषधीय पादपों का सर्वेक्षण एवं आमची पद्धति में प्रयुक्त अपरिष्कृत औषधियों के संग्रह का कार्य पूरा किया गया । साथ ही इस एकक द्वारा तिब्बतीय औषध की पाण्डुलिपियों, जो पुरानी और दुर्लभ थीं, का संकलन कार्य भी किया गया।

पारंपरिक आमची चिकित्सा पद्धति की लद्दाख में जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं । उच्च रक्त चाप की चिकित्सा के लिए आमची भेषज संहिता में अनेक विधियां एवं औषधियां सुलभ हैं, जिनमें से दो योगों को दो समूहों में अध्ययन के लिए लिया गया । पहले समूह में 'स्कू रु नेर्ना' में 34 रोगियों का अध्ययन किया गया, जिनमें 8 रोगियों को अच्छा, 5 रोगियों को उत्तम एवं 4 रोगियों को कम लाभ मिला तथा 7 रोगियों को कोई लाभ नहीं मिला, एक की मृत्यु हो गई एवं 9 रोगी चिकित्सा छोड़कर चले गए । दूसरे समूह में 'कोचे नथंग' द्वारा 16 रोगियों पर अध्ययन किया गया, जिनमें 4 रोगियों को अच्छा, 3 रोगियों को उत्तम एवं 6 रोगियों को कम लाभ मिला तथा 2 रोगियों को कोई लाभ नहीं मिला एवं एक रोगी चिकित्सा छोड़कर चला गया । प्रतिवेदनाविध के दौरान बहिरंग रोगी विभाग के माध्यम से 1376 रोगियों की चिकित्सा की गई जिनमें 582 पुरुष एवं 796 महिलाएं थीं ।

इस वर्ष इस एकक द्वारा क्षेत्र की आमची एवं वानस्पतिक औषधियों की पहचान के लिए लाहौल एवं स्पीती घाटी का औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण किया गया । इन दोनों क्षेत्रों को प्रचुर वानस्पतिक संपदा के रुप में जाना जाता है । वर्तमान सर्वेक्षण क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीआरडीओ), लेह के सहयोग से क्षेत्र की उत्तम वैज्ञानिक खोज के संदर्भ में की गई । इस सर्वेक्षण के दौरान 359 पादप नमूनों का संग्रह किया गया ।

आयुर्वेदिक पाण्डुलिपि 'तिब्बतन बुद्धीष्ट कैनन स्तान ग्यूर' पर वांड्मय अनुसंधान कार्यक्रम को जारी रखा गया ।

13. प्रकाशन एवं सहभागिता

I. प्रकाशन-

क्र. सं	लेखक का नाम	लेखक का शीर्षक	पत्रिका का नाम	प्रकाशन तिथि
अ. निदान चिकित्सात्मक एवं मौलिक अनुसंधान				
1	एस.बी.आचार्य	ए प्रीलीमिनरी स्टडी आन द एफेक्ट आफ आजादिरैक्टा इंडिका आन ब्रांकायल स्मूथ मसल्स एण्ड मास्ट सेल्स ।	ज.नेचुरल रेमेडीज, अंक 3: 78-82	2003
2	ए. सी. कर एवं अन्य	क्रियाकला के आधार पर श्लीपद के निरोधात्मक एवं निषेधात्मक पहलू ।	सचित्र आयुर्वेद,, अंक-10 : 771-775	4/ 2002
3	आर.बी.नायर एवं अन्य	एफेक्ट आफ स्नेहपान आन द लिपिड प्रोफाइल आफ पेसेंट विथ रुमैटिक ए न्यूरालाजिकल डिसार्डर्स ।	जे.आर.ए.एस. अंक : XXIII (सं.1-2) 1-9	2002
4	जी.सी.नन्दा एवं अन्य	ए.एस.ओ.पर कुछ आयुर्वेदिक औषधिययों का प्रभाव - एक सामान्य अध्ययन ।	जेआरएएस,अंक:XXIII (सं. 1-2);29-35	2002
5	बी.के.आर.पिल्लई एवं अन्य	किटिभ में निम्बतिक्त का प्रभाव एक दोहरा निदान चिकित्सात्मक अध्ययन ।	जेआरएएस,अंक:XXIII, (सं.1-2);42-50	2002
6	बी.के.आर.पिल्लई एवं अन्य	द एफेक्ट आफ सोरालिया-5 आन फालीकुलर इक्जेमा ।	जेआरएएस अंक : XXIII, (सं.1-2);56-63	2002
7	बी.सी.एस.राव	क्लिनीकील स्टडीज़ आन द रसायन एफेक्ट आफ आमलकी आन आपरेंटली हेल्दी पर्ससन्स।	सचित्र आयुर्वेद	11/ 2002
8	बी.सी.एस.राव एवं (श्रीमती)एच.बी.शर्मा	सोधन थैरैपी वर्सेस इंसुलीन रेजीस्टेंस इन ओबेस टाइप-2 डायबीटज़् (स्थूल प्रमेह)	जे.ने.इ.मे.एसोसिएशन,अंक-45 (सं.3) : 7-11	2003
9	एम.एम.राव एवं अन्य	थेराप्युटिक इवैलुएशन आफ नान आपरेटिव मेजर्स इन मैनेजमेंट आफ परिकर्तिका वाइज-ए-वाइज फीस्सर इन एनो	जे.आर.एस. अंक :XXIII, (सं.1-2) : 71-80	2002

10	आर.जी.रेड्डी	मैनेजमेंट आफ फिस्चुला इन एनो विथ क्षार-सूत्र (मेडिकेटेड थ्रेड)	हेरल्ड आफ हैल्थ	जुलाई, 2002
11	आर.जी.रेड्डी	मैनेजमेंट आफ फिस्चुला इन-एनो (भगंदर) विथ क्षार सूत्र।	सुरभि	उपरोक्त
12	वी.के.शाही	वमन चिकित्सा विमर्श	आयुर्वेदिक महासम्मेलन पत्रिका	दिसम्बर, 2002
13	एल.के.शर्मा एवं अन्य	क्लिनिकल इवैलुएशन आफ पंचकोला प्रक्षेप पत्रपिंड स्वेद इन द ट्रीटमेंट आफ आमवात।	जेआरएएस, अंक XXIII, (सं.1-2): 20-28	2002
14	ओ.पी.सिह एवं अन्य	किटिभ का प्रबंधन बनाम सोरयासिस	आयुर्मेड लाइन	जनवरी-जून, 2002
15	ओ.पी.सिह एवं अन्य	ए कम्प्रिहेंसिव स्टडी आन आम एण्ड मेडिएटेड डिजीज।	सचित्र आयुर्वेद	जुलाई, 2002
16	ओ.पी.सिह एवं अन्य	रेसनैलिटी आफ यूजींग दारुहरिद्रा इन द मैनेजमेंट आफ किटिभ।	सचित्र आयुर्वेद	सेतम्बर, 2002
17	ओ.पी.सिंह एवं अन्य	लीवर एवं त्वक रोग। एक वैज्ञानिक अध्ययन ।	ऐसिएंट साइंस आफ लाइफ	अक्तूबर, 2002
18	ओ.पी.सिंह एवं अन्य	ए कम्परेटिव क्लिनिकल इवैलुएशन आफ कर्वीर इन द मैनेजमेंट आफ पाम ।	जेआरएएस,अंक-XXIII सं.(1-2): 51-55	2002
19	एन.श्रीकान्त एवं के.के.चोपड़ा	प्रीवैंटिव आफथामालाजी - ऐन आयुर्वेदिक एक्सपोजीशन ।	सचित्र आयुर्वेद, अंक-6: 450-453	दिसम्बर, 2002
20	एन.श्रीकान्त	माईग्रेन का प्रबंधन - एक निदान चिकित्सात्मक अध्ययन	आयुर्मड लाइन अंक-6: 195-201	मार्च, 2003
21	एन.श्रीकांत एवं अन्य	श्लीपद के कुछ पहलुओं पर एक समालोचनात्मक विवरण - एक अन्तः सैद्धांतिक पहुंच।	सचित्र आयुर्वेद अंक-10: 761-766	अप्रैल, 2002
22	जी.के.स्वामी	माइग्रेन में नस्य की महत्ता।	आयर्मेड लाईन: 172-175	2002

23	जी.के.स्वामी एवं अन्य	मनोविकार में शिरोधारा की महत्ता	आयुर्वेद विकास: 33-41	मार्च-अप्रैल, 2002
ब.	**स्वास्थ्यरक्षा अनुसंधान एवं प्रजातीय औषधियां**			
24	पी. बंसल	रीलीजीयस प्रैक्टिसेज इन नार्थ इंडिया टू क्योर डीजीज़।	बुलेटिन इंडि.इस्टि. हिस्ट्री. मेडि., अंक-31 (सं.-1):25-30,2001	2002
25	टी.मीक्षापति एवं अन्य	जनपद बंगलूर कर्नाटक से क्षेत्रीय दावे, भाग-II	सचित्र आयुर्वेद, अंक-55 (सं.-4): 217-219	2002
26	एस.के.मैती	वाते मालिस	सुस्वस्थ(पाक्षिक जर्नल)	जनवरी, 2003
27	आर.बी.सक्सेना	सोयाबीन ।	सचित्र,आयुर्वेद, वर्ष 55 (सं-9): 685-694	मार्च,2003
28	आर.बी.सक्सेना	देशी अजवायन ।	सचित्र आयुर्वेद 55, (सं.-4): 198-207	2002
29	वी.पी.तिवारी एवं जी.सी.जोशी	वैदिक कालीन संदिग्ध द्रव्य-सोम ।	सचित्र आयुर्वेद: 38-45	जुलाई, 2002
स.	**द्रव्यगुण, औषध - वानस्पतिक सर्वेक्षण एवं कृषि**			
30	के.वी. विल्लोरे	सेव इनडेंजर्ड गुग्गुलू इट्स प्रोपगेशन -ए नीड - आफ फ्युचर ।	आर्गोबायस, अंक-1(सं.-8) :45-46	2003
31	जी.बी.बोर्कर एवं अन्य	ब्राह्मी की पत्तियों का परीक्षण	बीएमईबीआर, अंक XXI (सं. 1-2): 46-52, 2000	2003
32	जी.बी.बोर्कर	इन वीट्रो प्रोपेगेशन आफ प्रसारणी थ्रू स्टेम एण्डलीफ कल्चर ।	बीएमईबीआर, अंक XXI (सं. 1-2): 80-87, 2000	2003
33	एस.जी.बोर्से एवं अन्य	एफेक्ट आफ ग्रोथ रेगुलेटर्स आन ग्रोथ आफ मेटाबालिज्म आफ सोलनम खासियानम क्लार्क ।	बीएमईबीआर, अंक XXI (स.1-2):53-59, 2000	2003

34	पी.गुरमीत एवं अन्य	कर्गिल की सापी वैली का औ-ाध वानस्पतिक सर्वेक्षणस	बीएमईबीआर, अंक XXI (स. 1-2)1-10, 2000	2003
35	जी.वी.आर.जोसेफ एवं अन्य	एग्ले मर्मेलस (लिन्न) की पत्तियों पर भेाज अभिज्ञानीय अध्ययन ।	बीएमईबीआर, अंक XXI (स.1-2):27-36	2003
36	एम.एस. रावत एवं आर.शकर	आयुर्वेद में प्रयुक्त औाध पादप अरुणाचल प्रदेश में संग्रह एवं कृाकिरण ।	अरुणाचल फारेस्टन्यूज, अंक-19 (सं.1-2): 157-163,2001	2002
37	आर.शंकर एवं एम.एस. रावत	अरुणाचल प्रदेश में आयुर्वेद उपयोगी वनौाधियों का कृ-ाकिरण	उपावन स्मरिका, 15-19	2002
38	आर.शंकर एवं एम.एस.रावत	अरुणाचल प्रदेश के आयुर्वेदीय पादपः जीव विविधता एवं क्रमवार उपयोग	अरुणाचल फारेस्ट न्यूज, अंक 19 (सं. 1-2):148-159, 2001	2002
39	के.सी.तिवारी एवं अन्य	ब्रीडींग स्टेटस आफ मस्क डीयर एण्ड नियो-नेटल केयर।	वाइल्ड लाइफ इंफार्मेशन बुलेटिन, अंक 8(1): 16-17	जनवरी, 2002
द.	**भेषजीय, भेषजअभिज्ञानीय एवं रासायनिक अनुसंधान**			
40	जी.वी.आर.जोसेफ	बलिस्पेर्मम रजियाना मूल पर भेाजअभिविज्ञानीय अध्ययन ।	ऐसिएंट साइंस आफ लाइफ, 22(2): 1-8	2002
41	जेड. मैरी एवं अन्य	चांगेरी पर भेाजअभिज्ञानीय अध्ययन ।	ऐसिएंट साइंस आफ लाइफ, अंक-21 (सं. 2): 120-127	2002
42	ए.सरस्वती	पादप औाधियों की पहचान में पादप-रासायनिक भूमिका ।	सचित्र आयुर्वद, अंक-55 (सं.4): 296	2002
43	आर.बी.सक्सेना	अभ्रक भस्म की भेाज अभिज्ञानीय पहलुओं और अनुपान के बीच सम्बंध ।	सचित्र आयुर्वेद, अंक 54 (सं.11): 852-855	2002
ई.	**भेषजगुणविज्ञानीय**			
44	एम.एम.आलम एवं अन्य	कुछ आयुर्वेदीय योगों का हाइपोग्लाइसीमिक प्रभाव ।	आर्यवैद्यन, अंक XVI 45-50	2002

45	वी.एम.मोनीस्वामी एवं अन्य	डाईयूरेटिक एक्टीवीटी आफ गासीपेटिन आइसोलेटेड फ्राम हिबिस्कस सद्दरीफा इन रैट्स।	हमदर्द मेडिसिंस अंक-45 (सं. 2): 68	2002
46	एस.सदिशकुमार एवं अन्य	इन वाइट्रो स्क्रीनींग आफ गार्डेनिन-ए एण्ड इट्स डेरीवेटिव्स ।	इंडियन ड्रग्स, अंक 40 (सं. 1): 30-33	2002
फ.	वाङ्मय एवं विविध			
47	एस.ए.हुसेन	ट्रांसलेशन आफ द 12 चैप्टर आफ ' यूनूल अंबा फी तबकातिल अतिब्बा।'	बु.इंडि.इंस्टि.हिस्ट्री मेडि., अंक-31, (सं.1): 93-101, 2001	2002
48	ए.कुमार एवं अन्य	आयुर्वेदिक हेरिटेज आफ जे एण्ड के.-ए रीव्यू आफ रनबीर चिकित्सा सुधासार ।	बु.इंडि.इंस्टि.हिस्ट्री.मेडि, अंक-31, (सं.2):133-138, 2001	2002
49	एम.एम.पाधी एवं अन्य	उड़ीसा की पुरातन पाण्डुलिपियों से उद्धृत कुछ सरल चिकित्सा तथा यौगिकऔाधियां (ज्वर चिकित्सा-1)	सचित्र आयुर्वेद	अक्तूबर, 2002
50	एम.एम.पाधी एवं अन्य	उड़ीसा की पुरातन पाण्डुलिपियों से उद्धृत कुछ सरल चिकित्सा तथा यौगिक औाधियां (ज्वर चिकित्सा-2)	सचित्र आयुर्वेद	दिसम्बर, 2002
51	एम.एम.पाधी एवं अन्य	उड़ीसा की पुरातन पाण्डुलिपियों से उद्धृत कुछ सरल चिकित्सा तथा यौगिक औाधियां (ज्वर चिकित्सा -3)	सचित्र आयुर्वेद	2003
52	एम.एम.पाधी एवं अन्य	उड़ीसा की पुरातन पाण्डुलिपियों से उद्धृत कुछ सरल चिकित्सा तथा यौगिक औाधियां (ज्वर चिकित्सा -4)	सचित्र आयुर्वेद, अंक-55 (सं.9): 661-664	मार्च, 2003
53	पी.वी.वी.प्रसाद	हुमैन एनाटामी इन अथर्ववेद	बु.इंडि.इंस्टि.हिस्ट्री मेडी. अंक 31, (सं. 1): 1-10, 2001	2002
54	पी.वी.वी.प्रसाद एवं पी.के.जे.पी.भुमक्त	अपामार्गः औाध ऐतिहासिक समीक्षा ।	बु.इंडि. इंस्टि.हिस्ट्री मेडि. अंक-31 (सं.1): 11-24, 2001	2002

55	पी.वी.वी.प्रसाद	ज्वर - ए मेडिका-हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव	बु.इंडि इंस्टि. हिस्ट्री मेडि. अंक-31(सं.2): 103-125, 2001	2002
56	ओ.पी.सिंह एवं अन्य	आयुर्वेदिक संहितानुसार विभिन्न त्वचा रोगों में प्रयुक्त सामान्य जड़ी-बूटी ।	एंसिएंट साइंस आफ लाइफ	जनवरी, 2003
57	पी.के.जे.बी. सुभक्त	इंदु एण्ड भट्टनाराहरीः द कमेंटेटर आफ आयुर्वेदिक क्लिलासिकल ट्रेटीजेज़ ।	बु. इंडि. इस्टि. हिस्ट्री मेडि. अंक-31(सं.2): 155-159, 2001	2002
ग.	**पुस्तकें/मोनोग्राफ्स**			
58	टी. बीक्षापति	विविध व्याधुलू आयुर्वेद चिकित्सा (तेलगू)	गौतम पब्लीशर्स विजयवाड़ा	2002
59	के.वी.बिल्लोरे	राजस्थान (भारत) में प्रजाति वानस्पतिक अध्ययन अद्यावधि।	रिसेंट प्रोग्रेस इन मेडिसीनल प्लांट्स (एथनो- मेडि. एण्ड फार्माकाग्नासी) अंक-1 : 189-199	2002
60	बी. घर एवं अन्य	भारतीय भोज उद्योग की कुछ विवादास्पद आयुर्वेदिक औधियों का एक मूल्यांकन।	रिसंट प्रोग्रेस इन मेडिसीनल प्लांट्स (एथनो मेडि. एण्ड फार्माकाग्नासी) अंक-1 : 297-314	2002
61	जी.सी. जोशी एवं अन्य	डाइवर्सीटी एण्ड स्टेटस आफ आयुर्वेदिक मेडिसीनल प्लांट आफ उत्तरांचल ।	हिमालय मेडिसीनल प्लांट्स: पोटेंसियल एण्ड प्रास्पेक्ट्स । एडीटर्स एस.एस. सामान्त एवं अन्य 125-150, जी.बी. पन्त इंस्टि आफ हिम. इंवा. एण्ड डेव, कोसी कटार्मल, अल्मोड़ा, पब्लीर्शस, ज्ञानोदय प्रकाशन, नैनीताल ।	दिसम्बर, 2001
62	आर.शंकर एवं अन्य	अरुणचल प्रदेश के पापुम पारे जनपद के प्रजाति औधीय पादप ।	एथनो-मेडिसिनल प्लांट्स आफ ट्राइब्स आफ अरुणाचल प्रदेश, एडीटर्स. टी. मिबंग एण्ड एस.के. चौधरी; 30-34	2003

63	पी.सी. शर्मा एवं अन्य	आयुर्वेद में प्रयुक्त औधीय पादपों पर डाटा बेस। अंक-iv	केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिद, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित ।	2003
64	पी.सी.शर्मा एवं अन्य	आयुर्वेद में प्रयुक्त औधीय पादपों पर डाटाबेस, अंक- v	- उपर्युक्त -	2003

(II) सहभागिता -

क्र. सं.	लेखक का नाम	लेख का शीर्षक	संगोष्ठी/सम्मेलन/कार्यशाला का नाम एवं सहभागिता की तिथि
अ -	**निदान चिकित्सात्मक एवं मौलिक अनुसंधान**		
1.	एन.के.बंसल एवं अन्य	उच्चरक्त चाप के प्रबंधन में तगरादि एवं उशीरादि चूर्ण का रोगहर प्रभाव ।	गुज.आयु.वि., जामनगगुजरात) में आयुर्वेद पर आयोजित चौथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 5-7/1/2003
2.	के.भारती एवं अन्य	व्यानबल वैषम्य के प्रबंधन में फार्मूला ए वी वी जे फार्मूला का तुलनात्मक अध्ययन ।	विश्व आयुर्वेद कांगेस, 2002. कोच्ची (केरल) में आयोजन, 1-4/11/2002
3.	ए. देवी एवं अन्य	यूज आफ उदूम्बरः स्टेम बार्क ऐज क्वाथ डच इन द मैनेजमेंट आफ ल्यूकोरिया एण्ड वैजीनाईटिस ।	एन.बी.आर.आई, लखनऊ में पादप औषध के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सोसायटी द्वारा आयोजित पादप औषध के वानस्पतिक विकास पर द्वितीय विश्व कांग्रेस, 20-22/2/2003
4.	जी.वी.द्विवेदी एवं अन्य	वासादि क्वाथ एवं एकल जड़ी-बूटियों के साथ अस्थमा का प्रबंधनः एक आयुर्वेदिक योग।	- उपर्युक्त -
5.	एन.जया एवं पी.माधवी कुट्टी ।	सैलिएंट आब्जर्वेशन आफ वमन कर्म ऐज ए थेराप्युटिक कम्पोनेंट आफ पंचकर्म आन सम कफरू प्रीडामीनेंट डीजीज़ेज ।	विश्व आयुर्वेद कांगेस 2002. कोच्ची में आयोजित, 1-4/11/2002

6.	ए.सी. कर एवं अन्य	एड्स के प्रबंधन में रसायन चिकित्सा की भूमिका ।	राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, नई दिल्ली द्वारा रसायन पर आयोजित आयुर्वेदिक संगोष्ठी
7.	ए.सी.कर एवं अन्य	आमवात पर शुण्ठी गुग्गुलु एवं गोदन्ती भस्म के प्रभाव पर एक अध्ययन ।	जी ए यू जामनगर द्वारा आयुवेद पर आयोजित चौथी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी। 5-7/1/2003
8.	जे.कौर एवं अन्य	मेनोपासुएल सीड्रोम के प्रबंधन में एक आयुर्वेदिक योग - एक आधुनिक वैज्ञानिक पहुंच ।	- उपर्युकत -
9.	के.कुसुमकुमारी	मेदोरोग के प्रबंधन में एक औषध फार्मूला के प्रभाव का निदानचिकित्सात्मक मूल्यांकन।	- उपर्युक्त -
10.	पी.माधवीकुट्टी एवं एन.जया	गृध्रसी पर दशमूल बलातैल का सोधन एवं समन प्रभाव ।	विश्व आयुर्वेद कांगेस, 2003 कोच्ची (केरल) 1-4/11/ 2002
11.	टी.वी.मेनन एवं एस.नेसामनी	पक्षवध के प्रबंधन में पादप खनिज औषधियों/पंचकर्म चिकित्सा के प्रभाव का तुलनात्मक निदान चिकित्सात्मक मूल्यांकन।	आयुर्वेद मेडिसीनलएजुकेशन, केरल द्वारा त्रिवेंद्रम में आयुर्वेद में अनुसंधान विधियों पर आयोजित कार्यशाला, मार्च, 2003
12.	पी.के.एस.नायर एवं अन्य	चेंजेज इन लिपिड प्रोफाइल आप रुमोटायड अर्थरायटीस पेसंट्स अंडरगोइंग पंचकर्म थेरेपी।	आयुर्वेद कांग्रेस, कोच्ची 1-4/11/2002
13.	आर.वी.नायर एवं अन्य	इफेक्ट आफ स्नेहपान आन द लिपिड प्रोफाइल आफ पेसेंट्स विथ रुमेटिक एण्ड न्यूरलाजिकल डिसार्डस।	- उपर्युक्त -
14.	जी.सी.नन्दा एवं अन्य	अर्श के प्रबंधन में पादप-खनिज योग का निदान चिकित्सात्मक मूल्यांकन।	केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, कोलकाता द्वारा आयोजित एनोरेक्टल डीजीज पर राष्ट्रीय सम्मेलन एवं क्षारसत्र पर

			सम्मेलन एवं क्षारसूत्र पर कार्यशाला 28-30/7/2002
15.	वी.ए. प्रभाकरन	बाह्य अर्श की चिकित्सा में जलुकावचरण एवं भैषज्य कर्म का एक तुलनात्मक अध्ययन।	- उपर्युक्त -
16.	आर.डी.प्रसाद एवं अन्य	तमक श्वास के प्रबंधन में शिरीस त्वक क्वाथ के प्रभाव पर एक निदान चिकित्सात्मक परीक्षण ।	गुज.आयु.वि., जामनगर में आयुर्वेद पर आयोजित चौथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन।
17.	एम.एम.राव	भगंदर के प्रबंधन में संशोधित क्षार सूत्र का तुलनात्मक निदान चिकित्सात्मक मूल्यांकन।	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, कोलकाता द्वारा आयोजित 'एनो रेक्टल डीजीज़' पर राष्ट्रीय सम्मेलन एवं क्षार सूत्र कार्यशाला, 28-30/7/2002
18.	आर.जी.रेड्डी	मैनेजिंग ऐनल फिस्सर विथ हिंगुल घृतम।	-उपर्युक्त -
19.	आर.जी.रेड्डी	मैनेजमेंट आफ फिस्चुला इन एनोविथ क्षारसूत्र	- उपर्युक्त -
20.	डी. सहरावत एवं अन्य	मैनेजमेंट आफ यूरोलिथियासिस ए क्लिनिकल ट्रायल आपरू एन आयुर्वेदिक फार्मुलेशन।	गुज.आयु.वि., जामनगर में आयुर्वेद पर आयोजित चौथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 5-7/1/2003
21.	ओ.आर.शर्मा	एन आउटब्रेक आफ वायरल हेपटाइटिस इन डिस्ट्रीक मण्डी (हि.प्र.) मैनेजमेंट थ्रू आयुर्वेदिक फार्मुलेशन - ए क्लिनिकल स्टडी।	विश्व आयुर्वेदिक कांग्रेस, कोच्ची 1-4/11/2002
22.	ओ.पी.सिंह एवं अन्य	श्लीपद रोग के प्रबंधन में कंचनार गुग्गुलु एवं गोखुरादि गुग्गुलु का निदान चिकित्सात्मक मूल्यांकन।	बेंगलूर में आयोजित आयुर्वेद विश्व समिति। 6-9/2/2003
23.	आर.सिंह एवं वी.पी.त्रिवेदी	गुडूचील चित्रक योग की मधुमेहरोधी किया का प्राथमिक	एन.बी.आर.आई. लखनऊ में पादप औषधि के लिए अंतर्राष्ट्रीयसोसायटी

		निदान चिकित्सात्मक मूल्यांकन।	द्वारा पादप औषध के वानस्पतिक विकास पर आयोजित द्वितीय विश्व कांग्रेस, 20-22/2/2003
24.	आर.सिंह एवं अन्य	इवैलुएशन आफ एंटी इस्केनिक पोटेंसियल आफ पुष्कर गुग्गुलु इन द ट्रीटमेंट आफ इस्केमिक हर्ट डीजीज।	- उपर्युकत-
25.	यू. एस. सिंह एवं अन्य	मनोद्वेग के प्रबंधन एवं निरोध में वचा एवं ब्राह्मी का संयुक्त मूल्यांकन।	- उपर्युक्त -
26.	आर.सिंह एवं अन्य	तमक श्वास में शिरीष का निदान चिकित्सात्मक निर्धारण।	ज.राष्ट्रीय शरीर अनुसंधान संस्थान, संडीला, हरदोई (उ.प्र.) द्वारा तमक श्वास पर आयोजित सम्मेलन में 11वां स्थापना दिवस समारोह, 7-8/9/2002
27.	एन.श्रीकांत एवं अन्य	आयुर्वेदिक मैनेजमेंट आफ यूरालिथ्यासिस एन एपेजल आफ समक्लिनिकल स्टडीज।	राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, नई दिल्ली द्वारा किडनी मूत्राशय रोग पर आयोजित आयुर्वेदिक वैज्ञानिक सम्मेलन, 26-27/3/2003
28.	एन.श्रीकांत एवं के.डी.शर्म	आयुर्वेदिक एवं पैरा सर्जरी के माध्यम से अंधापन का निरोध।	राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान, नई दिल्ली द्वारा नये मिलेनियम में सबके लिए स्वास्थ्य पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन। 24-26/2/2003
29.	एन.श्रीकांत एवं अन्य	इफेक्ट आफ दारुहरिद्रा अश्च्योतन इन एलर्जिक कंजक्टिवल इंफ्लैमेशन ए क्लिनिकल स्टडी।	जामनगर में आयुर्वेद पर आयोजित चौथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 5-7/1/2003
30.	एन.श्रीकांत एवं के.डी.शर्मा	क्लिनिकल स्टडीज आन द रोल आफ आयुर्वेदिक मेडिकल एण्ड परूरा सर्जिकल एप्रोचेज इन द मैनेजमेंट आफ क्रानिक सिम्पल ग्लाकोमा	कोच्ची में आयेजित विश्व आयुर्वेद कांग्रेस 2002, 1-4/11/2002

31.	जी. के. स्वामी एवं आर.के. स्वामी	तमकश्वास के प्रबंधन में पेल्लिएटिव एवं शोधन चिकित्सा एक तुलनात्मक अध्ययन ।	- यथोपरि -
32	जी. वेंकटेश्वरलु, तथा अन्य	एक आयुर्वेदक मिश्रित औषधि कंटकारी एवं क्राकत्ती का अर्श, निदानचिकित्सा में तुलनात्मक मूल्यांकन	सी.आर.आई.ए.कोलकोता द्वारा आयोजित फिशुला रोग पर राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा क्षार सूत्र पर कार्यशाला, 28-30/7/2002

ख. स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान एवं प्रजातीय औषधियां

33.	के. सी. औदिच्य	वरिष्ठ जनों का स्वास्थ्य संरक्षण एवं चिकित्सा	वरिष्ठ नागरिक परिषद, जयपुर 13/7/2002
34.	भारती एवं अन्य	क्षार-सूत्र प्रक्रिया एवं उसकी प्रबंधन समस्या में साधारण परिज्ञान	गु.आयु.वि., जामनगर में आयुर्वेद पर चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी गुजरात, 5-7/ 1/2003
35.	वी. सी. दीप एवं अन्य	औषध कला का प्रायोगिक क्रियान्वयन ।	विश्व आयुर्वेद सम्मेलन, बंगलूर, 6-9/2/2003
36.	वी. सी. दीप एवं अन्य	शुष्क प्रदेश (जंगल देश), स्वास्थ्य के लिए सर्वोत्तम है, एक समालोचनात्मक अध्ययन ।	विश्व आयुर्वेद सम्मेलन,2002, कोच्चि (केरल), 1-4/11/2002
37.	पी. गुरमीत	तिब्बत में आयुर्वेद	- यथोपरि -
38.	पी. गुरमीत	आमची औषधि एवं आयुर्वेद (हिंदी)	हिमालयन कला एवं संस्कृति पर संगोष्ठी, लेह, 2002
39.	पी. गुरमीत एवं ओ. पी. चौरसिया	हिमालयीय क्षेत्र में औषध पादप एवं हिमालय के पारम्परिक आमची औषध में उनकी प्रयोज्यता	मानव कल्याण हेतु औषध एवं सुगंधित पादपों पर तृतीय विश्व आयुर्वेद महासम्मेलन, छंगमई (थाइलैंड), 3-7/2/2003
40.	ए. डी. जाधव	औषधि वानस्पति एवं रोग निवारण	मराठी परिषद द्वारा आयोजित ओषधि सुगंधि लेकवड प्रक्रिया एवं बाजरपेथ पर संगोष्ठी, मुम्बई, 18-19/5/2002

41.	ए. डी. जाधव	औषधि वानस्पति उत्पादन, पूर्वाभ्यास एवं साध्य स्थिति	महाराष्ट्र सरकार द्वारा आयोजित औषध पादप-कृषि कार्यक्रम आवश्यक वस्तु-स्थिति एवं समस्याएं पर संगोष्ठी
42.	डी. के. मिश्र एवं अन्य	कैंसर - एक आयुर्वेदिक दृष्टिकोण	औषध एवं एरोमेटिक पादपों के व्यापार एवं अनुसंधान में अवसर तथा क्षेत्र पर राष्ट्रीय पारस्परिक क्रिया मिलन (निम) 2002, सी.आई.एम.ए.पी., लखनऊ 17-18/5/2002
43.	ए. नारायण	स्वास्थ्य रक्षा - एक आयुर्वेदिक दृष्टिकोण	ग्रामीण स्वास्थ्य रक्षा के विकेन्द्रीकृत प्रबंधन, राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान, हैदराबाद 22-23/7/2002
44.	एस. टी. फुनसो एवं पी. गुरमीत	हिमालयन क्षेत्र में लोक स्वास्थ्य के लिए आमची (तिब्बतन) औषध की भूमिका	21वीं सदी में भा.चि.प. की भूमिका पर अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन, 1-2/02/2003
45.	पी.वी.वी.प्रसाद	आंध्र प्रदेश के कुछ लोक प्रचलित आदिवासी दावे, औषधि एवं औषध पादप	आंध्रप्रदेश में लोक प्रचलित परिज्ञान पर एन.आई.एस.एस.टी. संगोष्ठी, हैदराबाद 14-15/9/2002
46	पी.वी.वी.प्रसाद	वर्तमान परिदृश्य में आयुर्वेदिक आहार एवं उनका महत्व	विश्व आयुर्वेद महासम्मेलन, 2002, कोच्चि (केरल), 1-4/11/2002
47.	एम.एस.रावत एवं आर. शंकर	अरुणाचल प्रदेश के लोक प्रचलित औषध पादप	अरुणाचल प्रदेश में औषध एवं सुगंधित पादपों की कृषि तथा प्रबंधन हेतु धारणीय विकास पर कार्यशाला सह-प्रशिक्षण, 18-19/11/2002
48.	डी. पी. साहू	गर्भवती महिलाओं एवं माताओं के स्वास्थ्य रक्षा के लिए औषधि निर्माण के साथ सफलतापूर्वक ग्रामीण अभ्यास	ग्रामीण स्वास्थ्य पर राष्ट्रीय सम्मेलन, लोनी (महाराष्ट्र) 12/2002
49.	डी. पी. साहु	एटिओ-पैथोजेनेसिस ऑफ फिसटुला-इन-एनो	भगन्दर रोग पर राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, कोलकाता द्वारा

			संस्थान, कोलकाता द्वारा आयोजित कार्यशाला, 28-30/7/2002
50.	के. शंकर एवं अन्य	मधुमेह प्रबंधन में प्रयुक्त भारतीय लोक प्रचलित पादप	अंतर्राष्ट्रीय हर्बल औषधि संगठन द्वारा आयोजित हर्बल औषधि के जीव प्रौद्योगिकी विकास पर तृतीय विश्व महासम्मेलन, एनबीआरआई, लखनऊ, 20-22/2/2003
51.	एल. के. शर्मा एवं अन्य	क्षार-सूत्र निर्माण की समस्याएं एवं समाधान	सी.आर.आई.ए., कोलकाता द्वारा आयोजित भगन्दर रोग पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं क्षार-सूत्र पर कार्यशाला, 28-30/7/2003
52	एल. के. शर्मा एवं अन्य	भगन्दर रोग में प्रयुक्त शारनिरमन की सामान्य धारणाएं	- यथोपरि -

ग. द्रव्यगुण, औषध-वानस्पतिक सर्वेक्षण एवं कृषि

53.	ए.वी.मट्ट एवं अन्य	केरल के औषध निर्माण में महत्वपूर्ण औषध पादप	विश्व आयुर्वेद महासम्मेलन, 2002, कोचि (केरल), 1-4/11/2002
54.	ओ.पी.चौरसिया एवं पी. गुरमीत	भारतीय शीत मरुभूमि के औषधीय एवं एरोमेटिक पादपों के संरक्षण, कृषि एवं धारणीय उपादेयता।	मानवीय कल्याण के लिए औषधीय एवं एरोमेटिक पादपों पर तृतीय विश्वमहासम्मेलन, चंगमई (थाईलैंड) 3-7/2/2003
55.	पी.गुरमीत एवं ओ.पी.चौरसिया	हिमालयीय क्षेत्र की औषधीय पादपों का संरक्षण एवं उनकी स्थिति	हिमालय औषधीय पादपों की संरक्षण पर क्षेत्रीय कार्यशाला, नेपाल, 2002
56.	पी.वी.वी. प्रसाद	द्रव्यगुण, आयुर्वेदीय भेषजगुणविज्ञानीय एवं आयुर्वेद ग्लोवलाईजेशन में इसकी भूमिका	विश्व आयुर्वेद महासम्मेलन, 2002, कोचि (केरल), 1-4/11/2002

57.	वी. के. शाही	आज के परिप्रेक्ष्य में पादप - औषधि द्रव्यों की उपलब्धि एवं प्रमाणिकता	राष्ट्रीय पारस्परिक क्रिया मिलन (निम-2002) सी.आई.एम.ए.पी., लखनऊ, 17-18/5/2002
58.	आर. शंकर एवं एम.एस.रावत	आयुर्वेदीय औषधीय पादप	अरुणाचल प्रदेश में धारणीय विकास हेतु औषधि एवं एरोमेटिक पादपों की कृषि तथा प्रबन्धन पर कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण, 18-19/11/ 2002
59.	के.सी.तिवारी एवं अन्य	रानीखेत के गैस-निवासी क्षेत्र में केसर की कृषि	गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय में आयुर्वेद पर चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, जामनगर (गुजरात) 5-7/1/2003
60.	के.सी.तिवारी एवं अन्य	बीहेवियर एण्ड हेबिटेट ऑफ ए वल्नरेबल् एस.पी.एस। मस्क डीअर एनिमल ऑफ रेड डाटा बुक ।	- यथोपरि -

घ. औषधि विज्ञान, भेषजअभिज्ञानीय एवं रसायनिक अनुसंधान

61.	एम.एम.आलम एवं अन्य	च्यवनप्राश का मानकीकरण एवं ट्यूमररोधी गतिविधियों पर अध्ययन ।	विश्व आयुवेद महासम्मेलन 2002 कोच्चि (केरल), 1-4/11/2002
62.	पी. बृन्धा	कच्ची औषधि व्यापार में सूक्ष्म आकृतिविज्ञानीय मानकीकरण।	सिद्ध औषधि पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, तंजोर, 9-10/12/2002
63.	पी. बृन्धा एवं अन्य	'मिरेबिलिस जलपा' पर भेषजअभिज्ञानीय अध्ययन ।	जीव-विज्ञान प्रगामी, प्रभाव एवं सम्बद्धता पर राष्ट्रीय परिसंवाद बरेली (उ.प्र.), 27-29/10/2002

64.	पी. बृन्धा एवं अन्य	'केन्ना ओरियन्टालिस' का शरीर शास्त्र भेषजअभिज्ञानीय ।	- यथोपरि -
65.	पी. बृन्धा एवं अन्य	स्ट्रीबलअस एसपर लाउर पर भेषजअभिज्ञानीय अध्ययन ।	- यथोपरि -
66.	पी. बृन्धा एवं ए. सरस्वती	टोड्डालिया एशियाटिका का भेषजअभिज्ञानीय मानकीकरण	जीव-क्रिया पॉलिफेनॅलस पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, कोविलवेन्नी (त.नाडु) 10-11/3/2003
67.	पी. बृन्धा एवं अन्य	औषधि पादप की क्रिया में टेनिन की भूमिका एवं स्थति	- यथोपरि -
68.	एम.एन.दास एवं अन्य	अनन्नास के फल का भेषजअभिज्ञानीय अध्ययन ।	भारतीय विज्ञान महासम्मेलन का 90वां सत्र, जन., 2003
69.	एम. एन. दास	क्षार सूत्र निर्माण में अपरिष्कृत औषधि प्रयोग का भेषजअभिज्ञानीय मूल्यांकन	सी.आर.आई.ए., कोलकाता द्वारा आयोजित भगन्दर रोग पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं क्षार सूत्र पर कार्यशाला, 28-30/7/2002
70.	एम. एन. दास	भेषजअभिज्ञान के विशेष संदर्भ में भारतीय औषधि पादपों का संरक्षण एवं उपादेयता पर प्राचीन एवं अर्वाचीन दृष्टिकोण	आर.के.मिशन, नरेन्द्रपुर, पश्चिम बंगाल द्वारा आयोजित भा.चि.प.एवं हो. पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, 25-27/12/2002
71.	एम. एन. दास एवं अन्य	भारतीय चिकित्सा पद्धति में प्रयुक्त कुछ अपजीकृत अपरिष्कृत औषधियों का भेषजअभिज्ञानीय अध्ययन	गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय में आयुर्वेद पर चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, जामनगर (गुजरात) 5-7/1/2002
72.	(श्रीमती) वी. गायत्री देवी एवं अन्य	टेफरोसिया परपरिआ (मूल) का औषधि पादप पहचान करना	द्वादश स्वदेशी विज्ञान महासम्मेलन, सी.टी.सी.आर.आई., तिरुवनन्तपुरम, 5-7-/11/2002
73.	पी.वी. गिरिजा एवं अन्य	बाल चतुर्भद्रिक चूर्ण का मानकीकरण	विश्व आयुर्वद महासम्मेलन 2002 कोचि(केरल),1-4/11/2002
74.	जे हाजरा	जी.एम.पी.विशेष संदर्भ के साथ आयुर्वेदिक औषधियों का मानकीकरण ।	आर.के. मिशन रुद्रपुर, पश्चिम बंगाल द्वारा आयोजित भा.चि.प.एवं हो. पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, 25-

			27/12/2002
75.	(श्रीमती) एम. जे. इंदिरा अममल एवं अन्य	वैश्वनर चूर्ण (अष्टांग हृदय विधि द्वारा निर्मित का भौतिक-रासायनिक अध्ययन	द्वादश स्वदेशी विज्ञान महासम्मेलन, सी.टी.सी.आर.आई. तिरुवनन्तपुरम, 5-7/11/2002
76.	जी.वी.आर. जोसेफ	आयुर्वेद में वर्णित एक कार्यदक्ष हेपटो संरक्षण औषधि - फिल्लेनथस एसपेसिज का मानकीकरण	इथनो-मेडिसिन चिकित्सा पर विश्व सम्मेलन, मुनिख विश्वविद्यालय, जर्मनी, 11-13/10/2002.
77.	जी.वी.आर.जोसेफ	माईक्रोस्कोपिक अध्ययन माध्यम से हर्बल औषधि का मानकीकरण एवं गुणवत्ता नियंत्रण	विश्व आयुर्वेद महासम्मेलन 2002 कोचि (केरल), 1-4/11/2002
78.	जी.वी.आर.जोसेफ एवं पी.के.एन.नम्बूदरी	भा.चि.पद्धति में प्रयुक्त हर्बल औषधि का मानकीकरण	भा.चि.पद्धति एवं हो.पर अंतराष्ट्रीय महासम्मेलन, चेन्नई, 1-2/2/2003
79.	जी.वी.आर.जोसेफ एवं पी.के.एन.नम्बूदरी	माईक्रोस्कोपिक अध्ययन के माध्यम से हर्बल औषधि का मानकीकरण एवं गुणवत्ता नियंत्रण, भाग-II	गुजरात आयुर्वेद विश्विविद्यालय, जामनगर में आयुर्वेद पर चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, जामनगर, 5-7/1/2003
80.	(श्रीमती) एस. मंडल	भगन्दर रोग के लिए प्रयुक्त मेडिकेटेड फ्लेक्स थ्रेड का रसायनिक विश्लेषण	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान कोलकता द्वारा आयोजित भगंदर रोग पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं क्षार सूत्र पर कार्यशाला, 28-30/7/2002
81.	एस. मंडल एवं अन्य	ए न्यू डाइमेरिक कोमेरिन फ्लोरेमिन फ्रोम इन्डियन रुटासी बोन्निन घोसेनिया अलविफलोरा, आर.एण्ड एम.	90 भारतीय विज्ञान महासम्मेलन जन. 2003.
82.	जी. ए. नायर	अमिनो एसिड एण्ड सुगर्स ऑफ द फ्लॉवरस ऑफ वूडफोरडिआ फ्रूटिकोसा कुर्ज	विश्व आयुर्वेद महासम्मेलन 2002 कोचि (केरल), 1-4/11/2002.
83.	एम.एम.पाधी एवं	मानक विकास हेतु मापक एवं	पिछड़े क्षेत्र के विकास हेतु पादप

	एन.एस.तिवारी	पादपों से स्वीकार्य औषधि	संस्थान कीउपादेयता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा उड़ीसा वानस्पतिक समाज का 27वीं वार्षिक महासम्मेलन, केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर । 28-29/12/2002
84.	बी.सी.एस. प्रसाद	रकथोदुस्ती विकास हेतु प्रयोगशालीय मापक ।	राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान जयपुर द्वारा आयोजित दोष, धातु एवं मल के साथ रस,प्रण रक्त एवं मनोवहा श्रोत के लिए निदान चिकित्सामापक के मानकीकरण पर राष्ट्रीय कार्यशाला, जयपुर, 24-25/3/2003
85.	ए. सरस्वती	औषधि पादपों से पादप रसायन पर पेटेन्ट	औषधि पादपों एवं प्रजातियों पर पेटेंट डब्लू.टी.पी./आई.पी. का सम्पूर्ण सत्र , चेन्नई. 7/4/2002
86.	ए. सरस्वती	बाइओ-एक्टिव पॉलीफेनॅल्स एण्ड देयर सिगनिफिकेन्स इन द आईडेनटिफिकेशन ऑफ अगबेल्लिफरस फ्रूट ।	नेशनल सेमिनार ऑन बाइओएक्टिव पॉली फेनल्स हेल्ड एट कोविलवेन्नि, थिरुवरुस (त.ना) 10-11/3/2003
87.	ए. सरस्वती एवं वी. सत्यनाथन	रॉल ऑफ बाइओ-एक्टिव पॉलीफेनॅल्स इन द आइडेनटिफेकशन ऑफ मार्किट सेम्पल्स ऑफ अगिल	-यथोपरि-
88.	ए. सरस्वती	पारम्परिक औषधि पर मानकीकरण अध्ययन ।	मानव कल्याण हेतु औषध एंव एरोमेटिक पादपों पर तृतीय विश्व महासम्मेलन, चिंगमई, थईलेंड, 3-7/2/2002.
89.	ए. सरस्वती	अगरु की बाजार नमूनों पर अध्ययन ।	21वीं सदी में भारतीय चिकित्सा पद्धति की भूमिका पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, चेन्नई, 1-2/2/2003.
90.	आर. बी. सक्सेना	मूच्छित तिल तैल का	- यथोपरि -

		मानकीकरण ।	
91.	आर. बी. सक्सेना	आयुर्वेदीय औषधि निर्माण एवं भेषजअभिज्ञानीय निमाण में गुणवत्ता सुधार ।	विश्व आयुर्वेद महासम्मेलन 2002, कोचि (केरल), 1-4/11/2002.
92.	के. शंकर एवं अन्य	कुमारी का रसायनिक महत्व के साथ तथ भेषजअभिज्ञानीय मापक मानकीकरण ।	भारतीय भेषज अभिज्ञानीय समाज द्वारा के.बी. भेषज शिक्षणएवं अनुसंधान संस्थान, गांधीनगर में वर्तमान में हर्बल औषधि में झुकाव विषय पर राष्ट्रीय-नीति गुज., 22-24/11/2002
93.	के. शंकर एवं अन्य	रसायनिक एवं भेषजअभिज्ञान के साथ करावलि (मोमोरडिका चरनतिआ लिन्न) का मानकीकरण ।	-यथोपरि-
94.	के. शंकर एवं अन्य	चूर्ण (चित्रकादि, तालिशादि, त्रिकटु, त्रिफला एवं निम्बादि) की रासायनिक विभिन्नता एवं गुणवत्तानियंत्रण का मानकीकरण	-यथोपरि-
95.	के. शंकर एवं अन्य	वचा का मानकीकरण - एक भेषजिक एवं पादप रासायनिक परीक्षण	हर्बल औषधि के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगठन द्वारा हर्बल औषधि के जीव प्रौद्योगिकी विकास पर आयोजित द्वितीय विश्व सम्मेलन एन.बी.आर.आई. लखनऊ, 20-22/2/2003
96.	के. शंकर एवं अन्य	कुक्कुटांडत्वक में भारी धातु की मिलावट के शुद्धिकरण में कुमारी की भूमिका ।	-यथोपरि-
97.	जी. एन. शर्मा एवं अन्य	कुछ पादप औषधि संदूषण में शरीर क्रिया विज्ञानीय एवं गैर शरीर क्रिया विज्ञानीय पर	-यथोपरि-

		अध्ययन ।	
98.	एस. पी. सिंह एवं अन्य	टरमेरिक - आयुर्वेदीय औधियों का मानकीकरण	शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, तिरुवनंथपुरुम में औषधि पादपों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, 12-13/8/2002
99.	एस. पी. सिंह एवं अन्य	भारत में अम्ल वर्षा का निर्धारण	-यथोपरि-
100	एस. पी. सिंह एवं अन्य	आयुर्वेदीय औषधि - अजॉवेन का मानकीकरण ।	विश्व आयुर्वेद महासम्मेलन, 2002. कोचि (केरल), 1-4/11/2002
101	एस. पी. सिंह एवं अन्य	सायपेरस रौंटनड्स (मुस्ता) एवं इसके प्रतिस्थापन कायल्लिगा ट्रिसेप्स का तुलनात्मक अध्ययन ।	सी.टी.सी.आर.आई. तिरुवनन्यपुरम में द्वादश स्वदेशी विज्ञान महासम्मेलन 5-7/11/2002
102	एस. पी. सिंह एवं अन्य	कठिन भार अवधारण द्वारा अम्ल जमाव एवं इसका नियंत्रण	-यथोपरि-
103	एस. पी. सिंह एवं अन्य	औषधि पादपों पर प्रदूषण का प्रभाव	गुजराज आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर में आयुर्वेद पर चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, 5-7/1/2003
104	एस. पी. सिंह एवं अन्य	कायल्लिग ट्रिसेप्स का पादप-रसायन एवं आकृतिविज्ञानीय जांच-पड़ताल	-यथोपरि-

ई. भेषजगुणविज्ञान

105	एन.आर.पिल्लै एवं अन्य	प्रीलिमिनरी इनवेस्टेगेशन ऑन द हेपटो-प्रोटेकटिव एफ्फेक्ट ऑफ मुरया कोएनिगई इन कार्बन टेट्राक्लोराइड इन्डूस्ड लिवर डेमेज इन अलविनो रेट्स	-यथोपरि-
106	ए.सरस्वती एवं एस.मागेश्वरी	पॉलिफिनोल्स एज एण्टी माइक्रोबिएल एजेन्ट्स ।	जीवाणु-गतिविधि पॉलिफिनोल्स पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, कोविलवेन्नि

			(त.ना.). 10-11/3/2003
107	ए.सरस्वती एवं अन्य	एन्टी माइक्रोबायल एक्टीविटी ऑफ लेनसिअम् एनैमालियनम् बेडड ।	नेशनल सायमपोजियम ऑन बॉय साइंस एडवान्सेज इमपेक्ट एण्ड रीलीवेन्स हेल्ड एट बरेली (उ.प्र.). 27-29/10/2002
108	आर. सिंह एवं अन्य	इवेल्यूएशन ऑफ एन्टी डीप्रेस्सेन्ट पॉटेनटिअल ऑफ अश्वगंधा (विदअनिया सोमनिफेरा) एण्ड कपिकच्चु मकुना प्रूरिएन्स) हर्बल ड्रग्स कॉमबिनेशन ।	हर्बल औषधि के लिए अंतराष्ट्रीय संगठन द्वारा हर्बल औषधि का जीव प्रौद्यिगिकी विकास पर आयोजित द्वितीय विश्वमहासम्मेलन एन.बी.आर.आई. लखनऊ 20-22/2/2003
109	एस. वेणुगोपाल राव	आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति में भेषजगुणविज्ञानीय प्रयोज्यता ।	जे.एन.मेडिकल कॉलेज, मुम्बई द्वारा भेषजगुण विज्ञानीय निदान चिकित्सा पर आयोजित भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसधान परिषद प्रशिक्षण कोर्स । 22-28/11/2002.

फ. वाङ्.मय एवं विविध

110	पी. गुरमीत	तिब्बत पांडुलिपि में प्राचीन भारतीय चिकित्सा वाङ्.मय के अध्ययन हेतु क्षेत्र ।	गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय जामनगर में आयुर्वेद पर चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, 5-7/1/2003
111	जी. सी. नन्दा	संस्कृत वाङ्.मय में आयुर्वेद की पुनः प्राप्य हस्त-पत्र पाण्डुलिपि तत्क्षण आवश्यकता।	पुरी मे अखिल भारतीय औरियन्तल 41 वीं सम्मेलन का सत्र, उड़ीसा, 12/2002
112	ए. नारायण	प्राचीन भारतीय शलय के संदर्भ में औषधियों का इतिहास।	आन्ध्र प्रदेश में आयुर्वेदीय शल्यको का वार्षिक मिलन संघ तथा शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय में सी.एम.इ. कार्यक्रम, हैदराबाद

			16/12/2002
113	पी.वी.वी. प्रसाद	आयुर्वेदीय औषधियों का इतिहास तथा आई.आई.एच.एम. की गतिविधि एवं प्राप्तियों पर परिचय एवं वहां पर उपलब्ध सुविधाएं ।	हैदराबाद में स्वास्थ्य पर्यटन पर्व पर संगोष्ठी, 7-9/2/2003
114	आर.बी.सक्सेना	केसर के प्राचीन इतिहास पर अनुसंधान की भूमिका	गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर में आयुर्वेद पर चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, गुजरात 5-7/1/2002.
115	ओ.पी.सिंह एवं अन्य	आयुर्वेदीय साहित्य में वर्णित श्लीपद के उपचार हेतु प्रयुक्त पादप ।	पिछड़े क्षेत्रों के विकास हेतु पादप संसाधनों की उपादेयता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, आर.आर.एल., भुवनेश्वर, 28-29/12/2002

ब. सिद्ध

1. संस्थान/एककों के लिए प्रयुक्त संकेताक्षर

क्र.सं.	स्थापनावर्ष	संस्थान/एकक	संकेताक्षर
1.	1970	केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, चेन्नई	के.अनु.सं.चे.
2.	1979	क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पांडिचेरी	क्षे.अनु.सं.पां.
3.	1980	निदानचिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, पलायमकोट्टई	नि.चि.अनु.ए.पला.
4	1986	निदानचिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, त्रिवेन्द्रम	नि.चि.अनु.ए.त्रि.
5.	1979	औषध अनुसंधान योजना (एम.डी.), चेन्नई	औ.अनु.यो.चे.
6.	1979	औषध मानकीकरण अनुसंधान योजना, चेन्नई	औ.मान.अनु.यो.चे.
7.	1982	औषध मानकीकरण अनुसंधान एकक, बंगलूर	औ.मान.अनु.यो.,बं.
8.	1981	औषध मानकीकरण अनुसंधान एकक, त्रिवेंद्रम	औ.मान.अनु.यो.त्रि.
9.	1971	औषध पादप सर्वेक्षण एकक, पलायमकोट्टई	औ.पा.स.ए.पला.
10.	1979	वाङ.मय अनुसंधान एवं प्रलेख विभाग, चेन्नई	वा.अनु.प्र.वि.चे.

2.निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम

परिषद के अधीन सिद्ध औषधि के निदान चिकित्सा अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत सिद्ध चिकित्सा पद्धति के संस्थानों/एककों के माध्यम से चयनित नैदानिक दशाओं पर अनुसंधान कार्य किया जाता है । प्रतिवेदित वर्ष में कलजंग पादाई (सॉरियासिस), पुत्रुनोई (कैंसर), मंजलकामलाई (संसर्गीय यकृत शोथ), संथु वातशूलई (संधिवात), वेनकट्टम (ल्यूकोडर्मा) आदि की नैदानिक दशाओं पर अध्ययन किए गए ।

कलंजग पादाई (किटिभ)

कलंजग पादाई पर केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान संस्थान, चेन्नई द्वारा अध्ययन किया गया । परीक्षण के लिए चयनित सभी रोगियों पर कोड भेषज 777 तैल की 10 मि.ली. की मात्रा को दूध के साथ अनुपान के रुप में दिन में दो बार दिया गया । रोगियों को यह भी सलाह दी गई कि शरीर के प्रभावित भागों पर इस तैल का लेंप करें । चिकित्सानुसार परिणाम अधोलिखित हैं

कलंजग पादाई (किटिभ) पर "777" तैल का निदान चिकित्सात्मक परीक्षण परिणाम -

क्र.सं.	औषध	कुल रोगी	परीक्षण परिणाम			
			पूर्ण लाभ	विशेष लाभ	मध्यम लाभ	मध्यगत
	777 तैल	172	34	102	-	36

वाथशुलाई

इस रोग की दशा का वर्णन सिद्ध की पुस्तकों में 'वात रोगांगल' के अंतर्गत वर्णित है। क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पांडिचेरी द्वारा वाथशुलाई के रोगियों पर आयवीरा चेन्दूरम एवं पेचांगन चारु के प्रभाव का मूल्यांकन किया गया । परीक्षित औषधि आयवीरा चेन्दूरम 120 मि.ग्रा. की मात्रा को दो भागों में बांट कर शहद के साथ प्रयोग किया गया । प्रतिवेदन अवधि में 56 रोगी अध्ययन के लिए, लिए गए । 56 रोगियों में से 33 रोगियों को पूर्ण लाभ मिला, 14 रोगियों को विशेष लाभ एवं 9 रोगियों पर चिकित्सा से कोई प्रभाव नहीं हुआ ।

करप्पन

इस रोग की दशाओं पर निदान चिकित्सत्मक अनुसंधान एकक, त्रिवेंद्रम द्वारा अध्ययन किया गया । पारंगीपट्टई चूर्ण, संगुपर्पम्, इदीवल्लथी मेजुगु, पुंगा तैलम्, औषधियों का रोगियों के समूहों पर क्रमशः 500 मि.ग्रा., 130 मि.ग्रा. एवं 130 मि.ग्रा. की औषध मात्रा का दिन में दो बार प्रयोग करते हुए अध्ययन किया गया ।चिकित्सा परिणाम निम्नलिखित हैं-

करप्पन पर सिद्ध औषधि योगों का निदानचिकित्सात्मक परीक्षण परिणामः

क्र.सं.	औषधि	कुल रोगी	परीक्षण परिणाम			
			पूर्ण लाभ	विशेष लाभ	मध्यम लाभ	मध्यगत
1	पारंगीपट्टई चूर्णम् संगु पर्पम	110	62	24		17
2	इदीवल्लथी, मेजुगु पुंगाथैलम् (वाह्य प्रयोगार्थ)	105	46	22	14	23
	योग	215	108	46	21	40

यनक्कल नोई (श्लीपद)

निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, त्रिवेन्द्रम द्वारा लिंग चेंदूरम, थैलम्पू निथिराई/निलवेम्बु कुडीनीर एवं कक्कट्टनवेर कर्कम तथा इसके योग का यनक्कलनोई रोग की नैदानिक दशाओं पर इसके प्रभाव का अध्ययन किया गया । ये अध्ययन तीन समूहों में रोगाणु संवाहक एवं रोगाभिव्यक्त, दोनों प्रकार के यनक्कलनोई रोगियों पर बहिरंग रोगी विभाग के स्तर पर किए गए । प्रतिवेदन वर्ष में 11 रोगियों पर अध्ययन किया गया । निम्नलिखित तालिका में चिकित्सा परिणाम दिए गए हैं -

यनक्कलनोई पर सिद्ध औषधि योगों का निदान चिकित्सात्मक परीक्षण परिणाम

क्र.सं.	औषधि	कुल रोगी	परीक्षण परिणाम			
			पूर्ण लाभ	विशेष लाभ	मध्यम लाभ	मध्यगत
1	लिंग चेंदूरम	6	3	1	1	1
2	कक्कट्टन वेर कर्कम	3	1	1	-	1
	योग	9	4	2	1	2

संथुवात शूलाई

सिद्ध साहित्य में वर्णित 80 वात रोगों में से संथुवात शूलाई एक है । केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, चेन्नई के अंतर्गत संथुवात शूलाई के प्रबंधन के अन्तर्गत अरुमुगा चेंदूरम, अय कानथ चेंदूरम विष मुत्ती थैलम, महावीरा मेजुगु, के प्रभाव का मूल्यांकन किया गया । इस औषधि की 130 मि.ग्रा. की मात्रा का परीक्षण के लिए चुने गये सभी 43 रोगियों को दिन में दो बार अनुपान ताड़ के गुड के साथ कराया गया । सिद्ध निर्मित संथुवात शूलाई पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण परिणाम अधोलिखित है-

संथुवात शूलाई पर सिद्ध औषधियों का निदान चिकित्सात्मक परिणाम

क्र.सं.	औषधि	कुल रोगी	परीक्षण परिणाम			
			पूर्ण लाभ	विशेष लाभ	मध्यम लाभ	मध्यगत
1	महावीर मेजुगु	43	1	13	19	10
2	अरुमुगा चेंदूरम अय कानथ चेंदूरम विष मुत्ती थैलम	30	21	3	2	4
		73	22	16	21	14

मंजल कामलाई (संसर्गीय यकृत शोथ)

इस रोग की नैदानिक दशाओं पर केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, चेन्नई द्वारा अध्ययन किया गया। परीक्षण औषधि अरुनेल्लि कर्कम की एक ग्राम की मात्रा को दिन में दो बार पानी के साथ दिया गया। प्रतिवेदन अविध में एक रोगी को परीक्षण के लिए चुना गया ।

वलिगुन्मम (आमाशयिकव्रण)

सिद्ध ग्रंथों में 'गुन्म रोगांगलें के 8 प्रकारों में यह वलिगुन्मम एक है । केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, चेन्नई द्वारा सुयामाम्नी चेन्दूरम के प्रभाव का नैदानिक परीक्षण किया गया । इसके परीक्षण के लिए जठर क्षेत्र में तीव्र वेदना (उदरशूल), आमाशय में बैचेनी, उत्कलेशन, वमन एवं रक्त वमन, आदि लक्षणों युक्त रोगियों को चुना गया । निदान को आधुनिक मानदण्ड यथा एफ टी एम, बेरियम मील एवं एक्सरे द्वारा संपुष्टि की गई । अध्ययन औषधि की 100 मि.ग्रा. की मात्रा को जिलेटिन कैपशूल में भरकर दिन में दो बार 5 दिनों तक दिया गया । छठे और सातवें दिन ओमम एवं जिंजेली तैल स्नान की सलाह दी गई । इस प्रक्रिया को दो बार दोहराया गया । प्रतिवेदन अवधिमें तीन रोगियों पर अध्ययन किया गया । तीन रोगियों में से एक को विशेष लाभ हुआ तथा दो रोगियों को चिकित्सा परामर्श देकर मुक्त कर दिया गया ।

इलुम्बु मुरिवु चिकिचाई (अस्थि जमाना)

निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (सिद्ध), त्रिवेन्द्रम द्वारा इस रोग की दशा पर अध्ययन किया गया । ओडिवू मुरिवू थिरुमेनी तैलम, सिवाप्पु कुक्कईलप्पु तैलम औषधियों के प्रभाव निर्धारण हेतु अध्ययन किया गया । 25 रोगियों पर अध्ययन किया गया । जिसमें से 23 रोगियों को पूर्ण लाभ प्राप्त हुआ तथ 2 रोगियों को विशेष लाभ प्राप्त हुआ ।

पुत्रुनोई (कैंसर)

सिद्ध चिकित्सा ग्रंथों में इस रोग का वर्णन ' वेरानंनोयगल ' शीर्षक के अंतर्गत किया गया है । इस पर केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, चेन्नई द्वारा अध्ययन किया गया । अध्ययन में संस्थान द्वारा निर्मित सांकेतिक भेषज आर जी एक्स, वी के-2 एवं एस के एक्स का प्रयोग किया गया । इस औषध की 250 मि.ग्रा. की मात्रा को जिलेटिन कैप्शूल में भरकर, दिन में दो बार दूध के साथ् दिया गया । व्रणों और अर्बुदों की निथियकल्याणी कर्कम एवं पंचनाई के साथ थुरुसु द्वारा मरहम पट्टी की गई । यह उल्लेखनीय है कि सभी रोगियों के व्रणों और अर्बुदों के आकार में कमी हुई, स्राव में भी कमी पाई गई तथा उनमें होने वाले दर्द में भी कमी पाई गई । प्रतिवेदन अविध में 2 रोगियों पर अध्ययन किया गया ।

इरयप्पूनोई (तमक श्वास)

इरयप्पूनोई सिद्ध चिकित्सा ग्रंथों में वर्णित श्वास रोगों में से एक है । निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक त्रिवेंद्रम द्वारा अमौनि ऊड्डूपनपम औषधि की प्रभाव क्षमता का अध्ययन किया गया । प्रतिवेदन अवधि में 96 रोगियों को परीक्षण के लिए चुना गया। 96 रोगियों में से, 12 रोगियों को पूर्ण लाभ, 52 रोगियों को विशेष लाभ, 20 को मध्यम लाभ, 18 रोगी मध्यगत हो गए तथा शेष रोगियों पर चिकित्सा से कोई प्रभाव नहीं हुआ ।

बाह्य रोगियों/अंतरंग रोगियों की उपस्थिति की एक झलक

क्र.सं.	संस्थान/एकक	बाह्य रोगी विभाग में रोगियों की संख्या			
		नए	पुराने	कुल	अंतरंग रोगी विभाग में उपस्थित रोगी
1	के.अनु.सं., चेन्नई	10827	28111	38938	222
2	क्षे.अनु.सं., पांडिचेरी	5110	15437	20547	56
3.	नि.चि.अनु.ए.पलायमकोट्टई	97	1016	1113	-
4	नि.चि.अनु.ए., त्रिवेंद्रम	1387	3724	5111	-
	योग	17421	48288	65709	278

3. चिकित्सा-वानस्पतिक अनुसंधान

औषधियों के उपार्जन हेतु एवं अनुसंधान के उद्देश्य के लिए तथा औषधियों की आपूर्ति हेतु वन क्षेत्रों के सर्वेक्षण का महत्वपूर्ण स्थान है । यह कार्य सरकारी सिद्ध मेडिकल महाविद्यालय, पलायमकोट्टई के अंतर्गत औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण एकक द्वारा किया जा रहा है । इस एकक की वर्ष 1971 में स्थापना हुई थी ।

यह एकक तमिलनाडू के वन क्षेत्रों से विशेषकर सिद्ध चिकित्सा पद्धति में प्रयोग की जानेवाली औषधियों की उपलब्धता की खोज में सक्रिय रहा है । इसके अध्ययन के अंतर्गत औषधियों की पहचान, परिमाण एवं वास्तविक औषधियों की गुणवत्ता तथा उनके विकल्प आदि को सम्मिलित किया गया है ।

प्रतिवेदन अवधि में इस सर्वेक्षण एकक द्वारा कोयम्बटूर, तिरुनेल्वेली, एवं कन्याकुमारी वन क्षेत्रों में 21 सर्वेक्षण दौरे किए गए तथा अन्य एककों को आपूर्ति के लिए औषधियों का संग्रह भी किया गया । इन सर्वेक्षणों (फील्ड बुक सं. 7578 से 8079) से जो औषधियां संग्रह की गई उनमें 124 परिवारों के 477 वंशजों एवं 517 प्रजातियों का संग्रहण एवं प्रतिवेदन किया गया । दौरे की अवधि में उद्भिदालय हेतु 295 नमूनों का संग्रह किया गया ।

सभी 295 हरबेरियम नमूनों की पहचान की गई तथा उन्हें पादपालय में सुरक्षित रख दिया गया । हरबेरियम में नमूनों को जोड़ा गया । सिद्ध पद्धति में प्रयोग की जानेवाली कुछ महत्वपूर्ण एवं विस्तृत पादपों का नाम निम्नलिखित हैः-

तमिल नाम	वानस्पतिक नाम
सिवानर वेम्पु	इनडिगोफेरा असपलथोड्स
कनजनकोरई	ओसिमम् अमेरिकनम् (एल) सैंट
वेलवेल्म	अकसिआ ल्यूकोफोलिआ (रॉक्स) विल्ड
नॉक्कत्तमरम्	एरीबोत्रय जपोनिका
टून मरम्	टून सिलिआटा एम. रोइम
कल आल	फाइकस तसजकेला बर्म फ.
करनईविलंगी	त्रिचीलीआ कोन्नारॉइड्स
पेरुमपुनईकलई	मुकुना अत्रोपुरपुरिया
कुदासपालाई	हॉलरहिना अन्टीडायसेनड्रिका
वेल्लई पूनईकली	मुकुना डीरींगीआना
मुलिलवम्	सीब पेनतन्द्रा (एल.) जर्न
मंजल करिसलै	वेडिलिआ केलेनडूलेसीलेस

कत्तमनक्कु	जत्रोफ पॉडेगिरिक
एडटोडा	जसटिसिआ एधाटोडा (ल.)
सिरुपुलादि	डिसमॉडियम त्रिफलोरम्
सिरया नन्गई	पॉलीगलाचायनेनसिस (ल.)
पलैकोडी	लेपटाडीनीआरिटिकुलेटा (वेट अर्न)
पेरिया कट्टूकोडी	तिलिकोरा एक्यूमिनटा (लैम) हूक फ.
अर्थथिविद्दन	क्राइप्टोकोरिन स्पारलिस फिच
नै कडूगू	कॉरचुरसएक्सटुनस ल.
मुलकोडि	स्क्लेपॉयरम् पेनटनड्रम
सुरपिननि	कलोफल्लम् पॉलिनथम् वाल
कीजहनेल्लि	फिलेनेथस् एमार्स चुम थोर्न
अमबलई पुलिमंगै	स्पॉनडिस पिन्नटा (ल.फ.) कुर्ज
पम्पुकजहा	रॉउवोल्फिया टेटाफॉल्ल (ल.)
कजहारची	कैसलपिनिआ जयाबो मजा
नेम्ब्रावली	सिससू डिसकलर ब्लूम
इन्दरपुस्पम्	थुनबरजिआ फ्रेगरेन्स रॉक्स
कांचि	ग्लाइकोसमिस मौरिटिआना (लेम)
चित्रकई	सोलनम् अंगुवि लेम
कुरनथोत्ति	सिडा होम्बीफोलिआ एल.
समुत्रपपच्चै	अरजेरिआ नर्वोसा (बर्म.फ.) बोज.
नीर अर्ली	एसकलापिअस कुरस्सविआ (ल.)
विप्पुरुडि	क्लोरोफायटम् निम्मोनी
मंजल कुरंजी	जिमनस्टोच्चयमकैनसिन्स
कसिथुम्बै	इमपेसेन्ट चायनेनसिस लेम
निलमंजल	ग्लोबा ओफिगमोस्सा वाइट
पूथकराप्पन	सेफ्फलरा वेनुलॅसा हार्क्स
अझूकन्नी	ड्रोसेरा इन्डिका एल.
कोडक्कपुली	गारसिनीआ गमीगुट्टा (एल.) रॉब्स
मलैकोन्नै	एक्रोकारप्स फ्रैक्सीनिफोलिअस
वेल्लैगिल	डॉयसोक्सलम् मालाबेरिकम् बेड
नीरपर्णी	सेरटॉपटेरिस थालिकट्रोइइस एल.
सिसु	डलबेरजिआ सिसू रॉक्सब्
मइलै	विटेक्स अलटिसिमा एल.
कसिथुमै	इमपेटिएन्स क्लेनी

अरिलै थमारई	निर्विलि केरिनटा (राक्सब) चित्र.
पेरामबन्दलि	लिटसिआ डेकेनसिस
कनावझै	एक्लीसीआ सिकन्डीफलोरा
अमलै	अल्लोफिल्लस् सेराटस् (रोक्सब) कुर्ज
निरेकिरम्बु	जुसिया सफ्रूटिकोसा लिन्न
चिप्पुनिरन्जी	इन्डिगोफेरा इन्डेकेफल्ला जेक.
करुवेइ	प्रोसिपीस ग्लेनड्लसा टोरिय
कट्टयेलम्	अलपिनिआ मेलेकनसिस
पेरुमपिचि	गारडेनिया अंगस्टा (एल.)
पोन मुस्सुटइ	सिसंमप्लोस पेरेरा ल.
पच्रोतीपट्टी	सिमल्पेकोस कोचिनचिनेसिस
मलैतचम्	फोनिक्स लॉरेइरि कुन्तन
कुरुनथोति	सिडा ग्लूटिनोसा कॉमर्स एक्स. केव.
कोडमपुझि	गारसिनिया गम्मिगुट्टा (ल.) रॉब्स
नगामुट्टी	टिलियाकोरा एक्यूमिनाटा (लेम.) हूक. फ.
सिरुथुम्बै	ल्यूकस बिफ्लोरा आर.बी आर.
उन्नु	ग्रीविया टिलेफोलिया वहल
पुलिचकोडि	सेरोपेजिया जनसिआ रॉक्सब
कुरिन्च	वट्टक्का वॉलूबिलिस (ल.फ.) स्टेप
परालोट्टि	पोथोस स्केन्ड्स ल.
यूरोम वरुचम	विसचोफलीया जवानिका ब्लूम
पचैकिलुवई	कॉमिफोरा कॉडेट
पिराम्बु	केलमस् रोटंग ल.
पालकोडि	परसोनिया अलबोफ्लेवससिन
केम्पू	मोमेक्लॉन एडल रॉक्सब
पू-मरुथु	लेजरस्ट्रोमिया रेंजिने रॉक्सब
वेल्लरगु	एनिकोसटेम्मा एकिजल्लरे
पेरिया नांगई	पोलीगला जवाना डी.सी
नान्गै	पोलीगला बलूबोथ्रिक्स डन्न
सिसविरुसु	एरिटिया ओवेलिफोलिये वाइट
महिलम्	मिमुसॉप्स एलेंगी ल.
कझ	करिस्सा केरनड्स ल.
करई	केनथियम् परविफलोरम् लेम
विरलि	डोडोनेसिया विस्कोस ल.

नन्नरि	**हेमिडेसमस** इनडिक्स (ल.) र.बर.
थलेसुरुलि	एरिस्टोलोचिया टगाला चर्व
कट्टु मिलगु	पाईपर ट्रिओसियम रॉक्सब
मलईटनक्कु	हायमेनोडिकटॉन ओरिक्सेन्स
करुकोवइ	सोलेना एमपल्केसीकेलिस्
पुझुक्कनपट्टी	अनिसोचिलस् करनोसस् वाल
कट्टुलवंगम्	लिटसि विटिना (नीज) हूक फ.
पर्णी	बॉलबिटिस एपेनडिकुलेटा
सुथि	वरनोनिया अरबोरिया बच, हेम
कट्टुकडलई	ओसबेकिया एजपेरा ब्लूम
वेल्लाकिल	एगलेआ सिम्पलीसीफोलिआ (बेइड) हार्म
एरुमेनक्कु	पौलोजिया बेन्नेटियाना वाइट
पौलनिया	पौलोनिया टोमेंनटस् स्टीड
कुरुविचिपून्डू	हिबिसकस ओवेलेफोलिअस् (फोर्स्क) वहल
कनवझै	कॉमेलिना कॉलेसटिस विल्ड
कट्टुकोडि	मिकेनिया स्केनडेस
मेलैपेरुथि	हिबिकस प्लानटेफोलिअस् स्वीट
मुडक्करतन	कारडिअस्पर्मम् केनेससीन वाल
उनचै	अलबिजिया अमरा बोइव
वेल्लैमुल्लि	बरलेरिया लोंगीफ्लोरा ल.फ.
चेमपुलिचन	एरायथ्रोक्सलम् मोनेजिनम् रॉक्सब
मेलिमन्निकम्	इपोनोया क्यूमोकिलिट् ल.
पुल्लाडि	देशमोडियम् रिपेनडम् (वहल) डी सी.
कट्टुमुल्लै	जासमिनम् कलिफिलियम् वाल
मसिपतघिरी	आर्टमिसिसया निलगिरिका (क्लार्क) पाम
कल्याणमुरंगै	एरायथ्रिन सबमबर्नस,
चेमपुल	केयर्स बीक्कानसनीज,
इविरालिक्कोवै	डिप्लोसाईक्लोस पालमाटस (ल.) जेफरी
कट्टुरुत्तर्तचम्	एलाकार्पस मुनरोनि
पच्चै	प्लेकत्रांथिस विघटि बेथ
इरुप्पावल	गनफालियम् लटेव अलबम् एल.
कडपला	भेस इंडिका
वायलेट	वायलो पिलोसा ब्लूम
ओरिलै	उरालिया पिक्टा डेस्व

वेविडंगम्	एमबेलिया रिब्स बर्मन्ग
सोरिनन्गु	गिरडिनिया लेसचनौलटिना डिसने
अरिसिकोरै	सिलेरिया लिथोसपर्म (एल.) एस.डब्लू.
थोगै पर्णी	ऑडेन्टसोरिया चायर्नेसिस
अर्तलरी	होमोनिया रिपेरिया आवर
सुरापिन्नै	कलोफिलियम् एपिटलम् विल्ड
चुकला	एगलेया एलोंग नोयडिया
थाट्टपटन	पैसीफ्लौरा एडीलिस सिम्स
कट्टुमुरगै	मोरिंग कॉनकेनसिस
वरतिलै पेट्टई	कलिकरपा टोमेनटोसा मेरर (एल.)
थुवरै	कजनस् कजन (एल.) मिल., एस.पी.
मलै वल्लर्णी	हायड्रोकॉटायल जवानिका थुन्ब
नरामबलि	नागली वल्लिचिसना
लवंगा	लवंग सरमेनटोसा
कुरावनकनमूली	थोटेसा सिल्लकोसा
कटुलुप्पै	पालाक्यूम एल्लिपटिकम
मसिपटचि	अर्टमेसिया परविफ्लोरा

पादपों के 19 विभिन्न भागों का संग्रह किया गया तथा संग्रहालय में जोडा गया। कुल 834 औषध नमूनों का एकक द्वारा रख-रखाव किया गया ।

श्रीविल्लिपुट्टुर वन रेंज के पलियार आदिवासियों से 105 लोकप्रचलित चिकित्सा दावों को सुना गया तथा संग्रह किया गया । इन औषधों का निम्नलिखित रोग में उपचार किया जाता है, यथा- काया-कल्प, बवासीर एवं भगन्दर घाव स्राव, अपच्य, मंजल कामलै, दंत दर्द, बुखार, मूत्र संक्रमण, सूजन एवं संधिवात आदि ।

यात्रा की अवधि में औषध पादपों के विभिन्न भागों का 47 कि.ग्रा. संग्रह किया गया तथा एकक द्वारा परिरक्षित रखा गया । इस संग्रह में से 18.920 कि.ग्रा. शुष्क पादप भाग को परिषद के विभिन्न एककों को भेजा गया ।

4. भेषजअभिज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम

भेषजअभिज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम, चेन्नई स्थित केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान संस्थान के अंतर्गत भेषजअभिज्ञानीय अनुसंधान अनुभाग के माध्यम से संचालित किया जाता है । प्रतिवेदन वर्ष के दौरान निम्नलिखित औषधियों पर भेषजअभिज्ञानीय अध्ययन किया गया:-

1. पुलिनारलै - साफोसटेम्मा सेटोसम (रॉक्सब) अलस्टोन
2. पीतारोहिणी - कॉपटिस टीता वाल
3. कोक्कुमनडरै - बौहिनिया टोमेनटोसा एल.
4. तान्ड्री - तरमिनालिया बेलेरिका रॉक्सब
5. कट्टुजीरगम - सेंनत्राथेरम् ऐंथेलनिंटीकम (विल्ड) कुंज
6. नुना - मोरिन्डा टिन्कटोरिया रॉक्सब
7. चेनथुम्बै - लियोनोटिस नेपेटेफोलिया आर.बीआर.
8. मरुक्करै वर-कटुनेरेजम स्पीनोसा थुन्ब
9. देनमारम् - गौजुमा टोमेनटोसा कुन्थ

उक्त अध्ययन के अंतर्गत - औषधियों का प्रयोग, उनका वितरण, मात्रात्मक सुलभता एवं उन पर आधारित विस्तृत जानकारी को सम्मिलित किया गया । इसके अतिरिक्त इनकी सूक्ष्म विशिष्टताएं, भौतिक रासायनिक गुण तथा इनके सक्रिय तत्वों की उपस्थिति के लिए इनके पादप रसायनिक परीक्षण पर कार्य किया गया ।

वाङ्मय सर्वेक्षण

1. मरुक्करै - कटुनेरेजम् स्पीनोसा थम्ब
2. चंदनम् - शान्तलम् एल्बम एल.

संग्रह/प्राप्ति

1.	पुलिनारलै	सायफोसटेम्मा सिटोसम (रॉक्सब) अलस्टोन
2.	मरुक्करै वर	कटुनेरेजम स्पीनोसा थुन्ब
3.	इशवरामुलि	एरिस्टोलोचिया इन्डिका एल.
4.	कट्टुजीरागम	सेन्ट्राथेरम एनथेलमिनटिकम् (विल्ड)
5.	करुवर	कोलियस वेटिवेरोडस जेकब
6.	कहैनीर	मारन्ता अरुनडिनेसिया एल.
7.	सिनथिल स्टीम	टिनोसपोरा कोर्डिफोलिया मिअर्स
8.	कोवै	कोसिनिया इन्डिका एल.

संग्रहालय

संग्रहालय में 5 सिद्ध औषध पादप नमूनों को जोड कर, कुल 45 सिद्ध औषध पादप नमूने हैं।

5. भेषजगुणविज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम

भेषजगुणविज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम, चेन्नई स्थित केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध), के भेषजगुणविज्ञानीय अनुभाग द्वारा संपन्न किया जाता है । संस्थान की प्रयोगशाला में निर्धारित प्रायोगिक मानदण्डों के अनुसार अध्ययन पूरा किया गया । निम्नलिखित एकौषधियों/मिश्रित योगों पर उनके प्रभाव जानने के लिए अध्ययन किया गया ।

1. एथिमाथुरम् (ग्लायसिरिहजा ग्लेबरा)
2. इडिवल्लथी मेजूगु
3. मुडक्कतम् चूर्णम् (कार्डियोसपरमम हेलीकाकाबम)
4. सिवाप्पुकुकिल थैलम
5. थालगा माथिरै
6. थाज्गाम्पू माथिरै
7. उथमनि चूर्णम (परगुलेरिया एक्सटेंस)
8. उथमनि थैलम्
9. वथकेसरि थैलम्
10. अवुरि (इन्डिगोफेरा टिंक्टोरिया)
11. नीरमुलि कुडिनीर

तीव्र विषाक्तता अध्ययन

ग्लायसिरिहजा ग्लैबरा औषध के साथ् श्वेत चूहों एवं चूहों पर अध्ययनोपरांत 10,000 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, अनुपान में विषाक्तता का प्रभाव नहीं पाया गया । इडिवल्लाथी चूर्णम् औषध 10,000 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, चूहों में एवं 5000 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, श्वेत चूहों एवं 1000 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, श्वेत चूहों पर प्रयोग से विषाक्तता रहित पाई गई । सिवप्पुकुकिल औषध तैल के रूप में, 40 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, श्वेत चूहों पर प्रयोग से विषाक्तता रहित पाई गई । थालगा माथिरै एवं थाजगम्पु माथिरै औषधियों का 10,000 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, अनुपान से क्रमशः 33.33 प्रतिशत एवं 66.66 प्रतिशत मृत्यु दर देखी गई। परगुलेरिया एक्सटेन्स औषध का चूर्णम् रूप में तथा तैल रूप में 10,000 मि.ग्रा./कि.ग्रा. तथा 50 मि.ली./कि.ग्रा. शरीर भार, क्रमशः में अधिकतम अनुपान से विषाक्त रहित पाई गई । वथकेसरी तैलम औषध का 40 मि.ली./कि.ग्रा., शरीर भार, में अनुपान से विषाक्त रहित पाई गई । इनडिगोफेरा टिंक्टोरिया (क्लोरोफार्म सत्व) औषध का 10,000 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार में अपेक्षित अनुपान प्रयोग से विषाक्त रहित पाई गई ।

शोथहर अध्ययन

कैराजीनीन द्वारा प्रेरित पंजशोथ वाले चूहों पर इडिवल्लाथी मिजुगु औषध के साथ 50,100, 250, 500 एवं 1000 मि.ग्रा./कि.ग्रा. के अनुपान से अध्ययन किया गया । 500 मि.ग्रा./ कि.ग्रा. अनुपान से इसमें ज्यादा से ज्यादा 52.12 प्रतिशत शोथहर गतिविधि देखी गयी । कारडियोसपरमम् हेलिकाकबम् चूर्णम रूप से में 500 मि.ग्रा./कि.ग्रा. तक अनुपान से 73.01 प्रतिशत शोथहर गतिविधि देखी गयी । थाजगम्पू माथिरै औषध का 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा., शरीर भार, में अनुपान से 54.24 प्रतिशत शोथहर गतिविधि देखा गया । परगुलेरिया का तैलम रूप में 7.5 मि.ली./कि.ग्रा., शरीर भार, में अनुपान प्रयोग से 82.89 प्रतिशत चूहों में शोथहर गतिविधि देखा गया । नीरामुल्लि कुडिनीर का 20 मि.ली. एवं 3. मि.ली./कि.ग्रा., शरीर भार, में अनुपान से 62.68 प्रतिशत शोथहर गतिविधि देखी गयी ।

संधिवातरोधी अध्ययन

फार्मेल्डीहाईड द्वारा प्रेरित संधिवात पर परगुलेरिया औषधि के तैलीय रूप में 1, 2, 5 एवं 10 मि.ली./कि.ग्रा., शरीर भार, श्वेत चूहों पर अध्ययन किया गया । वथकेसरि औषधि का तैलीय रूप में 2 एवं 5 मि.ली./कि.ग्रा., शरीर भार, में अनुपान प्रयोग से अध्ययन किया गया । इसके सांख्यिकीय आंकड़ों का विश्लेषण किया जा रहा है । परिणाम आने पर यथा-शीघ्र सूचित कर दिया जाएगा ।

6. औषध मानकीकरण अनुसंधान कार्यक्रम

रोगहर प्रभावों की जानकारी के लिए प्रामाणिक औषधि योगों एवं वास्तविक एकौषधियों की प्राप्त के लिए औषधि मानकीकरण एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है । औषधि एवं प्रायोगिक निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान दोनों महत्वपूर्ण स्थानों में इसका प्रमुख स्थान है, क्योंकि यह वास्तविक एकौषधियों एवं प्रमाणिक निर्मित औषध योगों की प्राप्ति में सहयोगी आंकड़े प्रदान करता है। सिद्ध फार्मुलरी (भाग-1) एवं उन योगों में मिश्रित एकौषधियों के अध्ययन के लिए परिषद द्वारा मानकीकरण कार्य पूरा किया जा रहा है । अध्ययन कार्य -1) औषधि मानकीकरण अनुसंधान एकक, चेन्नई, 2) औषधि मानकीकरण अनुसंधान एकक, त्रिवेन्द्रम एवं 3) औषधि मानकीकरण अनुसंधान एकक, बंगलूर को सौंपा गया है ।

कार्यक्रम का उद्देश्य एकौषधि पर अध्ययन करना है । औषध निर्माण प्रक्रिया में पूर्ण उत्पादन पर विश्लेषणात्मक मानक अध्ययन करना है ।

रासायनिक अध्ययनों पर विश्लेषित एकौषधियों की सूची निम्नानुसार प्रदर्शित की गई है:-

क्र.सं.	औषध का नाम	विश्लेषित भाग
1.	नवल (सायजियम कुमिनि)	छाल
2.	कट्टुजिराकुम (विर्नोनिया एनथेलमिंटिका)	बीज
3.	कुरुवीर (कोलियस विटिविरोइडस)	मूल
4.	पुलिनरले (सिसस सेटुसा)	वायवीय भाग
5.	कूहैनीर (मरन्ता अरुणडिनसिया)	कंद मूल
6.	मरुक्करै (कटुनरेजम स्पीनोसा)	मूल
7.	कूकैहीर (मरन्ता अरुणडिनसिय)	श्वेतसार
8.	थुम्बै (ल्यूकस एजपेरा)	मूल
9.	पीतारोहिणी (कॉपटिस टीटा)	मूल
10.	मिलागरनै (टोड्डालियाए सिअटिका)	वायवीय भाग
11.	पककुनीर (अरेका कटेचु)	बीज रस
12.	पसपलम स्क्रोविकुलतम लिन्न	बीज
13.	टेफरोसिया परपुरिया पर्स	मूल

14.	पसुमपल	
15.	पसुमोर	
16.	टयिर	
17.	टयिरटिलेवु	
18.	वेन्नी	
19.	पशुवेन्नी	
20.	मनिथनमैन टैयडु	
21.	नईमनटैयडु	
22.	कस्तुरी	
23.	समबलपूसनिकेयी (बेनिनकसा हिसपिडा)	फल एवं बीज
24.	पसालक्किरै (बसेल्ला अल्बा)	पत्ते
25.	पेयिप्पीरक्कम् (लुफा एक्यूटेंगुला)	पत्ते, बीज, फल
26.	वेपम् (अजदरिक्ता इन्डिका)	पत्ते
27.	अमनक्कु (रिसिनस कॉम्यूनिस)	पत्ते

निर्मित औषधि

1.	पलाकरै पर्पम्	21.	वेनकरा पोडि
2.	वेनकर पर्पम्	22.	राज राजाश्वरम्
3.	करप्पन तैलम्	23.	पावन कडुक्कै24. बिरमानन्दा वैरवम्
4.	उलुन्डु तैलम्	25.	एलवग्नगथि मथिरै
5.	मईना तैलम्	26.	सलोथारमणि
6.	मान्धा एन्नि नं. 1	27.	कक्कना मथिरै
7.	मरुगुल्लि तैलम्	28.	थलका करुप्पु
8.	विरन् संजीवी तैलम	29.	कनथक रसायनम्
9.	मान्धा एन्नि नं. 2	30.	करिसलै लेजियम्
10.	मुरुक्कन विडै माथिरै	31.	नराथै लेजियम
11.	वसंत कुसुमाकरम्	32.	परंगी रसायनम्
12.	अमूर्टाडी कुलिगै	33.	सरापुंग विलवथि लेजियम्
13.	लवंगादि मथिरै	34.	एरसा कंनथि मेजुगु
14.	पडिगालिंगा चेन्दुरम	35.	विड् मुट्टिथ थैलम् (एलकु)
15.	रस चेन्दुरम	36.	कजहार्चीची थैलम्
16.	अरुमुखा चेन्दुरम	37.	विड् मुट्टिथ थैलम्
		38.	वेल्लै मेजहुगु

17.	चन्दमरुथा चेन्दुरम्	39.	थूडुवलईने
18.	नाग चेन्दुरम्	40.	पडिकनरा नीर
19.	संजीवी माथिरै	41.	करिसलई लेजियम्
20.	कजहार्ची तैलम्	42	महावल्लथि लेजियम्
43.	इरुनेल्लि कर्पम्	46.	विलवंग पर्पम्
44.	मुटुचिप्पि पर्पम्	47.	अलोका मनडुरा चेन्दुरम
45.	पवाल पर्पम्		

पादप-रसायन

1. पिडंगुनरी - प्रेमना टोमेन्टोसा
2. ब्राह्मी - बकोपा मोन्नेरी
3. कुरुवि चेदि - एरेटिया माईक्रोफाईला
4. कट्टुचिरकम् - वर्नोनिया एनथेलमिनटिक

एकौषधियों का वाड.मय सर्वेक्षण

1. गो दुग्ध
2. छाछ
3. कट्टुचिरकम् - वरनोनिया एनथेलमिनथिक
4. कूहैनीर - मरन्ता अरुणडि नासिया
5. मिलागरनै - टोडालिआ एसिआटिका
6. वेटची - इक्सोरा - कोक्किनीआ
7. कुरुविचेदी - एरेटिय बक्सीफोलिया

7. भेषज निर्माण

केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध), चेन्नई में सिद्ध साहित्य में उल्लिखित औषधियों का निर्माण किया जाता है तथा परिषद के अधीन संस्थनो/एककों में परीक्षण के लिए सिद्ध औषधियों का चयन किया जाता है ।

भेषज निर्माण के लिए कच्ची औषधियों की आपूर्ति औषध प्रजाति वानस्पतिक सर्वेक्षण परियोजनाओं तथा स्थानीय बाजार से की जाती है । भेषजअभिज्ञानीय और सिद्ध औषधियों के विशेषज्ञों द्वारा औषधियों की पहचान करके उनके विशुद्धता एवं प्रमाणिकता का निर्धारण किया जाता है ।

अनुसंधान और सामान्य प्रयोग के लिए आवश्यक योगों को सिद्ध साहित्य में वर्णित विधियों के अनुसार फार्मेसी में तैयार किया जाता हे । फार्मेसी में की जानेवाली विभिन्न प्रकार की औषधियों में पर्पम्, चेन्दूरम, चूर्णम्, तैलम, नेई पर्पम्, इन्नाई एवं कल्कम आदि है। प्रतिवेदन अवधि में 1081 कि.ग्रा. चेन्दूरम, चूर्णम्, पर्पम् इत्यादि तथा 1351.9 लीटर तैल आधारित औषधियों का निर्माण किया गया ।

****

8. वाङ्.मय अनुसंधान कार्यक्रम

वाङ्.मय अनुसंधान एवं प्रलेखन विभाग, चेन्नई द्वारा वाङ्.मय अनुसंधान कार्य संपन्न किया जाता है । प्रतिवेदन अवधि के दौरान किए गए संबंधित कार्यों का विवरण निम्नलिखित है:-

1. बोगर करुक्केडे निगंडू - 500 : का मिलान एवं संशोधन किया गया तथा मुद्रण हेतु तैयार है ।
2. रामादेवर - 1000 का मिलान एवं संशोधन किया गया तथा मुद्रण हेतु तैयार है।
3. अगथियर पन्च कविय निगन्डू - 800 : का मिलान एवं संशोधन किया गया तथा मुद्रण हेतु तैयार है ।
4. सभी संबंधित सूचनाओं से युक्त, 100 कडजन लीवस के पाण्डुलिपियों का एक कमपैक्ट डिस्क तैयार किया गया ।
5. प्रतिवेदन अवधि में रु.49,406/- की परिषद प्रकाशनों की विक्री की गई ।

9. प्रकाशन एवं सहभागिता

I. प्रकाशन

क्र. सं.	लेखक का नाम	शीर्षक	पत्रिका का नाम	प्रकाशन तिथि
1	पी. बृन्दा एवं अन्य	पुलिनारलै-सिद्ध औषधि पर सूक्ष्म रूप-विज्ञानीय मानकीकरण	भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी ज., खंड-2(सं.1) 26-36	2002
2	एस. एथिराजुलु एवं अन्य	सीनथिल सरक्कारै (गुडुची सत्व) का मानकीकरण	बी.एम.ई.बी.आर., खंड-21 (सं.1-2) : 37-45,2000	2003
3	सी रमेश एवं अन्य	स्टडी डिजाइन आफ द क्लीनिकल ट्राइल ऑफ ट्रेडिशनल सिद्ध एन्टी-डायबेटिक फॉरमुलेशन	भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी ज., खंड-1 (सं.4)	2002
4	(श्रीमती) के. के. राव	संधिवात का उपचार सिद्ध एवं एलोपैथी विधि से	भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी ज., खंड-2 (सं.1): 37-43	2002
5	ए. सरस्वथी एवं एस.रुकमणि	वल्लारनी एवं ब्राह्मी तैल का विश्लेषण	सचित्र आयुर्वेद, खंड-55 (सं.9): 701-703	मार्च, 2003
6	ए. सरस्वथी एवं अन्य	कामला में प्रयोग हेतु कुछ औषधियों का विश्लेषण	बी.एम.ई.बी.आर. खंड-21 (सं.1-2):73-79, 2000	2003
7	ए. सरस्वथी एवं अन्य	कुछ सिद्ध औषधियों का श्वित्र में प्रयोग के मानकीकरण पर अध्ययन	बी.एम.ई.बी.आर., खंड-21 (सं.1-2):60-72, 2000	2003
8	ए. सरस्वथी एवं पी. बृन्दा	पादप का पशु चिकित्सा में प्रयोग	बी.एम.ई.बी.आर., खंड-21 (सं.1-2):15-26, 2000	2003
9	पी. सरस्वथी एवं अन्य	सिद्ध निर्मित उप्पु चेन्दुरम का मानकौकरण	आर्यवैद्यन, खंड-26 (सं.-1) : 20-22	2002

II. सहभागिता

क्र. सं.	लेखक का नाम	लेख का शीर्षक	संगोष्ठी/सम्मेलन/कार्यशाला का नाम एवं सहभागिता की तिथि
1.	टी. आनन्दन एवं के. शिवप्रकाशम	नाड़ी परीक्षा का स्वतः कार्य क्षेत्र, सिद्ध चिकित्सा प्रणाली में प्रयुक्त गैर-आक्रामक साधारण रोग निदान औजार ।	21वीं सदी में भा.चि.प. एवं हो. की भूमिका पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन चेन्नई, 1-2/2/2003
2.	वी. वेल्लादुरई	संभाव्य औषध पादपों का टुटुकोरिन बन्दरगाह के माध्यम से निर्यात ।	औषध पादपों पर नव सहस्राब्दि संगोष्ठी, तिरुनेलवेली, 11/2002
3.	(श्रीमती) वी. गायत्री देवी एवं अन्य	सिद्ध औषधि - मुरुक्कन विडई मथिरई एवं इसके बाजार नमूनों का तुलनात्मक अध्ययन	विश्व आयुर्वेद महा-सम्मेलन-2002, कोच्चि (केरल), 1-4/11/2002
4.	(श्रीमती)जी.गणनशेकरी एवं अन्य	स्वास्थ्य सूचनाओं का डिजिटेलाइजेशन	भारत में वास्तविक औषधि पुस्तकालय पर राष्ट्रीय समागम, एम.एल.ए.,आई द्वारा आयोजित, नई दिल्ली 23-25/12/2002
5.	(श्रीमती) जी. गणनशेकरा एवं अन्य	विशेषज्ञ पद्धतियों के रूप में, डिजिटल, ज्ञान आयोजन में एक प्रभावी औजार ।	21वीं सदी में भा.चि.पद्धति एवं होम्यो.की भूमिका पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, चेन्नई, 1-2/2/2003
6.	वी गोपाल एवं अन्य	मानव में अकल्यफा इन्डिका लिन्न का अस्थमारोधी प्रभाव के लिए प्रारंभिक भेषजगुणविज्ञानीय छानबीन एवं जांच	- यथोपरि -
7.	एस. जोगा जोथिपानडियन एवं अन्य	प्राकृतिक उत्पादन के माध्यम से अथिथूला रोगम एवं इसका प्रबंधन ।	- यथोपरि -
8.	(श्रीमती)ए. जान एवं अन्य	अया बिरुनगा रस कर्पम् का भौतिक रसायनिक मूल्यांकन	विश्व आयुर्वेद महा-सम्मेलन 2002,कोच्चि (केरल), 1-4/11/2002
9.	(श्रीमती) ए. जान एवं अन्य	रसायनिक विधियों के प्रयोग से एलकु, विड् मुट्टिथ थैलम् का मानकीकरण	12वीं स्वदेशी विज्ञान महासम्मेलन,सी.टी.सी.आर. आई.,तिरुवनन्तपुरम् 5-7/11/2002
10	के मीनाक्षी सुन्दरम्	सिद्ध चिकित्सा पद्धति मे थिनई एवं	21वीं सदी में भा.चि.प. एवं

	मुर्थी.एवं अन्य	इसके प्रभाव के तीन मनोवृत्ति ।	हो. की भूमिका पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, चेन्नई, 1-2/2/2003
11	जी.पी. मोहन्त	एन्ड्रोग्राफीज एचिनॉइडस का जीवाणुरोधी एवं फंगलरोधी गतिविधियां	अन्नामलई विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी अन्नामलई नगर, 3/2003
12	एम.पद्यम्सोर्न सुब्रमणियन	तिरुनेलवेलि के ग्रामीणों में लोक प्रचलित कम ज्ञात एक संभाव्य औषधि	नव सहस्राविद में औषध पादप पर संगोष्ठी, तिरुनेलवेली, 11/2002
13	(श्रीमती) एस. राजलक्ष्मी एवं अन्य	कोडेड हर्बल औषधि सोरिअसिस की क्षमता मूल्यांकन हेतु प्रोटोकॉल	21वीं सदी में भा.चि.प. एवं हो. की भूमिका पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, चेन्नई, 1-2/2/2003
14	(श्रीमती) के.के. राव एवं अन्य.	सिद्ध धातु चिकित्सा का वैज्ञानिक मूल्यांकन	तमिल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन, थनजावूर 12/2002
15	(श्रीमती) के. के. राव एवं जी. वेलुचामी	विषविज्ञान सिद्ध के लिए वरदान या पाबंदी की रुप-रेखा	21वीं सदी में भा.चि.प. एवं हो. की भूमिका पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, चेन्नई 1-2/2/2003
16	(श्रीमती) ई. शशिकला एवं अन्य	प्रेमना टोमेनटोसा विल्ड का मानकीकरण	- यथोपरि -
17	ए. सरस्वती एवं अन्य	सिद्ध यौगिक औषधि राकाकांति, मेलुकु पर विषाक्त यकृत रोधी अध्ययन	जीवविज्ञान प्रगामी प्रभाव एवं संबद्धता पर राष्ट्रीय सम्मेलन, बरेली (यू.पी), 27-29/10/2002
18	ए. सरस्वती एवं अन्य	दो सिद्ध औषधियों पर मानकीकरण अध्ययन	अंतर्राष्ट्रीय सिद्ध सम्मेलन, 2002, किलावयाल (त.ना.), 24-26/5/2002
19	(श्रीमती) एस. वसंत एवं अन्य	पिरमीने के मानकी हेतु विश्लेषित एवं एच.पी.टी.एल.सी.विधि	तमिल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन, थनजावूर, 12/2002
20	(श्रीमती) एस. वसंत एवं अन्य	सिद्ध चिकित्सा पद्धति में अनुपम पादप - रसायन एवं जीवविज्ञान	21वीं सदी में भा.चि.प. एवं हो. की भूमिका पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, चेन्नई, 1-2/2/2003

IV. आभार

शासी निकाय, वित्त समिति एवं वैज्ञानिक परामर्शदात्री समितियों के सदस्यों द्वारा की गई सेवाओं का परिषद निदेशक, अत्यंत प्रशंसा करते हुए परिषद के कार्य संचालन में इन सभी के बहुमूल्य योगदान, मार्गदर्शन एवं निरन्तर सहयोग के लिए हार्दिक आभार प्रकट करते हैं ।

परिषद निदेशक विभिन्न पद्धतियों एवं संबद्ध विभागों के उन सभी वैज्ञानिकों, विद्वानों, विश्वविद्यालयों और सरकारी एजेंसियों का जो इस परिषद से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध रहे हैं तथा मुख्यालय सहित सभी परियोजनाओं के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी प्रतिवेदन अवधि के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में दिए गए सहयोग के लिए धन्यवाद करते हैं ।

परिषद, आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार का उनके निरन्तर समर्थन, सहायक दृष्टकोण तथा सहयोग के लिए धन्यवाद करती है, जिसने परिषद को अनुसंधान के क्षेत्र में अपनी गतिविधियों बढ़ाने में सहयोग दिया तथा आशा करती है कि आयुर्वेद एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति के संपूर्ण विकास के लिए भविष्य में भी निरन्तर समर्थन एवं सहयोग मिलता रहेगा ।

परिषद अपने उपनिदेशक (तक.), कार्यक्रम अधिकारियों, सांख्यिकी अधिकारी, नोडल अधिकारी तथा अनुसंधान अधिकारी (आयु.) को वार्षिक प्रतिवेदन को तैयार करने में सतत् सहयोग देने के लिए आभार प्रकट करती है । वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी रुपान्तर तैयार करने के लिए परिषद अपने राजभाषा विभाग का भी धन्यवाद करती है ।

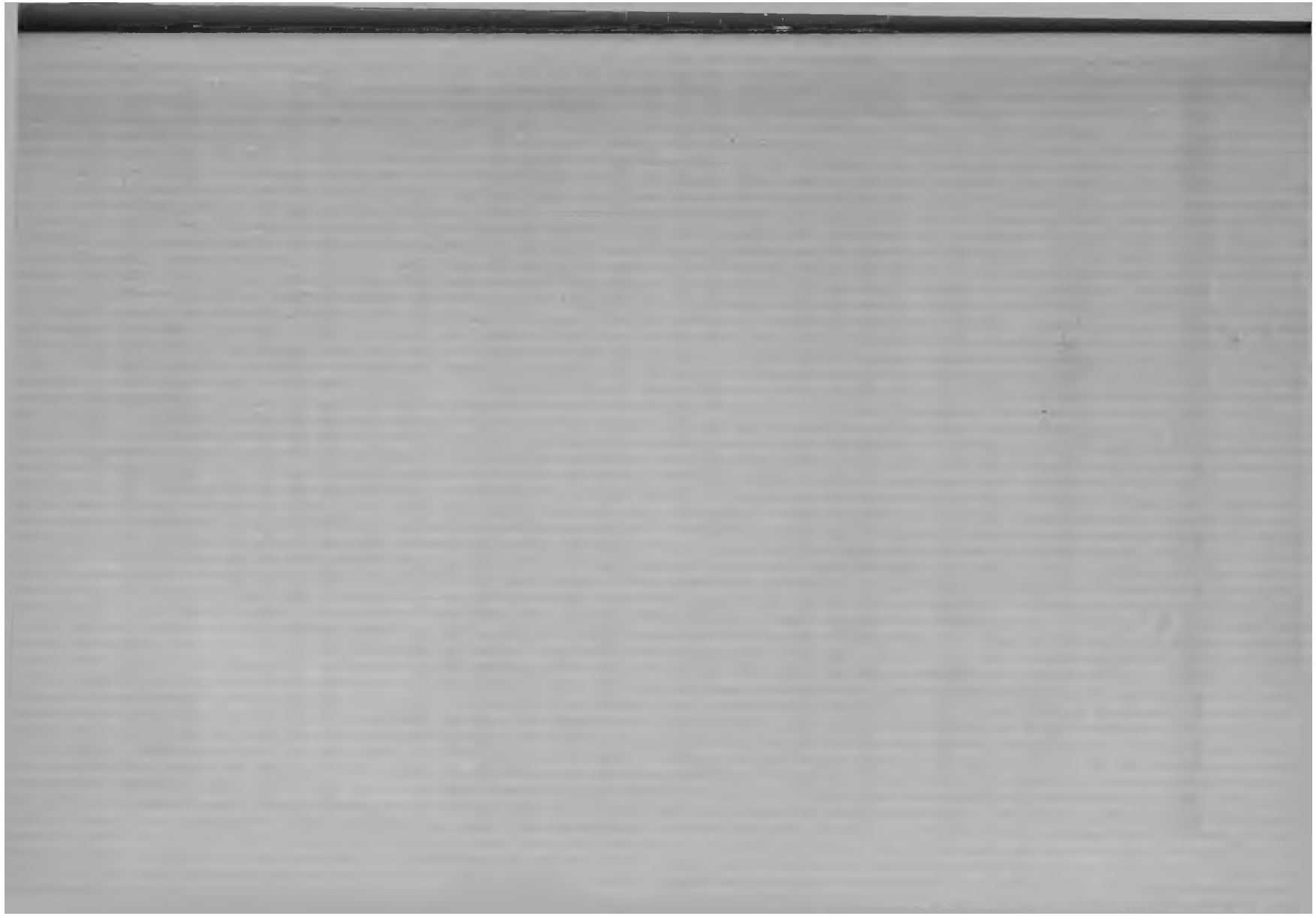

ANNUAL REPORT
2002-2003

अंग्रेजी रूपान्तर

(ENGLISH VERSION)

CONTENTS

Sl. No.	Subject	Page No.
I.	**Preface**	1
II.	**Administrative Report**	4
III.	**Technical Report**	
A.	**AYURVEDA**	14
1.	Abbreviations used for Institutes/Centres/ Units	14
2.	Clinical Research Programme	15
	(a) Clinical Therapeutic Trials	15
	(b) Statement showing disease groups, number of patients studied and participating projects	28
	(c) Statement of the patients attended at OPD and admitted/ discharged in the IPD	29
	(d) Health Care Research Programme	30
3.	Medico-Ethno-Botanical Survey Programme	31
4.	Cultivation of Medicinal Plants	34
5.	Musk Deer Breeding Programme	36
6.	Pharmacognosy Research Studies	37
7.	Plant Tissue Culture	38
8.	Drug Standardisation Research Programme	39
9.	Pharmacological Research Programme	47
10.	Literary Research Programme	52
11.	Family Welfare Research Programme	54
12.	Amchi Research Programme	57
13.	Publications and Participations	58

Sl. No.	Subject	Page No.
B	**Siddha**	
1.	Abbreviations used for Institutes/Units	73
2.	Clinical Research Programme	74
3.	Medico-Botanical Research Programme	78
4.	Pharmacognosy Research Programme	83
5.	Pharmacology Research Programme	85
6.	Pharmaceutical/Standardization Research Programme	86
7.	Pharmacy	89
8.	Literary Research Programme	90
9.	Publications/Participations	91
IV.	**Acknowledgement**	94

I. PREFACE

The Central Council for Research in Ayurveda and Siddha, an autonomous body under Department of AYUSH, Ministry of Health and Family Welfare, Government of India, is an apex body in India for the formulation, co-ordination, development and promotion of research on scientific lines in Ayurveda and Siddha. The Council carries out its objects and functions through the network of Research Institutes and Centres functioning under its direct control and through a number of Units located in Universities/ Institutes/ Hospitals of Ayurveda and Siddha in different parts of the country. A brief review of the work carried out under different research programmes during the reporting period is reported hereunder:

Clinical Research Programme:

Clinical conditions studied in Ayurveda during the reporting period include Tamaka Swasa (Bronchial asthma), Parinamasula (Duodenal ulcer), Grahani (Malabsorption syndrome), Arsha (Piles), Bhagandara (Fistula-in-ano), Kamala (Jaundice), Mutrasamari (Urolithiasis), Madhumeha (Diabetes mellitus), Vyanbalvaishamya (Hypertension), Medoroga (Obesity and lipid disorders), Pakshavadha (Hemiplegia), Pangu (Paraplegia), Gridhrasi (Sciatica), Amavata (Rheumatoid arthritis), Manodvega (Anxiety neurosis), Apasmara (Epilepsy), Manasmandata (Mental retardation), Timir Roga (Errors of refraction), Kitibha (Psoriasis), Visamajwara (Malaria) and Slipada (Filariasis).

Clinical conditions studied under Siddha System of Medicine during the reporting period include Kalanjaga Padai (Psoriasis), Putrunoi (Cancer), Valligunmam (Peptic ulcer), Manjal Kamalai (Infective hepatitis), Santhuvatha Soolai (Rheumatoid arthritis), Yanaikkal Noi (Filariasis), Venkuttam (Leucoderma) etc.

During the execution of this programme, medical aid to 5,20,732 patients through Out Patient Departments and 2479 patients at In-door Patient Department functioning at different Institutes/Centres/Units of the Council have been provided.

Health Care Research Programme:

Under Health Care Research Programme, the Tribal Health Care Research is modulated to have rural bias so that benefits of the research programmes can reach to the grass-root level. Under this programme, team of research personnel visit each and every house in the selected/adopted villages/tribal pockets and provide incidental medical aid besides, collecting data pertaining to frequency of prevalence diseases, food habits with regard to different seasons, socio-economic status, availability of natural resources, standard of living and the types of treatment available to the rural/tribal folk. During the period under report a population of 22, 226 individuals pertaining to 15 villages have been covered under this programme and incidental medical aid provided to 7,299 patients.

Drug Research Programme:

The Drug Research Programme consists of Medico-Botanical Survey, Cultivation of Medicinal Plants, Pharmacognostical, Phytochemical, Pharmacological/Toxicological studies besides Drug Standardization Research Programme. Under Medico-Botanical Survey Programme over 14 survey tours were conducted and 1658 plant specimens, 175 raw drugs besides 85 museum samples were collected. 165 drug samples weighing more than 774.5 kg. were collected for supply. The Survey Units have also taken up maintenance work of their Herbarium and Museum. About 455 medicinal plant species along with 14,817 Guggulu plants are presently growing in different Medicinal Plants Gardens. 204.27 kg. of raw drugs (dry and fresh) were collected from the different gardens and supplied to different institutes for research purposes. Pharmacognostical studies on 19 drugs, Chemical studies on 11 drugs and Pharmacological and toxicological studies on 29 drugs used in Ayurveda and Siddha System of Medicine have been carried out during the reporting period.

Under Drug Standardisation Research Programme Pharmacognostical, Phytochemical/TLC studies on 38 single plant drugs were conducted. Analytical standards were laid down on 84 formulations used in Ayurveda and Siddha Beside this 33 single compound formulations have been standardized as per formats of Ayurvedic Pharmacopoeia Standards, allotted under Central Scheme for Developing Pharmacopoeia Standards of ISM drugs and three formulations under RCH Programme have also been worked out. Under the project, feasibility of introducing ISM at PHC level,14 Ayurvedic formulations have been prepared and quality assured.

The Council is also maintaining a Musk Deer Breeding Farm at Mehroori in Kumaon Hills and there are 22 adult animals at the end of reporting period.

Literary Research Programme:

Literary Research Programme broadly covering medico-historical studies, collection and compilation of references relating to drugs and diseases from classical treatises, lexicographic works, contemporary literature and publications of Ayurveda, Siddha and modern sciences continued further. The Council is bringing out "Journal of Research in Ayurveda & Siddha", "Bulletin of Medico-Ethno-Botanical Research", "Bulletin of Indian Institute of History of Medicine" besides the "News Letter". During the reporting period backlog of JRAS and BMEBR has been cleared and 3 books/ Monographs were published.

Family Welfare Research Programme:

Clinical screening and Pharmacological studies of the oral contraceptive agents are being carried out under this programme. 93 new cases were studied besides 182 old cases were carried forward from the previous year for clinical evaluation of oral and local contraceptive agents: Pippalyadi Yoga, Vandhyavari (*Vicoa indica*) and Neem oil respectively.

Pharmacological studies on 4 drugs have been carried out. Under RCH Programme Balkasa, Balatisar, Bala Daurbalya and Shishuparicharya (Neonatal care) were carried out and a total 335 cases were studied.

Seminar, Conferences & Workshops:

During the reporting period, the Council has organized a five days WHO sponsored Training Workshop on Research Methodology in Ayurveda and Siddha in October, 2002 at New Delhi while the CRI(Ay.), Kolkata jointly organized a National Seminar-cum-Workshop on Ano-rectal diseases with Association of Ayurvedic Doctors of India in July, 2002 . The Council's officials have participated in a number of National and International Seminars, Conferences, Workshops and Training Programmes.

(G.S.LAVEKAR)
DIRECTOR
and Member-Secretary
Governing Body, CCRAS.

Dated: 10.12.2003.

II. ADMINISTRATIVE REPORT

The Central Council for Research in Ayurveda and Siddha is a Society Registered on 30th March, 1978 under Societies Registration Act XXI of 1860. During the period under report ending 31st March, 2003, the members of the society and Governing Body of the Council were as under:-

President:	(i) Dr. C.P.Thakur Minister of Health & F.W. (upto June,2002)
	(ii) Sh. Shatrughan Sinha Minister of Health & F.W. (w.e.f. July, 2002 to Jan., 2003).
	(iii) Mrs. Sushma Swaraj Minister of Health & F.W. (w.e.f. 29th Jan.,2003).
Vice-President:	Vd. Shri Ram Sharma
Official Members:	
1.Secretary(ISM&H)	Smt. Malti S.Sinha
2.Joint Secretary(ISM&H)	Sh. L.Prasad
3.Joint Secretary(FA)	Sh. Rakesh Behari
Non-Official Members:	1.Dr. I.Sanjeeva Rao 2.Dr. (Mrs.) G.V.Satyavati 3.Dr. (Ms.) P.V.Tewari 4.Dr. D.K.Triguna 5.Dr. Narendra S.Bhatt 6.Dr. S.K.Mishra 7.Prof. S.D.Seth 8.Prof. K.V.Raghavan 9.Dr. P.Pushpangadan 10.Dr. J.R.Krishnamurthy 11.Dr. P.Jayaprakash Narayan 12.Dr. (Mrs.) Gowrie Devi

Director, NIS, Chennai	Vacant
Member-Secretary	(i) Dr. G.Veluchamy (upto 8th Jan., 2003)
	(ii) Dr. G.S.Lavekar (w.e.f. 9th Jan ., 2003).

No meeting of Governing Body was held during the period under report.

Finance Committee

The Standing Finance Committee consisted of the following:-

1.	Shri L.Prasad J.S.(ISM&H)	Chairman
2.	Sh. Rakesh Behari J.S.(FA)	Member
3.	Vd. D.K.Triguna	Member
4.	Dr. (Ms.) P.V.Tewari	Member
5.	Director, CCRAS	Member-Secretary.

During the period under report, the Standing Finance Committee met twice on 11th June, 2002 and 22nd Jan., 2003 and considered and approved proposals related to financial matters.

Representation of Scheduled Caste/ Scheduled Tribe in the Council services and welfare measures for SC/ST.

The Council is following the orders and guidelines issued from time to time by the Government of India in respect of reservation and representation of SC/ST in the services of the Council. The recruitment /promotion is done according to the roster points. The Council is having a total strength of employees in different groups on 1.1.2003, as under:-

Group	Number of Employees	SC Employees	%age of total Employees	ST Employees	%age of total
A	218	26	11.93	9	4.12
B	66	10	15.15	2	3.03
C	580	79	13.62	22	3.79
D	651	227	34.87	57	8.75
Total	1515	342	22.58	90	5.94

The Council is having one Tribal Health Care Research Project (Ay.) which has been specially located in a tribal pocket. The programme launched by this Project envisages great

The Council is having one Tribal Health Care Research Project(Ay.) which has been specially located in a tribal pocket. The programme launched by this Project envisages great scope not only to understand the local health problems and interdependent issues but also to identify and apply/advise the methods and measures suitable to surmount them. Besides some of the Research Institutes /Centres/Units are also located in rural areas and through OPD/IPD of these Institutes/Centres and under Mobile Clinical Research Programme/Community Health Care Research Programme, medical relief and health benefit have been extended to a large number of SC/ST population. The budget of the Council stipulates specific allocations for SC/ST component plans.

Scientific Advisory Committee (Ay.)

During the year under report, the Scientific Advisory Committree(Ay.) consisted of the following:-

1.	Dr (Mrs.) G.V.Satyavati (upto 24th Feb.,2003) Prof. G.P.Dubey (w.e.f. 25th Feb., 2003)	Chairperson Chairman
2.	Vd. Narendra S.Bhatt	Member
3.	Vd. D.K.Triguna	Member
4.	Vd. Balendu Prakash	Member
5.	Sh. Pramod Kumar Sharma	Member
6.	Dr. S.K.Mishra	Member
7.	Vd. Nand Kishore	Member
8.	Dr. Kulwant Singh	Member
9.	Dr. (Mrs.) M.Gowrie Devi	Member
10.	Dr. S.N.P.Sinha	Member
11.	Dr. S.K.Sinha	Member
12.	Prof. K.V.Raghavan	Member

13.	Dr. Radha Krishnan	Member
14.	Dr. S.K.Sharma, Advisor(Ay.), Deptt .of ISM&H	Ex Officio - Member
15.	Prof. Arun Balakrishnan (w.e.f. 7th Nov., 2002)	Member
16.	(i) Dr. G.Veluchamy	Member-Secretary
	(ii) Dr. G.S.Lavekar	Member-Secretary

During the period under report, the Scientific Advisory Committee (Ay.) met twice on 5-6th August, 2002 and 28th March, 2003 and evaluated the programmes and provided necessary guidance.

Scientific Advisory Committee (Siddha)

During the year under report, the Scientific Advisory Committee(Siddha) consisted of the following:-

1.	Dr. K.Jayapal	Chairman
2.	Dr. J.R.Krishnamoorthy	Member
3.	Dr. V.Subba Laxmi	Member
4.	Dr. K.Jayapal (upto 24th Feb., 2003)	Member
	Dr. V.Arunachalam (w.e.f. 25th Feb., 2003)	Member
5.	Dr. Joseph Thass	Member
6.	Dr. Narayanappa	Member
7.	Dr. S.Radhakrishna	Member
8.	Director, Central Research Institute (Siddha), Chennai	Member
9.	Director, CCRAS.	Member-Secretary

During the period under report, the meeting of the Scientific Advisory Committee (Siddha) was held on 24th March, 2003.

Organisational Network of CCRAS

There are 10 Central Research Institutes, 15 Regional Research Institutes, one Regional Research Centre, one Tribal Health Care Research Project, one Research Project on Tibetan Medicine, one Medicinal Plants Garden in Siddha System of Medicines at Mettur under direct supervision of Central Research Institute (Siddha), Chennai Indian Institute of History of Medicine, Hyderabad, ALRCA and CSMDRIA, Chennai and Ayurvedic Research Unit, Bangalore, CRUs(Ay.); Kotakkal, Ahmedabad and Jamnagar.

Budget Provision

The following Table shows the budgetary provision made for the Council at a glance.

Scheme Expenditure	B.E. 2002-2003	Funds Released 2002-2003 (Rs.in Lakhs)	Actual Expenditure 2002-2003
Plan	800.00	741.00	807.60
Non-Plan	1988.00	2041.50	2216.26

The Accounts of the Council for the year 2002-2003 for the period from 1st April, 2002 to 31st March, 2003 has been audited by the DGACR.

Official Language Implementation Committee.

The Council is having an Official Language Implementation Committee under the Chairmanship of the Director, CCRAS to review the position regarding implementation of official language act/policy/rules, orders, programmes etc. and to suggest measures for increasing the pace of Hindi in the Council. During the period under report, the Committee met on 13.8.2002 and 9.12.2002.

Seminar & Conferences

1. The National Seminar- cum-workshop on Ano-Rectal Diseases – Participation of Central Research Institute(Ayurveda), Kolkata.

A National Seminar –cum-Workshop on Ano-Rectal Diseases organized jointly by Association of Ayurvedic Doctors of India and CRI(Ay.), Kolkata was held at the premises of CRI(Ay.), Kolkata from 28th to 30th July, 2002 and about 250 delegates from different parts of India consisting experts, general physicians of different medical systems. Faculty members, students from the Ayurvedic College of Kolkata, Nagpur and Mumbai attended the Seminar.

Seminar was inaugurated by the Honourable State Minister of Health and Family Welfare, Govt.of West Bengal, Sri Pratyush Mukherjee and addressed by Her Holiness Mata Rishi Ridha Anahata of Shamyita Math, Bankura Distt., West Bengal; Shri Aditya Agarwal, Director, Himani Ayurveda Science Foundation also attended as guest of honour while Dr. K.V. Devidas, Chairman, Seminar Organizing Committee welcomed the gathering. Dr.M.M.Rao, Organizing Secretary had outlined the scope and prospects of the Seminar.

While resource persons like Dr.K.K.Chopra, Ex-Director, Central Research Institute (Ay.), Mumbai and Dr.V.Sanghavi an expert in Kshara Sutra from Mumbai, Dr. Mukul Patel and Dr..(Mrs.) .Medha Patel of Surat, Dr.T.K.Desgupta, Member, Lutheran World Service, Indian and Sub-Editor J.I.M.A. had delivered the key note address. Six guest lectures, 21 research papers were presented on various aspects of Ano-Rectal diseases by research personnel working under CCRAS and also other Government Establishments. Also conducted live demonstration on various aspects of Ano-Rectal diseases and the application of Ksharasutra at the partially renovated operation theatre and also it was telecasted through television sets kept outside of operation theatre.

2. Training Workshop on Research Methodology at CCRAS Hqrs.Office, New Delhi.

The Council has organized a five days WHO sponsored Training Workshop on Research Methodology in Ayurveda and Siddha from 21st to 25th October, 2002 at its Headquarters Office, Janakpuri, New Delhi. The training programme for this workshop was finalized in consultation with Dr.G.V.Satyavati, Ex-Director General, ICMR and Chairperson, SAC (Ay.) and Dr.S. Radhakrishnan, Ex-Director, IRMS (ICMR) , Chennai and Member SAC (Ay.)/SAC (Siddha). The Training Workshop was inaugurated by Dr.G.V. Satyavati. The training programme focused on important areas viz. Good Clinical Practices, issues involved in planning of clinical trails, ethical considerations, role of Bio-statistician in planning clinical trials, standardization of laboratory and quality control of drugs besides lectures on computer applications. The training was imparted by the distinguished Scientists like Dr.G.V.Satyavati, Ex-Director General, ICMR, Dr.S.D.Seth, Ex.HOD Medicine, AIIMS, New Delhi; Dr.Vasantha Muthuswamy, Sr.D.D.G., ICMR, Dr.Radhakrishnan, Ex.Director, IRMS (ICMR), Chennai; Dr.S.S.Handa, Ex-Director, RRL (CSIR), Jammu; Dr.P.Jayabal, Deputy Director, National Institute of Epidemiology (ICMR), Chennai; Dr.N.S.Bhatt, Director Bio-Ved Pharma, Pune; Dr.Jayaprakash Narayan, Principal, Government Siddha Medical College, Chennai and Dr.R.M.Pandey, Assistant Professor (Bio-Stat.), AIIMS, New Delhi. 42 Scientists from different institutions of CCRAS and two scientists from Deen Dayal Upadhyay Research Institute, Chitrakut, participated in the workshop.

A visit of the participants was also arranged to the R. & D. Lab. of Dabur Research Foundation, Ghaziabad. The participant's response was assessed using a pre-designed questionnaire and the assessment has shown good response.

3. Regional Workshop on Conservation and Management of Himalayan Medicinal Plants, Kathmandu, Nepal – Participation of the Council.

Dr. Padam Gurmet, Research Officer, Amchi Medicine Research Unit, Leh-Ladakh (J & K) participated (on invitation) in the "Regional Workshop on Wise Practices and Experimental learning in the conservation and management of Himalayan Medicinal Plants". The Workshop was held from 15th to 20th Dec., 2002 in Kathmandu, Nepal. It was organized by major international conservation organizations like W.W.F. , IDRC (MAPPA), Canada, People and Plants Initiative, UNESCO and Nepal Govt.Workshop was represented by experts of eight countries including Nepal, China, India, Bhutan and Pakistan etc.

Dr.Gurmet presented paper on "Status and Conservation of Trans-Himalayan Medicinal Plants" highlighting the observation made during various surveys in Trans-Himalayas and efforts taken for their conservation. He also contributed a lot for the recommendations of the Workshop for wise practices in conservation and management of Himalayan Plants.

4. Parliament Sub-Committee for Rajbhasha – visit to Headquarter Office of CCRAS and RRI (Ay.), Jammu.

Third Parliamentary Sub-Committee for Rajbhasha visited Headquarter Office for inspection on progress and work related with Rajbhasha on 19th Sept., 2002. Shri Naval Kishor Rai chaired the meeting and Shri Amal Rai Pradhan, Mrs. Kanta Singh, Mrs.Sarla Maheshwari, Prof .Parmod Singh Bhandari and Dr.C. Narayan Paddi actively participated in the meeting . The Committee suggested that maximum work should be done in Hindi as this is a Ayurvedic Council. Dr.G.Veluchamy, Director, assured that all the suggestions of the committee will be considered by the Council.

The Sub-Committee also visited RRI(Ay.), Jammu for inspection of progress and work related with Rajbhasha on 3rd Feb.,2003.

5. Meeting of Incharges of Central and Regional Research Institutes (Ayurveda and Siddha) at Hqrs, New Delhi.

Meetings of the Incharges of Central Research Institute and Regional Research Institutes (Ayurveda and Siddha) were held on 20th & 27th Feb., 2003 at Hqrs.Office to review the ongoing Researh proposals for the new Programme Projection. At the outset, Dr.K.D.Sharma, Deputy Director (Tech.) welcomed the Senior Officers and introduced the

Director. All the Incharges briefly highlighted about the various activities of their respective Institutes during the past years and mentioned about the scientific achievements of the Institute.

6. **Kashmir Vision 2002 – An International Exhibition & Business Summit – Participation of CCRAS.**

A team of RRI(Ay.),Jammu of CCRAS has been deputed to participate in Kashmir Vision 2002 – an international Exhibition & Business Summit held at SKICC, Srinagar (J&K) from 20th –23rd June, 2002.

The Hon'ble Minister for Defence, Govt. of India, Sh. George Fernandes, inaugurated this business summit & exhibition.

The information material regarding the activities and achievements of the CCRAS was distributed among the visitors and free consultation and Ayurvedic medicines were dispensed to the patients by the Council's physicians free of cost.

Exhibition/Melas:

The Council participated in the following exhibition/Melas.

1. **Arogya –2002 at Hotel Shivalik, Chandigarh**

Under the aegis of Ministry of Health and F.W., Govt. of India (ISM&H), Chandigarh Tourism Department and CITCO, Institute of Tourism and Future Trends (ITFT) organized a Seminar with the theme Arogya, to promote health tourism through Indian system of medicine. In addition to this, an Expo was also organized at Hotel Shivalik View, Sector-17, Chandigarh from 31 March to 2 April, 2002, in which various Councils under Deptt. of Indian Systems of Medicine and Homoeopathy like Ayurveda, Siddha, Unani, Homoeopathy, Yoga & Naturopathy participated and arranged the exhibition to enlighten the general public.

2. **Family Welfare and Health Mela**

(a) Dharamshala, Distt. Kangra (H.P.)

Shri Kishan Kapoor, Transport Minister of Himachal Pradesh inaugurated Family Welfare and Health Mela at Dharmshala, Distt. Kangra (H.P.) on 31st May, 2002, to promote increased awareness as well as free medical service to the people of Kangra Distt. CCRAS, New Delhi participated through R.R.I.(Ay.), Mandi by organizing a medical camp for diagnosis

of ailments, besides displaying posters for educating the visitors about their health and Council's publications on its research activities from 31st May to 2nd June, 2002.

(b) Chamba (H.P.)

A team of RRI (Ay.), Mandi of CCRAS, New Delhi has been deputed to participate in Family Welfare and Health Mela at Chamba from 6th to 8th June, 2002. Shri Mohan Lai, Minister for Ayurveda, Himachal Pradesh inaugurated the Mela at Chamba. The team of RRI (Ay.), Mandi organized a Medical Camp for diagnosis of patients and supply of medicines free of cost, and also displayed Council's publications, poster, related to research activities to the visitors

3. Awareness about National Health and Family Welfare Programme through Health Mela, Arogya-2002.

Arogya-2002 was jointly organized by Department of Indian Systems of Medicine and Homoeopathy, Ministry of Health and Family Welfare, Govt. of India and India Trade Promotion Organization, New Delhi from 11th to 15th December, 2002 at Hall No. 12, Pragati Maidan, New Delhi. The aim of this exhibition was to create general awareness amongst the common people about various aspects of the Indian Systems of Medicine and Homoeopathy and the role in Health Care. The Exhibition was inaugurated by Shri R.P.Rudy, Hon'ble Minister for Commerce and Industry.

Besides thousands of visitors, a number of dignitaries like Shri Shatrughan Sinha, Hon'ble Union Minister for Health & Family Welfare, Shri Vinod Khanna, Hon'ble Minister of State for Tourism, Shri I.D. Swamy, Hon'ble Minister of State for Home Affairs had also visited the exhibition and showed keen interest in Council's activities. Dr. C.P.Thakur, Member of Parliament, gave the valedictory speech.

4. Tikamgarh (M.P.)

A team of five members headed by Dr. Hari Mohanlal Meena, ARO (Ay.), Central Research Institute for Ayurveda, Gwalior participated in Swasthya Avam Pariwar Kalyan Mela held at Rajendra Hospital Tikamgarh (M.P.) from 21st to 28th December, 2002.

The CCRAS stall displayed herbarium & sample of medicinal plants, coloured photographs of useful medicinal plants and raw drug samples. The physicians attended the patients and distributed the medicine to them free of cost.

5. **Jodhpur (Rajasthan)**

A Swadeshi Mela was organized by Bhartiya Vipanan Vikas Kendra at Jodhpur from 22.12.2002 to 31.12.2002. The Central Research Institute (Ay.), Jaipur participated in the Mela by organizing a Medical Camp for diagnosis of patient's ailments and supply of medicines to them free of cost. The Swadeshi Mela was inaugurated by Shri Shah Nawaj Hussain, Hon'ble Minister, Civil Aviation, Government of India.

Shri Jaswant Singh, Member of Rajya Sabha, Shri Muralidhar Rao, Convenor, All India Swadeshi Jagran Manch, Swami Satya Mitranand, Mahamandaleshwar were among the prominent dignitaries who visited the stall. Shri L.K.Advani, Hon'ble Deputy Prime Minister of India concluded the Mela.

6. **Sonpur, Chhapra (Bihar)**

A Parivar Kalyan Avum Swasthya Mela was organized at Sonpur, Chhapra (Bihar) from 22.11.2002 to 2.12.2002. Shri Ramai Ram, Hon'ble Minister, Govt. of Bihar, inaugurated the Mela. A team from RRI (Ay.), Patna consisting of seven member headed by Dr.D.N.Singh, Research Officer Incharge (Ay.) participated in the Parivar Kalyan Avum Swasthya Mela

7. **Jhansi (U.P.)**

Regional Research Institute (Ay.), Jhansi under CCRAS took part in Ayurved Festival from 14th to 19th November, 2002 at Jhansi. The staff of the Institute organized a Stall in the Mela and displayed authentic crude drug samples, medicinal plant panels and chart dealing with information about health and hygiene.

Rajbhasha Hindi Week Celebration:

A Hindi week was organized from 14th to 21st Sept.,2002 at Hqrs.Office by Official Language Section of the Council. On this occasion, the programme taken up were debates (Vada-Vivad Pratiyogita), Essay Writing, and Quiz in which the staff actively participated.

III. TECHNICAL REPORT

A - AYURVEDA

1. Abbreviations used for Institutes/Centres/Units

S.No	Institutes/Centres/Units	Abbreviations
1	Central Research Institute (Ay.), New Delhi	CRID
2	Central Research Institute (Ay.), Bhubaneshwar	CRIBh
3	Central Research Institute (Ay.), Mumbai	CRIM
4	Central Research Institute (Ay), Patiala	CRIP
5	Central Research Institute (Ay), Cheruthuruthy	CRICh
6	Central Research Institute (Ay.), Kolkata	CRIK
7	Central Research Institute (Ay.), Lucknow	CRIL
8	Central Research Institute (Ay.), Gwalior	CRIG
9	Central Research Institute (Ay.), Jaipur	CRIJ
10	Regional Research Institute (Ay.), Patna	RRIP
11	Regional Research Institute (Ay.), Junagarh	RRIJu
12	Regional Research Institute (Ay.), Trivandrum	RRIT
13	Regional Research Institute (Ay.), Itanagar	RRII
14	Regional Research Institute (Ay.), Guwahati	RRIGu
15	Regional Research Institute (Ay.), Gangtok	RRIG
16	Regional Research Institute (Ay.), Mandi	RRIM
17	Regional Research Institute (Ay.), Jammu	RRIJ
18	Regional Research Institute (Ay), Jhansi	RRIJh
19	Regional Research Institute (Ay.), Nagpur	RRIN
20	Regional Research Institute (Ay.), Vijayawada	RRIV
21	Regional Research Institute (Ay.), Bangalore	RRIB
22	Regional Research Institute (Ay.), Tarikhet	RRITa
23	Regional Research Institute (Ay.), Pune	RRIPu
24	Indian Institute of History of Medicine, Hyderabad	IIHMH
25	Captain Srinivasa Murthy Drug Research Institute for Ayurveda, Chennai	CSMDRIAC
26	Dr.A. Laxmipati Research Centre for Ayurveda,VHS,Chennai	ALRCAC
27	Regional Research Centre (Ay.), Hastinapur	RRCH
28	Mobile Clinical Research Unit, Jamnagar	MCRUJ
29	Ayurveda Research Unit, NIMHANS, Bangalore	ARUB
30	Clinical Research Unit (Ay.), Kottakal	CRUK
31	Clinical Research Unit under F.W.R.P., Ahmedabad	CRUFA
32	Pharmacological Research Unit under FWRP, Jamnagar	PhRUFJ
33	Tribal Health Care Research Project, Car Nicobar	THCRPCN
34	Drug Standardisation Research Project, Jamnagar	DSRPJ
35	Amchi Research Unit, Leh	ARUL
36	Ayurveda Chikitsa Kendra, Safdarjung, New Delhi	ARUS

2. CLINICAL RESEARCH PROGRAMME

The therapeutic application is the main objective of any bio-medical research. Thus, it is considered prominent among the different types of medical research, its importance is further heightened with respect to Ayurveda because it is largely based on clinical observations.

The Clinical Research studies on Tamaka Swasa (Bronchial asthma), Parinamasula (Duodenal ulcer), Grahani Roga (Malabsorption syndrome), Kamala (Jaundice), Arsha (Piles), Bhagandara (Fistula-in-ano), Mutrasmari (Urinary calculi), Madhumeha (Diabetes mellitus), Vyanabala Vaishamya (Hypertension), Medoroga (Lipid disorders), Manodvega (Anxiety neurosis), Manas Mandata (Mental retardation), Apasmara (Epilepsy), Pakshaghata (Hemiplegia), Pangu (Paraplegia), Gridhrasi (Sciatica), Amavata (Rheumatoid arthritis), Timira Roga (Error of refraction), Kitibha (Psoriasis), Visama-jvara (Malaria) and Slipada (Filariasis) have been conducted during the reporting period. The hospitals functioning under the Council provided medical aid to 4,53,647 patients at OPD level and admitted 2,201 patients in IPD. The detail of therapies, participating Institutes/Centres/Units, total number of cases studied and the results are provided in the forgoing pages.

(a) Clinical Therapeutic Trials

APASMARA (Epilepsy)

Clinical trials on Apasmara (Epilepsy) were conducted at CRI (Ay.), Delhi and ARU, Bangalore. A total number of 12 cases have been studied. The following table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: APASMARA

S. No.	Therapy	Instt./Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Vachadi Yoga (Vaca Brahmi Ghana Satwa).	CRID ARUB	11 1	1 -	2 1	- -	2 -	6 -
	Total		12	1	3	-	2	6

ARSHA (Piles)

Clinical trials on Arsha (Piles) were conducted at CRIs: Gwalior, Kolkata, New Delhi, Mumbai, Bhubaneshwar & Lucknow; RRC, Hastinapur; RRIs: Patna, Jammu, Mandi and Bangalore. A total number of 695 cases have been studied adopting different therapeutic

approaches. The following table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: ARSHA

S. No.	Therapy	Instt/Centre/Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Kankayan Vati, Triphala Churna at bed time + Kashi-shadi Taila locally	CRIBh	39	2	-	-	-	35
		CRIL	46	16	14	-	-	16
		CRIG	27	-	3	10	-	14
		CRIK	49	14	21	3	1	10
		CRID	38	15	15	4	2	2
		CRIM	63	10	13	4	-	36
		RRCH	41	11	4	21	5	-
		RRIP	12	3	4	1	-	4
		RRIJ	10	8	-	-	-	2
		RRIM	25	-	19	5	-	1
		RRIB	18	5	7	-	-	6
2.	Kankayan Vati + Kravyadi Rasa Abhyarishta and Jatyadi Taila locally	CRIG	35	34	11	12	1	11
		CRIK	105	5	43	10	-	18
		CRID	29	7	15	5	3	1
		CRIM	64	6	14	5	-	38
		RRCH	17	3	4	6	1	
		RRIP	12	15	7	-	-	2
		RRIJ	25	1	8	-	-	2
		RRIM	22	2	13	7	-	1
		RRIB	18	-	6	-	-	10
	Total		695	157	223	93	13	209

AMAVATA (Rheumatoid arthritis)

Clinical trials on Amavata (Rheumatoid arthritis) were conducted at CRIs: Mumbai, Gwalior, Jaipur, Cheruthuruthy, Kolkata, Patiala, Lucknow, Delhi, Bhubaneshwar; RRI, Mandi, Trivandrum, Vijaywada, Nagpur, Jhansi, Junagadh, Jammu and Itanagar A total number of 487 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following table

GRIDHRASI (Sciatica)

Clinical trials on Gridhrasi (Sciatica) were conducted at CRIs: Cheruthuruthy, Delhi, RRIs: Jhansi, Patna & Itanagar. A total number of 76 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following table summarizes the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: GRIDHRASI

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Hingu Triguna Taila	CRICh	20	6	9	2	1	2
		CRID	8	-	1	-	-	7
		RRII	6	1	3	-	1	1
		RRIP	11	-	3	6	-	2
		RRIJh	7	2	3	2	-	-
2.	Pancakarma Chikitsa: Snehapana (Dashmoola Bala Taila), Sveda (Vashpa) Virechana (Eranda Taila), Samsarjana and Vasti (Vaitharana)	CRICh	19	4	9	3	1	2
3.	Hingu Triguna Taila, Nirgundi Patra Pindasveda	RRII	5	1	2	1	-	1
	Total		76	14	30	14	3	15

KITIBHA (Psoriasis)

Clinical trials on Kitibha (Psoriasis) were conducted at CRIs: Patiala, Bhubaneshwar, Cheruthuruthy, RRIs: Junagarh, Trivandrum & Jammu; RRC, Hastinapur. A total number of 129 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following table summarizes the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: KITIBHA

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Arogyawardhani, Kaishore Guggulu and Chakramarda Taila local applicaion	CRIP	18	6	8	2	-	2
		CRIBh	11	3	6	2	-	-
		RRIJ	6	3	1	-	-	2
		CRICh	3	-	2	1	-	-
		RRIJu	3	-	1	1	-	1
		RRCH	29	4	5	8	4	8

2.	Panchanimba Lauha churna Kamadudha Rasa and Haridra Khanda	CRIP CRI Bh RRIJ	11 13 8	2 1 2	1 8 4	2 2 -	- - -	6 2 2
3.	Snehapana (Mahatikta Ghrita) Svedana (Mridu) Vamana (Mild), Samsarjana Rasayana (Bhallataka) Prayoga	CRICh	12	2	4	1	-	5
4.	Panchanimba Lauha Churna, Kamadudha Rasa and Haridra Khanda	RRIT	15	-	4	2	1	8
	Total		129	23	44	21	6	35

TIMIRA ROGA (Error of refraction)

Clinical trials on Timira (Error of refraction) were conducted at CRI, Delhi. A total number of 50 cases have been studied. The following table summarises the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: TIMIRA ROGA

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Netra Bindu and Saptamrita Lauha alongwith Eye exercise.	CRID	50	10	14	21	5	-
	Total		50	10	14	21	5	-

MANASA MANDATA (Mental retardation)

Clinical trials on Manasmandata (Mental retardation) were conducted at ARU,Bangalore. A total number of 16 cases have been studied . The following table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: MANASA MANDATA

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Vaca, Brahmi, Ghana Satwa (Equal parts)	ARUB	16	-	4	1	-	11
	Total		16	-	4	1	-	11

MADHUMEHA (Diabetes mellitus)

Clinical trials on Madhumeha (Diabetes mellitus) were conducted at CRIs: Delhi & Bhubaneshwar and RRI, Itanagar. A total number of 134 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following table summarises the details related to the line of approach and the number of cases studies together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: MADHUMEHA

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Tulsipatra, Bilva Patra, Nimba, Kalimirch	CRID RRII	25 17	1 2	2 1	- 1	6 3	16 10
2.	Karela, Jamun seed Ghanasatwa	CRID CRIBh RRII	25 54 10	2 2 1	12 5 -	5 12 1	6 - -	- 35 8
3.	Ayush-82	CRID	3	1	-	-	1	1
	Total		134	9	20	19	16	70

MANODVEGA (Anxiety neurosis)

Clinical trials on Manodvega (Anxiety neurosis) were conducted at CRIs: Lucknow & Patiala; RRI, Bangalore, ARU, Bangalore. A total number of 71 cases have been studied. The following table summarizes the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: MANODVEGA

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Medhya Rasayana (Vaca, Brahmi Ghana Satwa in equal parts)	CRIL CRIP RRIB ARUB	8 33 25 5	2 6 17 -	1 17 7 2	- 6 - -	- 4 1 -	5 - - 3
	Total		71	25	27	6	5	8

MUTRASMARI (Urinary calculi)

Clinical trials on Mutrasmari were conducted at CRI, Delhi; RRIs: Trivandrum, Jammu & Itanagar. A total number of 86 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: MUTRASMARI

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Pashana Bheda, Goksuru Kwatha, Ghana Satva	CRID	20	3	8	6	2	1
		RRIT	12	2	1	2	-	7
		RRIJ	14	7	2	1	-	4
		RRII	4	2	1	1	-	-
2.	Paiash Kshar	CRID	22	3	7	5	5	2
		RRIT	3	-	-	-	2	1
		RRIJ	4	3	-	-	-	1
		RRII	7	4	2	-	-	1
	Total		86	24	21	15	9	17

MEDOROGA (Lipid disorders)

Clinical trials on Medoroga (Lipid disorders) were conducted at CRIs: Lucknow, Patiala, Kolkata, Delhi & Mumbai; ALRCA, Chennai; RRI, Jammu. A total number of 194 cases have been studied adopting single therapeutic approach. The following table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: MEDOROGA

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Vaca & Katuki in equal parts	CRIL	30	8	6	6	-	10
		CRIP	75	5	16	9	-	45
		CRIK	25	4	-	9	2	10
		CRID	27	5	9	8	2	3
		CRIM	10	1	4	1	1	3
		ALRCAC	13	4	5	-	-	4
		RRIJ	14	8	3	-	-	3
	Total		194	35	43	33	5	78

PAKSHAGHATA (Hemiplegia)

Clinical trials on Pakshaghata (Hemiplegia) were conducted at CRIs: Patiala, Cheruthuruthy, Delhi & Bhubaneshwar; RRI, Nagpur & ARU, Bangalore. A total number of 127 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: PAKSHAGHATA

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1..	Snehapana (Ksheerbala Taila), Svedana (Vashpa), Virecana (Eranda Taila), Sanasarjana, Vastikarma (Yogavasti), Dasmoola Kwatha for Nirooha and Ksheerabala Taila for Anuvasana; Nasya (Ksheerbala Taila).	CRICh CRID RRIN	29 11 11	4 2 1	11 3 4	7 2 4	2 2 –	5 2 2
2.	Dhanadanyanadi Kwatha with Ksheerbala Taila; Abhyanga (Ksheerbala Taila); Patrapotala Sveda with Ksheerbala Taila Virechana (Eranda Taila).	CRICh CRIBh RRIN ARUB	30 7 16 7	2 1 1 –	7 3 5 4	13 2 6 –	2 – – –	6 1 4 3
3.	Maha Vatavidhwansana Rasa, Dhanyamla Seka Virechana, Nashya (Ksheerbala Taila), Sirovasti (Ksheerbala Taila).	CRIP RRIN	1 15	– –	1 4	– 5	– 1	– 5
	Total		127	11	42	39	7	28

PANGU (Paraplegia)

Clinical trials on Pangu (Paraplegia) were conducted at CRI, Cheruthuruthy & RRI,Nagpur. A total number of 41 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: PANGU

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Snehapana (Dasmoola Bala Taila), Svedana (Vashpa), Virechana (Eranda Taila) Samsarjana and Yoga vasti (Nirooha-Dashmoola Kwatha and Anuvasana-Dashmoola Bala Taila)	CRICh RRIN	14 5	2 –	– 2	4 1	2 1	6 1

2.	Dashmoola Bala Kwatha alongwith Chandraprabha Vati Abhyanga (Dashmoola Bala Taila), Matra Vasti (Dashmoola Bala taila) and Physiotherapy	CRICh RRIN	17 5	2 1	4 1	5 1	4 1	2 1
	Total		41	5	7	11	8	10

PARINAMA SHULA (Duodenal ulcer)

Clinical trials on Parinamsula (Duodenal ulcer) were conducted at CRI, Bhubaneshwar, RRIs: Vijayawada & Jammu. A total number of 21 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following table summarises the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: PARINAMA SHULA

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Amalaki Rasayana	CRIBh	3	-	-	2	-	1
2.	Indukanta Ghrita Snehapana	RRIV	5	-	4	1	-	-
3.	Mahatikta Ghrita Snehapana	RRIV RRIJ	5 2	1 -	3 1	1 -	- -	- 1
4.	Satavari Madhu Yastighana Satwa Vati	RRIV	6	-	6	-	-	-
	Total		21	1	14	4	-	2

SLIPADA (Filariasis)

Clinical trials on Slipada (Filariasis) were conducted at CRI, Bhubaneshwar, RRIs: Patna & Vijayawada. A total number of 121 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: SLIPADA

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Kanchanar guggulu with Gokshuradi guggulu	CRIBh RRIP RRIV	18 10 30	3 3 6	8 3 11	3 4 6	- - -	4 - 7

2.	Slipadari Rasa, Punarnava churna kwath	CRIBh RRIP RRIV	19 8 36	4 2 8	6 3 14	5 3 7	- - 5	4 - 2
	Total		121	26	45	28	5	17

TAMAKA SWASA (Bronchial asthma)

Clinical trials on Tamaka Swasa (Bronchial asthma) were conducted at CRIs: Bhubaneshwar, Jaipur, Patiala; RRIs: Patna, Vijayawada & Bangalore. A total number of 129 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: TAMAK SWASA

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Pipplai Vardhamana Ksheera Paka, Samira Pannaga Rasa	RRIV RRIP	16 15	3 1	6 4	3 1	1 -	3 9
2.	Shirisa Twak Kwatha	RRIV CRIP CRI Bh CRIJ RRIB	16 16 4 26 12	2 2 - 3 10	4 2 2 6 2	6 1 1 4 -	1 - - - -	3 11 1 13 -
3.	Shodhan Chikitsa	RRIV	24	10	12	1	-	1
	Total		129	31	38	17	2	41

VISAMA JVARA (Malaria)

Clinical trial on Visamajvara (Malaria) were conducted at CRI,Jaipur; ALRCA, Chennai, RRIs: Nagpur & Itanagar; RRC, Hastinapur. A total number of 354 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: VISAMA JVARA

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Ayush-64.	CRIJ	13	9	4	-	-	-
	Sphatik Bhasma, Guduchi Satva	ALRCAC	61	12	1	5	10	33
		RRII	27	18	3	-	-	6
		RRIN	10	-	3	3	2	2
		RRCH	103	15	52	27	9	-
2.	Saptaparna Ghanavati	RRIN	8	-	2	3	-	3
		CRIJ	17	10	6	1	-	-
		ALRCAC	93	4	-	3	8	78
		RRII	14	9	2	-	-	3
3.	Parijata Patra Ghanavati	RRIN	8	-	1	6	-	1
Total			354	77	74	48	29	126

VYANABALA VAISHAMYA (Hypertension)

Clinical trial on Vyanabala Vaishmaya (Hypertension) were conducted at CRIs: Bhubaneshwar, Kolkata, Patiala, Delhi, Gwalior, Mumbai; RRIs: Nagpur, Bangalore, Jhansi, Itanagar, Jammu & Junagarh; ALRCA, Chennai. A total number of 39 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: VYANABALA VAISHAMYA

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Combination of Vaca, Brahmi, Jatamansi and Arjuna equal parts	CRIBh	27	8	11	7	-	1
		CRIK	6	-	3	-	-	3
		CRIG	12	-	2	7	1	2
		CRIM	13	3	3	3		4
		CRID	22	3	9	3	1	6
		CRIP	46	4	8	7	1	26
		RRIJh	4	-	2	2	-	-
		RRIN	31	4	4	9	3	11
		RRIB	8	3	2	1	-	2
		RRII	36	9	11	3	2	11
		RRIJ	18	9	1	-	-	8
		RRIJu	4	1	-	1	1	1

2.	Chandra Prabha Vati Sveta Parpati and Punarnava Mandura with specific Ahar-Vihar	CRIBh	32	22	6	4	-	-
		CRIK	10	2	1	1	3	3
		CRIG	18	-	4	6	4	4
		CRIM	17	5	4	2	1	5
		RRIN	26	3	7	6	4	6
		RRIB	12	3	3	5	-	1
		RRII	32	11	5	3	1	12
		RRIJa	12	6	3	-	-	3
		RRIJu	3	3	-	-	-	-
		ALRCAC	7	1	4	-	-	2
Total			396	100	93	70	22	111

KAMALA(Jaundice)

Clinical Trials on Kamala (Jaundice) were conducted at CRI, Lucknow and RRC, Hastinapur. A total number of 66 cases have been studied adopting single therapeutic approaches. The following table summarises the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: KAMALA

S. No.	Therapy	Instt/ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Punarnava Mandur	CRIL	19	7	3	-	1	8
	Arogyavardhani	RRCH	47	13	4	29	-	1
	Total		66	20	7	29	1	9

(b) Disease groups, number of patients and participating projects under Clinical Research Programme

Sl. No.	Disease Group wise	Patients Nos.	Participating Project
1.	**Prana Vaha Srotas Vyadhi**		
	Tamaka Swasa	129	CRIBh,CRIJ,CRIP,RRIP,RRIV,RRIB
2.	**Annavaha Srotas Vyadhi**		
	Parinamasula	21	CRIBh,RRIV,RRIJ
	Grahani Roga	51	CRIG,RRIP,RRIG
3.	**Purish Vaha Srotas Vyadhi**		
	Arsha	695	CRIG,CRIK,CRID,CRIM,CRIBh,CRIL,RRIP,RRIJ,RRIM,RRIB, RRCH,
	Bhagandara	62	CRID,CRIM,CRIK
	Kamala	66	CRIL,RRCH
4.	**Mutra Vaha Srotas Vyadhi**		
	Mutrasmari	86	CRID,RRIT,RRIJ,,RRII
	Madhumeha	134	CRID,CRIBh,RRII
5.	**Rasa, Rakta, Vaha, Srotas Vyadhi**		
	Vyanbala Vaishayam	396	CRIBh,CRIK,CRIP,CRID,CRIG,CRIM,RRIN,RRIB,RRIJh,RRII, ALRCAC,RRIJ, RRIJu
6.	**Medo Vaha Srotas Vyadhi** Medo Roga	194	CRIL,CRIP,CRIK,CRID,CRIM,ALRCA,RRIJ
7.	**Vata Vyadhi**		
	Amavata	487	CRIG,CRIM,CRICh,CRIJ,CRIK,CRIP,CRIL,CRID,CRIBh,RRIT ,RRIM,RRIV, RRIJh,RRIJu, ,RRIJ,RRII
	Pakshaghata	127	CRIP,CRICh,CRID,CRIBh,RRIN,ARUB
	Pangu,	41	CRICh,RRIN
	Gridhrasi	76	CRICh,CRID,RRIJh,RRIP,RRII
8.	**Manovaha Srotas Vyadhi**		
	Manodvega	71	CRIL,CRIP,RRIB,ARUB
	Apasmara	12	CRID,ARUB
	Manas Mandata	16	ARUB
9.	**Netragata Vyadhi**		
	Timira Roga	50	CRID
10.	**Sarvadayagata Vyadhi**		CRIP,CRIBh,CRICh,RRIJu,RRIT, RRIJ,RRCH
	Kitiba	129	
11.	**Agataja Vyadhi**		
	Visamjwara	354	CRIJ,RRIN,RRII,ALRCAC,RRCH
	Slipada	121	CRIBh,RRIP,RRIV

(c) Statement Showing Numbers of Patients Attended at OPD and Admitted/ Discharge in I.P.D

S. No.	Name of Institute/Centre/Unit	O.P.D. Patients			I.P.D. Patients		
		New	Old	Total	Admitted	Dischrged	% of Bed Occupancy
1.	CRI, NEW DELHI	18436	23345	41781	305	286	42.32 %
2.	CRI, BHUBANESHWAR	8567	8517	17084	240	223	58 .00%
3.	CRI, MUMBAI	2682	8724	11406	183	189	45.02 %
4.	CRI, PATIALA	6769	5364	12133	99	100	21.12 %%
5.	CRI, CHERUTHURUTHY	13483	66628	80111	398	399	74.98 %
6.	CRI, LUCKNOW	7465	6548	14013			
7.	CRI, KOLKATA	6881	13280	20161	145	152	66.45%
8.	CRI, GWALIOR	5101	4642	9743	18	17	13.00%
9.	CRI, JAIPUR	17033	19134	36167	433	426	70.97 %
10.	RRI, JUNAGARH	2035	3340	5375	-	-	
11.	RRI, PATNA	6007	5963	11970	29	29	16.6%
12.	RRI, TRIVANDRUM	5671	25813	31484	56	51	67.7 %
13.	RRI,NAGPUR	5603	8412	14015	70	71	74.8 %
14.	RRI, BANGALORE	2803	6842	9645	-	-	-
15.	RRI, JAMMU	6080	10246	16326	-	-	-
16.	RRI,MANDI	12963	8441	21404	34	33	14.27 %
17.	RRI, GANGTOK	2819	2867	5686	-	-	-
18.	RRI, VIJAYAWADA	4499	12348	16847	118	107	92.62 %
19.	RRI, ITANAGAR	12125	9104	21229	-	-	-
20.	RRI, JHANSI	350	491	841	-	-	-
21.	RRC, HASTINAPUR	8851	10500	19351	-	-	-
22.	ALRCA, CHENNAI	1066	2881	3947	-	-	-
23.	ARU, BANGALORE	1775	1850	3625	-	-	-
24.	CRU, KOTTAKAL			0	73	70	24.00 %
25.	ACK, SAFDARJUNG, NEW DELHI	17614	11689	29303	-	-	-
	Total	1,76,678	2,76,969	4,53,647	2201	2153	

(d) Health Care Research Programme

TRIBAL HEALTH CARE RESEARCH PROGRAMME

This programme has been initiated with the aim to study living conditions of tribal people, folk medicines used by them, occurrence of medicinal plants in the area, propagation of knowledge about oral hygienes, prevention of diseases, use of common medicinal plants in the area and to extend medical aid at their door steps. This programme has been continued further by separate Tribal Units which were merged with the different CRI and RRI viz. CRI, Gwalior, RRI,Patna, RRI,Itanagar, RRI,Guwahati and THCRP,Car-Nicobar. The progress made during the year 2002-2003 on these programmes is discussed herewith.

Sl. No.	Name of the Instt./ Unit	Village covered	Population covered	No. of patients attended	Common diseases
1	CRI(Ay.), Gwalior	Gandhi Pura, Raika Pura	2361	614	Kasa, Swasa , Atisara, Kandu, Krimi Roga Sandhishoola, Pratishyaya,Vrana.
2.	RRI(Ay.), Patna	Jamui, Dumka	10500	1056	Swasa, Kasa. Krimi Roga, Udarashoola, Twak Roga, Amlapitta, Amavata.
3.	RRI(Ay.), Itanagar	Gruwardha, Bishnupura	500	972	Kasa,Tvak Roga, Udarshoola,Vatavyadhi, Swasa, Jvara, Atisara, Amlapitta, Atisara,Vyana Bala Vaishamya.
4.	RRI(Ay.), Nagpur	Bothali, Dahegaon, Sirsi, Amrul Guda, Bhendata Satara Bhosle	2385	623	Katishoola, Pratishyaya, Jvara, Kasa, Tvak Roga, Vatavyadhi, Swasa, Amlapitta, Parinamasula Krimi Roga , Udarashoola.
5	RRI, Guwahati	Tapsia Yogdal, Kataki Pura	5030	2179	Kasa, Swasa, Atisara, Kandu, Krimi Roga, Twaka Roga Sandhishoola, Pratishyaya, Vrana.
6.	THCRP, Car Nicobar	HQ	– 20776	1855	Pravahika, Swetapradara, Atisara, Kasa, Pratisyaya, Vyana Bala Vaishamya Aganimandya, Amavata, Amlapitta, Arsa. Tvak Roga. Vatavyadhi.
	Total	15	22,226	7,299	

3. MEDICO- ETHNO-BOTANICAL SURVEY PROGRAMME

Medico-Ethno- Botanical Survey is an important component of drug research, which provides basic information/data and authentic raw drug materials for initiating research studies like clinical/ phytochemical/ pharmacological/ pharmacognostical/drug standardisation etc. Various survey units functioning at the Regional Centres and Institutes have collected useful basic informations on all aspects covering various important phyto-geographic regions, states and districts including inaccessible rural and tribal areas. These data have been published in the medico-botanical monographs from time to time.

Presently only 8 Survey of Medicinal Plants Units at Bangalore, Guwahati, Gwalior, Itanagar, Jhansi, Nagpur, Tarikhet and Trivandrum are functional and altogether collected about 727.5 Kg. of raw drug material and supplied 98 samples to 30 identified Institutions.

Following is the work done at a glance during the year 2002-2003 by the Survey Units of the Council:

Important Work carried out:

No. of Survey Units	Tours conducted	No. of Plant species collected	Raw Drug Samples			No. of Institutions where supplied
			Collected	Supplied	Weight	
8.	10 survey + 42 local tours for collection of drugs	1141	156	98	727.5 kg.	30

Herbarium sheets mounted/prepared (including back log)	Herbarium sheets identified (Including back log)	Herbarium sheets accessioned	Museum specimen collected	Folk Medical Claims collected
1332	870	883	66	177

Paper Published/ Communicated	Technical Know-how imparted	Exhibition Arranged	Participation in Seminar/Workshop
20	-	1	7

The details of work carried out during the current year is as follows:

1. Regional Research Institute (Ay.), Bangalore (Karnataka)

The Survey Unit functioning under RRI(Ay.), Bangalore, has conducted one survey of medicinal plant tour collecting 161 species, belonging to 135 genera and 65 families. These specimens have been processed, mounted and identified. 20 kg. of raw drug was collected and supplied. In the herbarium section 197 specimens have been prepared (mounted) and 166 specimens were accessioned, 7 museum samples were added to the museum of the Institute. Survey Officer and staff of the Unit contributed 6 research articles. The Unit has participated in 3 workshops/seminars.

2. Regional Research Institute(Ay.), Guwahati (Assam)

The Survey Unit located at RRI(Ay.), Guwahati has undertaken 6 collection tours for collection of drugs and collected 165 kg. drugs (fresh weight) and supplied 33 kg. dried drug material to different institutes. It has also collected 3 folk claims and added 5 museum samples in the museum of the Institute.

3. Central Research Institute (Ay.), Gwalior (Madhya Pradesh)

The Survey Unit at CRIA, Gwalior, has conducted local tour for collection of raw drugs and collected 6 kg. of drug and supplied to different institutes of the Council. The first part of the monograph entitled "A Study of Herbal Wealth of Sarguja" has been completed and submitted to Hqrs Office. The final part of the monograph is under process of editing and computer feeding.

4. Regional Research Institute (Ay.), Itanagar (Arunachal Pradesh)

The Survey Unit located at RRI, Itanagar has undertaken one survey tour and 14 collection tours. Collected 175 plant specimens belonging to 140 genera and 94 families. Besides this, 63.5 kg. of raw drug were collected and supplied. Germ Plasm material (seed) of two plants were supplied to NBPGR, Pusa, New Delhi, for Gene Bank. The scientist of the Institute have published three research papers and attended two workshops/seminars.

5. Regional Research Institute (Ay.), Jhansi (Uttar Pradesh)

The Survey Unit located at RRI (Ay.), Jhansi has undertaken local survey tours and collected 180 kg. of fresh drug. The Institute has supplied a total of 290 kg. drugs to various Institutes of the Council. 150 kg. fresh raw drug have been collected/received from the garden of the institute, and processed.

6. Regional Research Institute (Ay.), Nagpur (Maharashtra)

The Survey Unit located at RRI (Ay.), Nagpur, conducted two survey tours collecting 108 plant specimens for herbarium and 55 folk claims. 8 museum samples were also collected for the museum of the Institute. 3 collection tours were also conducted and 62 kg. of raw drug were collected for supply. Monograph on "Melghat Forest Division" is under review.

7. Regional Research Institute (Ay.), Tarikhet (Uttaranchal)

The Survey Unit, RRI (Ay.), Tarikhet has undertaken two survey tours and collected 177 plant species. 30 raw drug weighing 109 kg. (fresh) were also collected and supplied to different organizations. The scientist of the Institute has published 6 research papers.

8. Regional Research Institute (DR), Trivandrum (Kerala)

The Survey Unit, RRI, Trivandrum has conducted one survey tour and collected 84 plant specimens and 5 folklores. Total 25 raw drugs weighing 25 kg. have been collected and supplied to different institutes. Identification of 58 specimens and accessing of 252 specimens were also done in the Herbarium Section. 14 samples were added to the Museum. Scientist of the Institute have published one research article and attended one seminar/workshop.

Central Herbarium and Museum at CCRAS's Hqrs.Office, New Delhi

During the reporting period Central Herbarium and Museum was maintained. This section has been arranging exhibitions in different parts of the country. In India, Swasthya and Health Mela, Mumbai, Dharamshala, Chamba, Tikamgarh, Jodhpur, Hyderabad, Katihar and New Delhi; Kashmir Vision- Srinagar; Eye Camp- Punjabi Bagh, New Delhi; Arogya – New Delhi and Chandigarh; World Ayurveda Congress – Kochi and First Pravasi Bharatiya Divas, New Delhi, were arranged to appraise the scientific community and general public about the role of Ayurveda and Siddha in public health.

4. CULTIVATION OF MEDICINAL PLANTS

The Council has taken up cultivation of medicinal plants of Ayurveda and Siddha at five herbal gardens located at Pune (Maharashtra), Mangliawas near Ajmer(Rajasthan), Itanagar (Arunachal Pradesh), Jhansi (Uttar Pradesh) and Tarikhet (Uttaranchal), for small scale, experimental and large scale cultivation of some important medicinal plants of Ayurveda and Siddha.

The Medicinal Plants Garden at Pune is a demonstrative/representative garden together with research activities on Tissue Culture. At the Guggulu Herbal Farm, Mangliawas; an endangered species Guggulu *(Commiphora wightii* (Arn.) Bhand.), a plant of arid and semi arid region has been cultivated on large scale with a view to conserve/domesticate and procurement of the oleo-gum-resin by evolving safe, suitable methods for tapping gum. In the herbal garden located at Ranikhet, the Council has successfully domesticated Saffron (Kumkum) and evolved techniques for its propagation.

1. Regional Research Institute (Ay.), Pune (Maharashtra)

The Institute harbours 19.5 acres of land out of which about 15 acres have been developed and being utilized for demonstrative garden and cultivation of medicinal plants. Over 360 species of medicinal and economic important plants are being maintained which include 132 taxa from the Ayurvedic Formulary of India, Part-I. Large scale plantation of Gambhari, Arjuna, Bilva, planted earlier, are being maintained. Nine herbaceous species of medicinal plants of Ayurvedic importance, i.e. Brahmi, Shatavari, Shalaparni, Brihati, Danti, Vasa, Mandookparni, Kumari and Patha have been planted systematically in the garden beds, besides 79 Guggulu plants. Steps were taken for *ex situ* conservation and plantation of certain threatened species like Sarpagandha, Ashoka, Raktachandana, Chandana (Sweta) and Patha etc.

Out of garden's produce 73.61 kg. of dried crude drugs belonging to 55 species were supplied to various Units/Institutions functioning under the Council and 29.45 kg. seed material to Gene Bank of NBPGR, New Delhi. Fruit and seed samples of 57 species of medicinal plants have been collected alongwith 27 species for herbarium. The Institute earned Rs.37,908/- from sale of Council's Publication and sale of Guggulu and other plant's parts.

Guidance and technical know-how in respect of cultivation of medicinal plants were imparted free of cost to a number of interested individuals and Institutions.

2. Guggulu Herbal Farm, Mangliawas (Rajasthan):

The Guggulu Herbal Farm, Mangliawas functioning under CRI(Ay.), Jaipur is located about 26 kms. from Ajmer. The farm is spread over an area of 142 acres and is mainly devoted for the conservation, cultivation and propagation of an endangered and precious

medicinal plant "Guggulu" (*Commiphora wightii* (Am.) Bhand). The cultivation practice includes studies in respect of growth behaviours and other experimental studies on various aspects to tapping gum of Guggulu are being carried out in the plantation area of about 40 acres of land.

At present 14,817 Guggulu plants are growing in the Farm. Besides Guggulu, other plants of 69 species are growing wildly and some others species are being cultivated in small numbers, such as Neem, Langli, Babbul, Guduchi, Satavari, Kumari, Amlaki, Karanja, Lata Karanja and *Acacia senegal* etc.

During this period, 2850 Guggulu cuttings were planted in beds, out of which 1322 cuttings were sprouted. 1370 seedlings were also developed by sowing fruits in beds. 13.300 kg. of Guggulu gum was collected. 30 items of raw drugs were supplied during the period to various Institutes under the Council and Hospital Section of the Institute. An amount of Rs.87,875/- was earned during the period by sale of rooted cuttings and gum of plant. Guggulu 7 kg. Guggulu gum was supplied to Regional Research Institute (Ay.), Vijaywada and 39.5 kg. of gum is in stock at present.

3. Regional Research Institute, Itanagar (Arunachal Pradesh):

The medicinal plant garden at the Institute, consists/occupied 17 acres of steep slopes and ditches. About 9.6 acres of land is presently devoted to cultivation of medicinal plants. A total 200 species of plants of Ayurvedic importance are growing in the garden. The entire plantation also represents 112 species of medicinal plants mentioned in Ayurvedic Formulary, Part-I.

During the current year 28 species were planted in the garden. 27 kg. of raw drugs for the uses in OPD of the Institute and other organizations were procured . Seeds of medicinal plants were supplied to NBPGR, New Delhi, under the National Plant Germplasm Collection Programme.

Under the projects namely I) Central Scheme of Cultivation of Medicinal Plants and ii) National Medicinal Plant Board of Department of ISM&H of the Ministry, some important medicinal plants such as Ashoka, Arjuna, Gambhari, Guduchi, Shyonoka, Tulsi, Bilva, Satavari, Pippali and Chitraka etc. were planted and also being raised for nursery.

4. Regional Research Institute (Ay.), Jhansi (U.P.):

The Regional Research Institute, Jhansi has undertaken cultivation of important Ayurvedic medicinal plants on experimental basis for demonstrative purposes. Presently the cultivation of medicinal plants programme is confined to about 15 acres of land. The garden has about 200 medicinal plants. The entire plantation include about 50 medicinal species mentioned in Ayurvedic Formulary, Part-I. Plants like Guggulu, Sarpagandha, Ghrit kumari, Kalmegh, Vasa, Shalparni, Chitrak, Tulsi and Tulsi bhed, Sweta Gunja, Khas, Tejpatra,

Chopchini, Jyotismati, Brahmi, Priyangu etc. have been successfully grown. Some creepers and climbers of important plants like *Argyriea* species, Trivit, Prasarini, Patha, Guduchi, Bimbi etc. were also grown successfully.

About 150 kg of dried and fresh material in the form of different parts of the plants, i.e. seed, flower, fruit, stem, bark and whole plants have been collected as an output of garden which were supplied to the drug depot of the Centre for onwards supply. A total of 290 kg. of raw drugs were supplied to various institutes of the Council.

5. Regional Research Institute (Ay.), Tarikhet (Uttaranchal):

The Institute's herbal garden at Ranikhet is situated at an altitude of 1700 meter which is confined to about 2.5 acres of the land. It has about 215 medicinal species mostly of Ayurvedic importance cultivated for demonstrative purposes. Besides these, some other plants are taken up for experimental trial for their acclimatization and adaptability. A total 63 plant species introduced in the garden. The Institute has also another small medicinal plant garden "Vanaushadhi Vatika" at Chamma in Tehri District. At present, 115 medicinal plants were being grown and maintained, seed and seedlings of some medicinal plants are collected from forest areas (60 spp.) have been introduced in Vatika during the reporting period.

Experimental Cultivation of Saffron:

In order to explore the possibilities of Saffron (*Crocus sativus* Linn.) cultivation in Uttaranchal hills, CCRAS started experimental trial on propagation, multiplication and cultivation of saffron at the garden of its research station. Total area of the land is 1.53 acre, presently under cultivation of Saffron. Saffron was harvested from October - November and 4750 flowers were collected, which yielded 36.2 gms. Saffron.

****

5. MUSK DEER BREEDING PROGRAMME

The Chief Wild Life Warden, U.P. in 1974, permitted to capture of Musk Deer from Wild for breeding of animals and collection of musk for research without sacrificing the animal. Musk is a life saving drug used in many Ayurvedic formulation viz. Mrigamadasav, Kasturi Bhairava Rasa, Kasturi Modak, Vasant Kusmakar Rasa etc.

Presently, there are 22 musk deer with oldest female is approx. 18 year old and the youngest of female is 3 years. Similarly, the oldest male is of 15 years of age and youngest of male is 2 years. The Committee for the purpose of Control and Supervision of Experiments on Animals (CPCSEA), Ministry of Environment and Forest, Govt. of India, have already registered (No.707/a/CPCSEA/03) the musk deer farm.

6. PHARMACOGNOSY RESEARCH STUDIES

The Pharmacognostical Research Units of CCRAS located at Kolkata, Pune, Bangalore have taken up the Pharmacognostical investigations of the following drugs widely used in Ayurveda which is useful in evolving the pharmacopoeial standards for single drugs besides helping in overcoming the controversy and confusion that exists regarding their proper identity/authenticity due to synonyms.

1. Annanas (*Ananas comosus* Merr.); Fruit
2. Phenila (*Sapindus trifoliatus* Linn.); Fruit
3. Rajadani (*Manilkara hexandra* (Roxb.) Dub.: Leaf, root, stem and stem bark
4. Tinisha (*Dalbergia oogenensis* Roxb.) ;Stembark
5. Trapusha (*Cucumis sativus* Linn.) ;Fruit
6. Dravanti (*Jatropha glandulifera* Roxb.) ;Whole Plant
7. Tintidica (*Rhus succedanea* Linn.) : Gall (Market sample)
8. Takkola (*Illicium verum* Hook): Fruit
9. Haridra (*Curcuma longa* Linn.) ;Rhizome
10. Amalaki (*Emblica officinalis* Gaertn.); Fruit

The studies covered details of the drugs in respect of the origin, botanical identification and correct determination of Ayurvedic nomenclature including synonym together with properties, botanical description and key characters. This comprehensive task includes study of different facets, such as morphology of drug parts including the sensory characters, cell and tissue structures, both qualitative and quantitative, cell contents, preliminary phytochemical analysis, thin layer chromatographic studies, detection of the chemical constituents like alkaloids, steroids and terpenoids, phenols, tannins, saponins, flavanoids, proteins etc. fluorescence analysis, physical constant values including ash and extractive values, dry matters and moisture contents etc. The analytical studies of the powdered drug which is considered to be of immense help in detection of adulterants was also carried out.

Units of the Council located at Kolkata, Delhi, Chennai, Pune and Lucknow have laid down pharmacopoeial standards for about 20 single plant drugs under "Central Scheme for evolving Pharmacopoeial Standards of ISM drugs".

7. PLANT TISSUE CULTURE

Experimental studies on Plant Tissue Culture were continued by Plant Tissue Culture Laboratory at JNAMPG&H, Pune, currently known as RRI(Ay.), Pune. In order to standardize the ***in vitro*** propagation techniques, rapid multiplication, seed germination and other chemical studies on the following three important Ayurvedic medicinal plants were carried out.

1. Shalaparni (*Desmodium gangeticum* (Linn.) DC.):

Leaf, cotyledonary nodes and nodal segments of *in vitro* grown plants of Shalaparni were used as explant for tissue culture studies. Leaf explants inoculated on MS + BAP (1mg./l) + Kn (2mg./l) + IAA (1mg./l) and MS + BAP (2 mg./l) + Kn (1, 1.5 and 2 mg./l) + IAA (2mg./l) in different concentrations showed callus development and shoot regeneration (1-2 shoots per explant) in 7-12 days.

2. Patha (*Cissampelos pareira* Linn.):

Nodal segments from naturally growing plants were inoculated on MS medium supplemented with BAP, IAA and IBA (1-4 mg./l) singly and in combinations, alongwith 0.1% PVP. Regeneration of multiples shoots (5-8 shoots) were observed after 15-20 days. Rooting response was observed after 20-25 days, when *in vitro* grown shoots were inoculated on ½ MS + IAA (1 to 4 mg./l). Further investigations are in process.

3. Trivrita (*Operculina turpethum* (Linn.) Silva Manso.):

Experimental studies on *in vitro* regeneration of *Operculina turpethum* were carried out using apical buds and nodal segments as explant.

Nodal segments and apical buds inoculated on full strength and half strength MS media supplemented with Kn, BAP and IAA in different concentration, singly and in combination. Regeneration of multiple shoots from apical buds and single shoots from nodal segments were observed. In rooting trials 100% rooting response was observed in shoots inoculated on ½ MS and MS plain as well as on media supplemented with NAA, IBA and IAA.

8. DRUG STANDARDISATION RESEARCH PROGRAMME

Standardisation of raw drugs, manufacturing processes and finished products play an important role in efficacy of Ayurveda and Siddha drugs/formulations. Standardisation of compound formulations comprising of multi-herbal drugs/herbomineral components and various classes of drug/formulations like Bhasma, Asava and Arista and Rasa Yogas etc. is very difficult task. The Council has taken up the task of laying down standardisation of single as well as compound formulations and the method of manufacture through its Drug Standardisation Units located at Chennai, Kolkata, Bangalore, Trivandrum, Lucknow and Jamnagar. Efforts are also being made to undertake studies on safety of herbal drugs and compound formulations as per WHO guidelines. For the purpose some of the important parameters incorporated in the format are TLC profile, HPTLC finger printing, determination of microbial level and heavy metal content. The above tests have already been started at CSMDRIA, Chennai.

The Department of ISM & H, Ministry of Health and F.W., Govt. of India has also sanctioned five research projects under Central Scheme for Developing of Pharmacopoeial Standards of ISM drugs to the Council's Drug Standardisation/Pharmacognosy Units located at Chennai, Delhi, Pune, Kolkata and Varanasi. In all 33 single drugs /compound formulations have been standardized/reports revised as per format of Ayurvedic Pharmacopoeia Committee by the above Units of the Council.

Different batches of Bal Rasayan, Ark Pudina, Ark-Ajwain, Kshir Bala Taila and Subhagya Sunthi manufactured under RCH Programme of Department of Family Welfare and supplied by Hospital Services Consultancy Corporation, Govt. of India have been tested in the different laboratories of Council located at Delhi, Chennai, Kolkata and Pune. A Total of 455 batches of formulations have been tested.

Brief of work done during the year is as follows:

1. Standardisation of Single Drugs:

Plant Origin

Kodrava	*Paspalum scrobiculatum* Linn.	RRI, Trivandrum
Kusumbha	*Carthamus tinctorius* Linn	DSRU, Jamnagar
Ghonta	*Zizyphus xylopyrus* Willd.	-do-
Elavaluka	*Prunes arium* Linn.	CRI, Lucknow
Karinkara	*Carissa carandus* Linn.	-do-
Riddhi	*Habenaria intermedia* D.Don.	-do-
Rsabhak	*Microstylis wallichii* Lindl.	-do-

Tinisha	*Ougenia dalbegioides* Benth.	RRI, Bangalore
Trapusha	*Cucumis sativus* Linn.	-do-
Dravanti	*Jatropha glandulifera* Roxbh.	-do-
Takkola	*Illicium verum* Hook F.	-do-

Mineral Origin:

Vid Lavan	CRI, Lucknow
Samudra Lavan	-do-
Aubhid Lavan	-do-
Saindhava Lavana	-do-
Sauvarchala Lavana	-do-
Naga	RRI, Bangalore
Vimala	-do-
Yashada	-do-
Godanti	-do-
Mandura	-do-

Animal Origin:

Sukti	RRI, Bangalore

2. Standardisation of Formulations:

Bhasma:

Mahisha Sringa Bhasma	RRI, Bangalore
Shankhanabhi bhasma	-do-
Shukti Bhasma	-do-

Churna:

Vaiswanar Curna (2 samples, prepared as per Ashtanga Hridaya and AFI)	RRI, Trivandrum
Sringyadi Curna	-do-
Samangyadi Curna	-do-
Bhaskar Lavan Curna	-do-
Samaskara Curna	CSMDRIA, Chennai
Sarasvata Curna	-do-

Other **Formulations:**

Gandhak Rasayan	DSRU, Jamnagar

3. **TLC/HPTLC of Single/Compound Formulation Studies:**

Sala	*Shorea robusta* Gaertn.f.	CSMDRIA, Chennai
Kantakari	*Solanum surattense* Burm.f.	-do-
Sirish	*Albezia lebbeck* Benth	-do-
Bhuamlaki	*Phylanthus amarus*	-do-
Pippalyadi Yoga	-	-do-
Samasarkara Curna	-	-do-
Saraswat Curna	-	-do-

4. **Procurement of Raw Drugs/Development of SOP/Preparation and Standardisation of formulation for the Project "Feasibility of Introducing ISM at PHC level".**

- **Quality Assessment of Raw Drug**: For Preparation of RCH drugs quality assessment of several sample of 35 raw drugs to be used in the formulation, were subjected to quality assessment analysis and the best drug to meeting the pharmacopoeial standards were procured. Besides these samples of honey, Gur, Mukta Sukti Bhasma, Mandura Bhasma etc. were also tested for quality assessment.
- **Development of SOP for different formulations:** SOP for various categories of drugs like tablets, syrup, Avaleha, Leham and ointment etc. were developed for preparation of 15 formulations.
- **Preparation and Standardisation of Formulations:** Following drugs were prepared by the Council's Pharmacy at CRI (Ay.), Kolkata, as per SOP developed and standardised:

Ayush KVM Syrup	CRI, Kolkata; CSMDRIA, Chennai
Ayush VRG Tablet	CRI, Kolkata
Ayush ADE Tablets	CRI, Kolkata
Ayush PK Avaleha	CRI, Kolkata, CSMDRIA, Chennai
Ayush GC tablets	CRI, Kolkata
Ayush B.R.Leham	CRI, Kolkata
Ayush LND Tablets	CRI, Kolkata, CSMDRIA, Chennai
Ayush AG tablets	CRI, Kolkata, CSMDRIA, Chennai
Ayush UT Powder	CRI, Kolkata, CSMDRIA, Chennai
Ayush KD Powder	CRI, Kolkata, CSMDRIA, Chennai
Ayush SS granule	CRI, Kolkata, CSMDRIA, Chennai

Ayush PG tablets	CRI, Kolkata, CSMDRIA, Chennai
Ayush BC tablets	CRI, Kolkata, CSMDRIA, Chennai
Ayush SDM tablets	CRI, Kolkata, CSMDRIA, Chennai

5. **Other Formulations:**

Srishadi Kwatha Churna	CSMDRIA, Chennai
Swasakesari powder (2 batches)	CSMDRIA, Chennai
Bal Rakshak Ghutti	CSMDRIA, Chennai
Ayush Ghutti (5 batches)	CSMDRIA, Chennai
Ayush B.L.Oil	CRI, Kolkata

6. Testing for total Microbial load and presence of pathogenic organisms:

41 single drugs/compound formulations have been tested for the presence of microbial load and presence of pathogenic organisms.

CSMDRIA, Chennai

7. Drug/Extract Prepared and supplied for Pharmacological/Clinical studies:

Nimbathiktham	35120 capsules of 200 mg.	RRI, Trivandrum
Deodorated Neem Oil	1.74 litres	-do-
Extract of *Costus specious*	16 gm.	-do-
Extract of *Butea monosperma*	125 gm.	-do-
Extract of *Cocculus hirsutus*		CRIs: Kolkata. Delhi

Benzene and 90% aqueous alcoholic extract of *Bergenia ligulata*	CRI, Delhi
Benzene and 90% aqueous alcoholic extract of *Bergenia ciliata*	-do-
Benzene and 90% aqueous alcoholic extract of *Pterocarpus santalinus*	-do-
Benzene extract of *Psoralea corylifolia*	-do-

8. Isolation of Marker Compounds:

The plant investigated during the period (2002-2003) are given below:

Sl.No.	Scientific Name	Sanskrit/Regional Name
1.	*Vanda roxburghii* R.Br.(Orchiadaceae)	Rasna
2.	*Murraya koenigii* Spreng (Rutaceae)	Surabhinimba
3.	*Cajanus cajan* (Linn.) Millsp. (Leguminaceae)	Arhar
4.	*Clerodendrum infortunatum* Linn. (Verbenaceae)	Bhant
5.	*Swertia chirata* Buch.Ham. (Gentianaceae)	Chirayita

The above mentioned five plants have been chemically investigated and the following marker compounds were isolated and identified by detailed spectral analysis (UV, IR, PMR and CMR).

Sl. No.	Name of the plant and parts investigated	Structure of the marker compound present therein
1.	*Vanda roxburghii (Whole plant)* Rasna	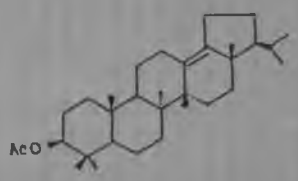 Bochmeryl acetate
2.	*Murraya koenigii* (Seeds) Surabhinimba	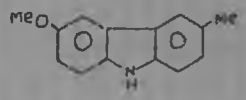 Koenimbine
3.	*Cajanus cajan* (Root) Arhar	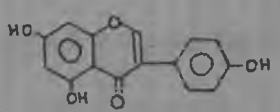 5,7,4'-Trihydroxy isoflavone

4. *Clerodendrum infortunatum* (Leaves) Bhant

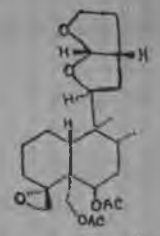

Clerodin

5. *Swertia chirata* (Whole plant) Chirayita

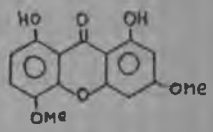

Swerchirin

9. Phytochemical Studies carried out on earlier allotted drugs:

i) Shalaparni (*Desmodium gangeticum* DC.): CSMDRIAC

Coarsely powdered plant material was extracted with n-hexane, chloroform and methanol successively by cold percolation method. Hexane extract was subjected to column chromatography over silica gel. Hexane eluates afforded a solid mass which showed Liberman – Burchard test for sterols. The sterol was purified by preparative TLC using Hexane : Benzene (4:1) as a mobile phase. Benzene-ethyl acetate (19:1) eluates gave a colourless solid identified as β-sitosterol by comparison with an authentic sample.

Chloroform extract was subjected to column chromatography over silica gel, chloroform-methanol (9:1) eluates afforded a crystalline compound which gave test for sterol and sugar. The compound was identified as β-sitosterol, β-D glycoside (m.p. 283°C) by Co-TLC with authentic sample.

The methanol extract was subjected to column chromatography over silica gel and ethyl acetate and methanol mixture eluates afforded a colourless compound and a flavonoid fraction. Characterization and purification of different fractions is under progress.

ii) Chinni (*Acalypha fruticosa* Forsk) CSMDRIAC

Coarsely powdered plant material was extracted with hexane, chloroform and alcohol successively in the cold. Ethyl acetate soluble portion of the alcohol extract on chromatography over silica gel afforded a colourless solid. The later was further purified by repeated chromatography and recrystallisation from acetone-hexane mixture, yielded a solid mass (m.p. 295 ^{0} C). The solid shows positive Salkowski test indicating presence of a triterpenoid. On the basis of spectral analysis, the compound was identified as 2α, 3β, 23-

trihydroxyolean – 12-en-28-oic acid which is arjunolic acid (Fig.1). This is the first report of its occurrence in this plant.

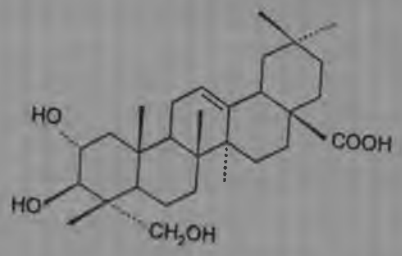

Fig.1

iii) Lodhra (*Symplocos spicata* Roxb.): **RRIT**

Stem bark was extracted in 85% aqueous ethyl alcohol under reflux and ethanol extract was concentrated and kept in a refrigerator for 48 hours. A pale yellow solid was obtained which gave test of flavonoid glycosides. From m.p., Rf values (Paper chromatography) and co-chromatography with an authentic sample, it was identified as rutin.

The water extract gave positive ninhydrin test showing presence of amino acids. It was subjected to two way ascending paper chromatography. After resolution of chromatogram and spraying with ninhydrin, eight amino acids, alanine, valine, serine, glycine, asparatic acid, arginine, leucine and glutamic acid were identified.

iv) Dhataki (*Woodfordia fruticosa* Kurz.): **RRIT**

Flowers were extracted in 85% ethyl alcohol and water separately. The ethanolic extract was concentrated and tested with ninhydrin. It showed the presence of free amino acids. The water extract was treated with ammonium sulphate to get the protein as white precipitate. It was hydrolysed with dil.sulphuric acid. The hydrolysate also gave positve ninhydrin test. By paper chromatography eight amino acids viz.Alanine, glycine, valine, serine, leucine, threonine, asparatic acid and glutamic acid were found to be present in free state and ten amino acids viz. alanine, glycine, valine, serine, leucine, threonine, aspartic acid, glutamic acid and arginine were found in the proteins. Three sugars viz. glucose, galactose and arabinose were also identified.

v) Pindava (*Gardenia gummifera* Linn.f.): **CSMDRIAC**

From the chloroform extract of gum of plant gardenin-A was isolated.

vi) Pashana bheda CRID

A. (*Bergenia cilliata* sternb.)

The marc obtained after extraction from benzene was dried and extracted with hot ethanol (90%) under reflux. Ethanol extract was filtered and concentrated under reduced pressure to give dark coloured semisolid mass. Percentage extractive value (90% aqueous ethanol) was calculated to be 18.8% (w\w). Ethanol extract was divided into two parts. One part was dried and sent for Pharmacological screening. Whereas, another half was refluxed with 200ml. of water for five hours and filtered through cotton. The aqueous extract thus obtained was further fractionated into benzene, ethyl acetate and ethyl methyl ketone soluble fractions.

Aqueous ethanolic extract of B.cilliata, was fractionated into benzene, ethyl acetate and ethyl methyl ketone soluble fractions. The mother liquor was kept in the refrigerator for more than six months. A sufficient quantity of white solid settled at the bottom of the flask. It was filtered and repeatedly crystallized with MeOH. Two compounds: A & B were separated and their melting points were determined, compound A, m.p.244-45^{0}C and compound B, m.p. 152-54^{0}C. Further work is in progress.

B. (*Bergenia ligulata* Engl.):

The marc was dried to remove benzene and extracted with hot ethanol (90% aq.) under reflux. The ethanol extract was filtered (Whatman No.3) and concentrated under reduced pressure to give dark coloured semisolid mass. The ethanol extract was refluxed with 150 ml. of water for 5 hours and filtered through cotton. The aqueous extract was fractionated by extraction with benzene, ethyl acetate and ethyl methyl ketone in succession. These fractions were concentrated under reduced pressure.

10. Patents: CRIK

Four process patents have been granted.

—.—

9. PHARMACOLOGICAL RESEARCH PROGRAMME

Studies on experimental animals constitute an important component of Pharmacological and Toxicological studies which play a very vital role either in the development of a new drug or in establishing an old claim or folklore. With these aims, 18 single drugs, coded drugs and compound formulations were studied by the Council through the Pharmacological Research Units located at Cheruthuruthy, Kolkata, Mumbai, Patiala and Trivandrum. A brief resume of these studies is as under:

1. Agnimanth (*Premna integrifolia* Linn.) CRIK

Drug (100 mg./kg.) treated albino rats showed significant convulsant effect.

Albino rats treated with 100 mg./kg. of the drug has no anxiolytic effect whereas rats treated with 200 mg./kg. dose shows moderate effect on the same.

2. Arlu (*Ailanthus excelsa* Roxb.) CRIK

During acute toxicity studies, the drug at a dose level of 10, 25, 50, 100 and 200 mg./kg. body weight, was administered intra-peritoneally to guinea pigs. Animal treated with 200 mg./kg. dose remained less active and died within 24 hours whereas other groups showed no mortality.

It exhibited insignificant effect during pentobarbitone hypnosis studies.

The drug showed significant effect at the dose of 100 mg./kg. body weight and potent activity in checking the intestinal motility in comparison to standard control.

The drug exhibited significant writhing effect on mice in comparison to the control at the dose level of 100 mg./kg.

During evaluation of locomotor activity in albino mice, the drug (dose of 25, 50, 100 & 200 mg./kg., *i.p.*) treated groups showed insignificant locomotor activity in comparison to control.

The drug was also evaluated for its anti-diarrhoeal property in albino rats of both the sexes. Castor oil induced diarrhoeal activity was compared with standard drug dyphenoxylate. The results shows that the drug has significant activity at the doses of 50, 100 mg/kg of body weight. However, no analgesic effect was observed.

CRICh

Neither aqueous extract nor decoction showed significant anti-inflammatory activity against carrageen induced hind paw oedema at dose levels of 500 & 1000 mg/kg body weight orally, in rats.

The decoction (100 and 500 mg/kg body weight, orally) did not show significant analgesic activity in mice.

Significant CNS effect was not observed on pentobarbitone induced necrosis in mice.

3. Ayush-64 (New Formulation) CRIK

Acute toxicity screening of the drug (10, 25, 50, 100 & 200 mg/kg, *i.p.*) to guinea pigs was carried out. The drug showed no mortality in comparison to control.

Ayush-64 (50 & 100 mg/kg, orally) showed no significant effect during pentobarbitone hypnosis studies.

The drug (50 mg/kg, *i.p.*) showed significant writhing effect on male albino mice.

Ayush-64 showed no significant analgesic activity at the doses of 25, 50, 100 & 200 mg/kg, orally in albino mice.

The drug at the doses of 25, 50 & 100 mg/kg, *p.o.* showed insignificant locomotor activity in albino mice.

CRIP

Ayush-64 in doses of 50-5000 mg/kg body weight had no adverse effect on rats.

4. Anti Stress Drug (ASD) - (A coded drug) CRIK

ASD (100 & 200 mg./kg. body weight, orally) showed no protection in comparison to control during convulsant activity studies.

Both the doses (100 and 200 mg./kg., orally) of ASD showed no effect on the anxiolytic activity with albino rats.

5. Experimental Myocardial Infarction CRICh

Shilajit, Vellakottam (*Saussurea lappa*), Ayurvedic Preparations I & II showed significant suppression of enzyme CPK. Ayurvedic Preparation II was found to be more effective than Ayurvedic Preparation I in Myocardial Infarction.

6. GVK (a Coded drug) CRIK

GVK showed no significant effect at the dose (50 and 100 mg./kg., orally) during pentobarbitone hypnosis studies.

GVK (50 mg./kg, *i.p.*) showed significant writhing effect on male albino mice as compared to control.

GVK at the dose of 25 mg./kg, *p.o.* showed significant enhanced locomotor activity in mice, while in the rats, the drug (25, 50 & 100 mg./kg, *p.o.*) exhibited insignificant enhanced locomotor activity.

GVK apparently showed no significant change in body weight on oral administration for 15 days treatment at the dose (30, 150 and 300 mg./kg. body weight, orally in mice). No mortality upto 300 mg./kg. There is no change in the weight of vital organ in comparison to control. During sub-chronic toxicity screening on rats at the dose of 25, 125 and 250 mg./kg. body weight, orally, no significant change in body weight was observed.

7. Hansapadi (*Adiantum lunulatum* Burm.) CRICh

Effect of decoction (500 & 1000 mg./kg. body weight) aqueous extract (500 and 1000 mg./kg. body weight) and alcoholic extract (100 and 500 mg./kg.body weight) on pentobarbitone hypnosis in mice was studied. The test drug did not showed significant effect on pentobarbitone induced hypnosis.

Decoction and aqueous extract showed significant antipyretic activity at the dose of 1000 mg./kg. body weight, whereas mild activity was observed in rats which received alcoholic extract.

Significant effect was not observed on the exploratory behaviour in mice.

During anti-depressant activity evaluation, significant difference was not observed between the test and control groups.

The test drug was screened for analgesic activity in rats. Aqueous extract (100 and 500 mg/kg. body weight, orally) did not show significant analgesic properties in rats when compared to the group which received distilled water.

8. Jamti Ki Bel: Chilahinta {*Cocculus hirsutus* (Linn.) Diels} CRIK

The root extract of the drug was subjected to Pharmacological screening but no anti-convulsant effect at the dose of 200 and 100 mg/kg. body weight and no significant effect with both the doses on anxiety were observed.

9. Jeerakadi Modak CRIK

During acute toxicity screening, Jeerakadi Modak at a dose of 2000, 1000, 500, 200 and 100 mg./kg. body weight was administered orally to healthy albino mice. No mortality was observed and drug is safe upto this dose limit.

The drug shows no significant effect on swim stress. Only in case of 200 and 100 mg./kg. body weight, treated groups of animals showed insignificant enhancement of immobility score.

No significant analgesic effect is shown by the drug at the dose level of 25, 50, 100 and 200 mg./kg. body weight orally.

10. Kutaja {*Holarrhena antidysentrica* Wall. (Stem bark)} CRIK

Acute toxicity studies of the drug at a dose level of 10, 25, 50, 100 and 200 mg./kg. body weight, *i.p.* to guinea pigs was carried out. The drug showed no mortality at this dose level.

The drug (50 & 100 mg./kg, orally) showed no significant effect during pentobarbitone hypnosis studies.

It showed dose dependent significant effect at the dose of 200 and 100 mg./kg. of body weight and potent activity in checking the intestinal motility in comparison to standard control.

Kutaja (50 mg./kg., *i.p.*) exhibited significant writhing effect on albino mice as compared to control.

At the doses of 25, 50, 100 and 200 mg./kg., orally, the drug showed no significant analgesic activity.

Evaluation for the locomotor activity in albino mice, the drug (25, 50, 100 and 200 mg/kg, *i.p.*) treated groups showed insignificant locomotor activity in comparison to control.

During anti-diarrhoeal screening, the drug (50 mg./kg. body weight) showed significant anti-diarrhoeal activity.

11. Nimbadi Churna CRIK

For sub-chronic toxicity studies, Nimbadi churna was given orally, daily at the dose of 250, 125, 25 mg./kg. body weight to female albino rats. The drug was administered for 7 days. The drug shows no toxic effect on animals. Animals remained healthy and no mortality was recorded.

12. Pashana Bheda {*Bergenia ligulata* (Wall.) Engl.)} CRIP

Ethanolic extract of the root of the drug given orally did not produce any change in the gross behaviour, no morbidity, mortality upto a dose of 1000 mg./kg. body weight. The

drug was devoid of analgesic, anti-convulsant, hypothermic, anti-inflammatory activities and did not influence the pentobarbitone induced hypnosis.

13. **Pashana Bheda (*Bergenia cilliata* Sternb.)** **CRIP**

The drug did not exhibit any activity in rats in doses of 100, 200 and 300 mg./kg. body weight administered orally.

14. **Rakta Chandana (*Pterocarpus santalinus* Linn. f.)** **CRIP**

Ethanol extract of the wood of Rakta Chandana exhibited an anti-inflammatory activity in doses of 50, 150 and 500 mg./kg. body weight by oral route.

15. **Shigru (*Moringa Oleifera* Lam.)** **CRIK**

Ethanolic extracts of the root and stem bark were used to see the analgesic activity of the Shigru. At the doses of 10 and 200 mg./kg., orally in albino mice, both the extracts (root and stem bark) in both the doses showed no significant analgesic effect.

16. **Surabhinimba (*Murraya koenigii* Spreng.), MK – a coded drug** **CRIK**

An alkaloid, MK-2 isolated from the hexane fraction of the plant extract was used for the Pharmacological screening. MK-2 showed significant effect in checking the intestinal motility with both the doses (50 and 100 mg./kg., orally), in comparison to control.

MK-2 showed a significant anti-diarrhoeal effect at the doses (50 and 100 mg./kg body weight, orally) in comparison to control.

CRICh

Surabhi Nimba (Curry leaves) decoction showed beneficial hepato-protective activity in rats.

17. **Talisha Patra (*Abies webbiana* Lindl.)** **CRIK**

Drug at 200 mg./kg, *p.o.* showed insignificant effect on locomotor activity in albino rats as compared to control.

18. **Toxicity Evaluation of Virudha Aharam** **CRICh**

Three experimental groups of albino rats namely prawn group, milk group and prawn milk group were studied. Rise in serum alkaline phosphatase and suppression of anti-oxidant enzyme (SOD) suggestive of systemic toxicity due to Virudha Aharam.

10. LITERARY RESEARCH PROGRAMME

The Literary and Medico-Historical Research Programmes of the Council are presently being carried out primarily at the Indian Institute of History of Medicine (IIHM), Hyderabad which of late has been recognized as a national archive and heritage resource center for Indian Systems of Medicine. The Institute which is unique in the whole of South East Asia carried out the following research programmes during the year 2002-2003:

i) Compiled two Medico-Historical Research articles i.e. one entitled " Medico historical aspect of disease *Kilasa*" and another " Diseases of *Annavaha Shrotas*" besides updating compilation work on the drug "*Kushta*" for publishing in the Institute's periodical namely the 'Bulletin of the Indian Institute of History of Medicine': a half yearly journal of the Institute.

ii) The 4th series of the paper entitled "Ayurvedic literature in Urdu language" has been compiled. Besides it, a monograph on Biographies of Commentators and Physicians of Ayurveda & Unani has been prepared and two biographical papers one on *Bhavamishra* and another relating to Physicians of Nizam VII compiled.

iii) "Descriptive notes on Ayurvedic and Unani Palm leaf Manuscripts" as released from time to time in the Institute's Bulletin were compiled.

iv) In regard to programme for Translation and publication of rare works, the Institute undertook the translation for critical edition of *Basavarajiyam* in Hindi/Eng. from Telugu version.

The Institute Library during the period under report acquired 27 new books on History of Medicine & allied sciences and provided referral services to 68 new scholars enrolled from different faculties and disciplines.

The Institute which presently has one museum on Ancient Medicine and another on modern medicine enriched its section concerned with 3 rare historical records and 3 charts/photographs besides supplying copies of exhibits of the museum on payment basis to outside researchers.

Miscellaneous Activities:

i) Compilation work relating to Descriptive Catalogue of Palm leaf Mss. has been undertaken during the period under report.

ii) Additional input has been provided for the project relating to "Revised Checklist of Sanskrit Medical Manuscripts in India" taken up earlier under the directions of Dr.B.Rama Rao, Retd. Director (Instt.).

Participation(s) in Seminars/Meetings etc:

The Institute participated in the Health Tourism Festival held at Hyderabad during February 7-9, 2003. Dr.Ala Narayana, Asstt. Dir. Incharge, IIHM, participated in the Association of Ayurvedic Surgeons of A.P. and CME Programme, Govt. Ay. College, Hyderabad on 16th December, 2002 and delivered a guest lecture on the History of Medicine with special reference to Ancient Indian Surgery. Dr.V.V.Prasad, Research Officer (Ay.) presented an oral paper "Some folk claims, herbs and medicinal plants of A.P." at the Seminar on Folk Wisdom in A.P. held during September, 14-15, 2002 and also participated in World Ay. Congress held at Kochi during November 1-4, 2002 .

The Publication Division of the Council's HQrs. Office published 4th & 5th volume of Data Base on Medicinal Plants used in Ayurveda, CCRAS Research: An over view and also the Ayurvedic Home Remedies (H&E) besides reprinting "Data Base on medicinal Plants used in Ayurveda" & "Common Healing Herb (English)". During the period under report published 3rd & 4th issues of the "Journal of Research in Ayurveda and Siddha" relating to calendar year 2001 and No.1 & 2 relating to calendar year 2002 as also the issues of the "Bulletin of Medico-Ethno-Botanical Research" for the period January to June 2000.

The sale of Council's publications for the year 2002-2003 was Rs. 5,28,080/-

11. FAMILY WELFARE RESEARCH PROGRAMME

The Council has taken up the Reproductive and Child Health (RCH) Programme under the Programme Projection for the year 1998-2003. During the reporting period, the research studies under RCH programme were conducted at Central Research Institutes (Ayurveda) of Delhi, Mumbai, Kolkata, Patiala, Lucknow,Jaipur and RSSCA Units at Ahmedabad,Trivandrum and Jamnagar . The details are as follows:

Clinical Studies:

Oral and Local Ayurvedic contraceptives :

Pippalyadi Yoga with Bhavana of Japa Kusuma:

Two tablets of 500mg. each [consisting of Vidanga (seeds of *Embelia ribes*), Pippali (seeds of *Piper longum*) and Tankan (purified powder of natural Borax) in equal quantity triturated with the flowers of China Rose] were administered with Kanji as vehicle from Day 1 to last day of each menstrual cycle.

Neem Oil :

Neem oil in the dose of one ml. per vagina before each coitus was administered locally. Some centers used Lemon grass oil for deoderising the drug and the compliance was better.

Results:

Number of drop outs on account of pregnancy due to drug failure, drug omission and other reasons recorded during the current reporting period are reported in tabular form as under:

Name of the Drug	Centre	Number of cases					
		Studied		Dropped out due to			Continuing the study
		New	Old	Drug failure	Drug omission	Other reasons	
Pippalyadi Yoga with Bhavana of Japakusum	CRIK	15	63	3	3	48	24
	RRIT	46	23	2	2	44	21
	CRIP	5	13	-	2	7	9
Neem oil	CRIK	27	83	4	4	62	40
Total		93	182	9	11	161	94

12 265 13 15 223

Shishu and Bala Paricharya (Neo natal and child care):

Under this programme, Balakasa, Balatisar, Bal Daurbalya were allotted. Results of the studies carried out during the reporting period are as follows:

Results:

Name of the Drug	Disease	Centre	No. of Cases	Results				
				Good	Fair	Poor	No Resp.	LAMA
Upto 5 years 1.Vasavaleha 2.Kantakari Avaleha 3.Yastimadhu+ Dadim Churna +Banapsha to be given with honey. **From 6-12 years** 1.Chandramrit Rasa alongwith Talisadi churna 2.Nardiyalaksh-mi Vilas Rasa, Godantibhasma Tankana Bhasa 3.Vasavaleha	Bala Kasa	CRI L	149	10	26	95	18	-
		CRIJ	81	28	27	1	1	24
Upto 5 years: Bal Chatur-bhadra Churna alongwith Dadi-mastak churna	Balatisar	CRIL	54	9	8	25	12	-
		CRIJ	8	9	-	-	-	-
Upto 5 years: Mandooradi avaleha **From 6-12 years** : Mandooradivati.	Bal-Daurbalya	CRI L	43	1	4	20	18	-
Total			335	56	65	141	49	24

Current Status of Pippalyadi Yoga Project:

Now the Pippalyadi Yoga has been taken up by the Deptt. of Family Welfare, Ministry of Health & Family Welfare for evaluation of its anti-fertility potential for inclusion of this female oral Ayurvedic contraceptive in the National Population Programme. For this purpose an Expert Group for Anti-fertility Research in Indian System of Medicine has been constituted under the Chairmanship of Prof.Ranjit Roy Chaudhury, Emeritus Scientist, National Institute of Immunology, New Delhi.

Under the supervision of Prof. Ranjit Roy Chaudhury toxicological and terratogenic studies have been carried out at National Institue of Immunology, New Delhi, and no toxicological and terratogenic effects have been reported with Pippalyadi Yoga.

In the current reporting period the CRIA, Patiala has prepared Pippalyadi Yoga capsules for the Phase-II trial to be conducted at AIIMS, New Delhi, PGI, Chandigarh, JIPMER, Pondicherry, KEMH, Mumbai. The samples analysed at NIPER, Mohali showed the variation in the Chromatographic profile indicating the uneven mixture of the ingredients of the capsules. Since these capsules prepared by CRI, Patiala are not found suitable for the clinical trial, it has been now decided to assign the work of standardization, stability studies on bio-availability, evolving the biological markers, in addition to chemical markers to support the clinical studies and also preparation of the drug for the clinical trial on bi-monthly basis for a period of 18 months. Accordingly, Dr.Bhutani, NIPER, has submitted his proposal to Deptt. of F.W, for funding. The Phase-II trial will be initiated after the NIPER, accepts the proposal prepares the fresh batch of Pippalyadi yoga capsules. After establishing its contraceptive efficacy of Pippalyadi Yoga this may be recommended for inclusion in the National Population Control Programme.

12. AMCHI RESEARCH PROGRAMME

The Council runs a Unit of Tibetan/Amchi Medical System at Leh, Ladakh. This Unit has carried out clinical trials of Tibetan/Amchi Medicinal preparation in the treatment, Survey of Medicinal Plants and collection of raw drugs used in Amchi Systems. This Unit also carried out compilation work on manuscripts of Tibetan Medicine which were quite old and rare .

Traditional Amchi System of Medicine plays a very important role of public health in Ladakh. There are various method and medicine are available in Amchi Pharmacopoeia for treatment of hypertension out of which two popular compound preparation are taken for study in two groups . In first group *skuru nema,* 34 patients were studied, out of which 8 got good response, 5 got fair response, 4 poor response, 7 no response, 1 death and 9 dropout . In second group *kochi nathang,* 16 cases were studied, out of which 4 got good response, 3 fair response, 6 poor response, 2 no response and 1 dropout. During the reporting year 1376 patients attended at OPD level, out of which 582 male and 794 were female.

This year medico-botanical survey of Lahoul and Spiti valley has been conducted by the Unit for Amchi and botanical identification of medicinal plants of the areas. These two areas are considered to be very rich for its herbal wealth. Present survey conducted with the help of Field Research Laboratory (DRDO), Leh for better scientific exploration of the area. 371 plants species were collected during the survey.

Literary Research Programme on Ayurvedic Manuscript Tibetan Buddhist Canon Stan-Gyur has been continued during the year.

13. PUBLICATIONS AND PARTICIPATIONS

(I) PUBLICATIONS

Sl. No.	Name of the Author(s)	Title of the Paper	Name of the Journal	Date of Publication
A.	CLINICAL AND BASIC RESEARCH			
1.	Acharya, S.B.	A preliminary study on the effect of *Azadirachta indica* on bronchial smooth muscles and mast cells.	J. Natural Remedies, Vol.3 : 78-82	2003
2.	Kar, A.C. *et al.*	Preventive and curative measures of Slipada (Filariasis) on the basis of Kriyakala.	Sachitra Ayurved, Anka-10 : 771-775	April, 2002
3.	Nair, R.B. *et al.*	Effect of Snehapana on the lipid profile of patients with rheumatic and neurological disorders.	JRAS, Vol.XXIII (No.1-2) : 1-9	2002
4.	Nanda, G.C. *et al.*	Effect of some Ayurvedic drugs on ASO – An outline study.	JRAS, Vol.XXIII (No.1-2) : 29-35	2002
5.	Pillai, B.K.R. *et al.*	The effect of Nimbathiktha (Nimbidin) in Kitibha (Psoriasis) – A double blind clinical study.	JRAS, Vol.XXIII (No.1-2) : 42-50	2002
6.	Pillai, B.K.R. *et al.*	The effect of Psoralia-5 on follicular eczema.	JRAS, Vol.XXIII (No.1-2) : 56-63	2002
7.	Rao, B.C.S.	Clinical studies on the Rasayana effect of Amalaki on apparently healthy persons.	Sachitra Ayurved	November, 2002
8.	Rao, B.C.S. & Sharma, H.B.(Smt.)	Sodhana therapy versus insulin resistance in obese type-2 diabetes (Stulah prameha).	J.Nat.Int.Med. Asso., Vol.45 (No.3) : 7-11	2003
9.	Rao, M.M. *et al.*	Therapeutic evaluation of non-operative measures in the management of Parikartika vis-à-vis Fissure-in-ano.	JRAS, Vol.XXIII (No.1-2) : 71-80	2002
10.	Reddy, R.G.	Management of Fistula-in-ano with Kshara-sutra (medicated thread).	Herald of Health	July, 2002
11.	Reddy, R.G.	Management of Fistula-in-ano (Bhagandara) with Kshara-sutra.	Surabhi	-
12.	Shahi, V.K.	Vamana Chikitsa Vimarsha.	Ayurvedic Mahasammelana Patrika	December, 2002
13.	Sharma, L.K. *et al.*	Clinical evaluation of Panchakola Prakshepa Patrapind Sveda in the treatment of Amavata (Rheumatoid arthritis).	JRAS, Vol.XXIII (No.1-2) : 20-28	2002
14.	Singh, O.P. *et al.*	Management of Kitibha vis-à-vis	Ayurmedline	January-

		Psoriasis.		June, 2002
15.	Singh, O.P. *et al.*	A comprehensive study on Ama and mediated diseases.	Sachitra Ayurved	July, 2002
16.	Singh, O.P. *et al.*	Rationality of using Daruharidra (*B. aristata*) in the management of Kitibha (Psoriasis).	Sachitra Ayurved	September, 2002
17.	Singh, O.P. *et al.*	Liver and skin disorders – a scientific study.	Ancient Science of Life	October, 2002
18.	Singh, O.P. *et al.*	A comparative clinical evaluation of Karvir in the management of Pama (Scabies).	JRAS, Vol.XXIII (No.1-2) : 51-55	2002
19.	Srikanth, N. & Chopra, K.K.	Preventive Ophthalmology – An Ayurvedic exposition.	Sachitra Ayurved, Vol.6 : 450-453	December, 2002
20.	Srikanth, N.	Management of Migraine – A clinical study	Ayurmedline, Vol.6 : 195-201	March, 2003
21.	Srikanth, N. *et al.*	A critical note on some aspects of Slipada (Filariasis) – An inter-disciplinary approach.	Sachitra Ayurved, Vol.10: 761 – 766	April, 2002
22.	Swamy, G.K.	Significance of Nasya in Migraine.	Ayurmedlilne : 172-175	2002
23.	Swamy, G.K. *et al.*	Significance of Sirodhara in Manovikara.	Ayurveda Vikas: 33-41	March-April, 2002
B.	**HEALTH CARE RESEARCH AND ETHNO-MEDICINE**			
24.	Bansal, P.	Religious practices in North-India to cure disease.	Bull.Ind.Inst.Hist. Med. Vol.31 (No.1) : 25-30, 2001	2002
25.	Bikshapathi, T. *et al.*	Folklore claims from Bangalore District, Karnataka, Part-II.	Sachitra Ayurved, Vol.55 (No.4) : 217-219	2002
26.	Maity, S.K.	Vate Malish.	Suswastha (Bengali fortnightly Journal)	January, 2003
27.	Saxena, R.B.	Soya bean.	Sachitra Ayurved, year 55 (No.9) : 685-694	March, 2003
28.	Saxena, R.B.	Desi-Ajwayan (*Trachyspermum ammi.*).	Sachitra Ayurved, year 55 (No.4) : 198-207	2002
29.	Tewari, V.P. & Joshi, G.C.	Vedic Kaleen Sandighd Dravya, Som.	Sachitra Ayurved : 38-45	July, 2002
C.	**DRAVYA-GUNA, MEDICO-BOTANICAL SURVEY & CULTIVATION**			
30.	Billore, K.V.	Save endangered Guggul – It's propagation – A need of future.	Agrobios, Vol.I (No.8) : 45-46	2003
31.	Borkar, G.B. *et al.*	Observation on leaf culture of Brahmi (*Bacopa monnieri* (L.) Pennel.	BMBER, Vol.XXI (No.1-2) : 46-52, 2000	2003
32.	Borkar, G.B. *et al.*	In vitro propagation of Prasarini (*Paederia foetida* Linn.) through stem	BMEBR, Vol.XXI, (No.1-2) : 80-87, 2000	2003

		and leaf culture.		
33.	Borse, S.G. *et al.*	Effect of growth regulators on growth of metabolism of *Solanum khasianum* Clarke.	BMEBR, Vol.XXI, (No.1-2) : 53-59, 2000	2003
34.	Gurmet P. *et al.*	Medico-botanical survey of Sapi valley of Kargil (Ladakh Himalayas).	BMEBR, Vol.XXI (No.1-2) : 1-10, 2000	2003
35.	Joseph, G.V.R. *et al.*	Pharmacognostic studies on the leaves of *Aegle marmelos* (Linn.) Corr.	BMEBR, Vol.XXI, (No.1-2) : 27-36	2003
36.	Rawat, M.S. & Shankar, R.	Medicinal plants used in Ayurveda : collection and cultivation in A. Pradesh.	Arunachal Forest News, Vol.19 (No.1-2) : 157-163	2001
37.	Shankar, R. & Rawat, M.S.	Arunachal Pradesh Mein Ayurveda Upyogi Vanoshadhiyon Ka Krishikaran.	Upavan Samarika : 15-19	2002
38.	Shankar, R. & Rawat, M.S.	Ayurvedic medicinal plants of Arunachal Pradesh : Bio-diversity and systematic utilization.	Arunachal Forest News, Vol.19 (No.1-2) : 148-156	2001
39.	Tiwari, K.C. *et al.*	Breeding status of Musk deer & neo-natal care.	Wildlife Information Bulletin, Vol.VIII (i):6-17	January, 2002
D.	**PHARMACEUTICAL, PHARMACOGNOSTICAL AND CHEMICAL RESEARCH**			
40.	Joseph, G.V.R.	Pharmacognostic studies on the roots of *Baliospermum raziana.*	Ancient Science of Life, 22(2) : 1-8	2002
41.	Mary, Z. *et al.*	Pharmacognostic studies on Changeri (*Oxalis corniculata* Linn.).	Ancient Science of Life, Vol.21 (No.2):120-127	2002
42.	Saraswathy, A.	Role of Phyto-chemistry in herbal drugs identification.	Sachitra Ayurved, Vol.55 (No.4) : 296	2002
43.	Saxena, R.B.	Relation between Anupans and Pharmaceutical aspects of Abhrak bhasma.	Sachitra Ayurved, year 54 (No.11) :852-855	2002
E.	**PHARMACOLOGY**			
44.	Alam, M.M. *et al.*	Hypoglycaemic action of some Ayurvedic formulations.	Aryavaidyan, Vol.XVI : 45-50	2002
45.	Mounnissamy, V.M. *et al.*	Diuretic activity of gossypetin isolated from *Hibiscus sabdariffa* in rats.	Hamdard Medicines, Vol.XLV (No.2) : 68	2002
46.	Sadishkumar, S. *et al.*	In vitro screening of Gardenin-A and its derivatives.	Indian Drugs, Vol.40 (No.1) : 30-33	2003

F.	LITERARY & MISCELLANEOUS			
47.	Hussain, S.A.	Translation of the 12th Chapter of "Uyoonul Anba Fi Tabaqatil Atibba".	Bull.Ind.Inst.Hist. Med., Vol.31(No.1):93-101, 2001	2002
48.	Kumar, A. *et al.*	Ayurvedic Heritage of J.& K. – A review of Sri Ranbira Cikitsa Sudha Sara.	Bull.Ind.Inst.Hist. Med., Vol.31 (No.2) : 133-138, 2001	2002
49.	Padhi, M.M. *et al.*	Udisa Ki Puratan Panduliliyon Se Udhruta Kuchh Saral Chikitsa Tatha Yaugik Ausadhiyan (Jvar Chikitsa-1).	Sachitra Ayurved	October, 2002
50.	Padhi, M.M. *et al.*	Udisa Ki Puratan Panduliliyon Se Udhruta Kuchh Saral Chikitsa Tatha Yaugik Ausadhiyan (Jvar Chikitsa-2).	Sachitra Ayurved	December, 2002
51.	Padhi, M.M. *et al.*	Udisa Ki Puratan Panduliliyon Se Udhruta Kuchh Saral Chikitsa Tatha Yaugik Ausadhiyan (Jvar Chikitsa-3).	Sachitra Ayurved	
52.	Padhi, M.M. *et al.*	Udisa Ki Puratan Panduliliyon Se Udhruta Kuchh Saral Chikitsa Tatha Yaugik Ausadhiyan (Jvar Chikitsa-4).	Sachitra Ayurved, Vol.55 (No.9) : 661-664	March, 2003
53.	Prasad, P.V.V.	Human anatomy in Atharvaveda.	Bull.Ind.Inst.Hist. Med., Vol.31 (No.1) : 1-10, 2001	2002
54.	Prasad, P.V.V. & Subhaktha, P.K.J.P.	Apamarga (*Achyranthes aspera* Linn.) : A medico-historical review.	Bull.Ind.Inst.Hist. Med., Vol.31 (No.1) : 11-24, 2001	2002
55.	Prasad, P.V.V.	Jwara (fever) : A medico-historical perspective.	Bull.Ind.Inst.Hist. Med., Vol.31 (No.2) : 103-125, 2001	2002
56.	Singh, O.P. *et al.*	Common herbs used in different skin disorders as described in Ayurvedic classics.	Ancient Science of Life	January, 2003
57.	Subhaktha, P.K.J.P.	Indu and Bhattanarahari : The commentators of Ayurvedic classical treatises.	Bull.Ind.Inst.Hist. Med., Vol.31 (No.2) : 155-159, 2001	2002
G.	BOOKS/MONOGRAPHS			
58.	Bikshapathi, T.	Vividha Vyadhulu Ayurveda Chikitsa (in Telugu).	Gautam Publishers, Vijayawada	2002
59.	Billore, K.V.	Ethno-botanical studies in Rajasthan, India – An update.	Recent Progress in Medicinal Plants (Ethno-med. and P'cognosy), Vol.I : 189-199	2002

60.	Dhar, B. *et al.*	An evaluation of some controversial Ayurvedic drugs of Indian pharmaceutical industry.	Recent Progress in Medicinal Plants (Ethno-Med. And P'cognosy), Vol.I : 297-314	2002
61.	Joshi, G.C. *et al.*	Diversity and status of Ayurvedic Medicinal Plants of Uttaranchal.	Himalayan Medicinal Plants Potential & Prospects. Editors-S.S.Samant et al.; 125-150, G.B.Pant Instt. of Him. Env. & Dev.,Kosi Katarmal, Almora, Publishers-Gyanodaya Prakashan, Nainital	Dec. 2001
62.	Shankar, R. *et al.*	Ethno-medicinal plants of Papum Pae district of Arunachal Pradesh.	Ethno-medicinal plants of Tribes of Arunachal Pradesh, Editors T.Mibang & S.K. Choudhary : 30-34	2003
63.	Sharma, P.C. *et al.*	Data Base on Medicinal Plants used in Ayurveda, Vol.IV.	Published by CCRAS, New Delhi	2003
64.	Sharma, P.C. *et al.*	Data Base on Medicinal Plants used in Ayurveda, Vol.V.	Published by CCRAS, New Delhi	2003

(II) PARTICIPATIONS

Sl. No.	Name of the Author(s)	Title of the paper	Name of the Conference/Seminar/ Workshop and date of participation
A.	**CLINICAL AND BASIC RESEARCH**		
1.	Bansal, N.K. *et al.*	Therapeutic efficacy of Tagaradi and Ushiradi Churna in the management of hypertension.	4th International Seminar on Ayurveda, held at GAU, Jamnagar (Gujarat), 5-7/1/2003
2.	Bharathi, K. *et al.*	Comparative study of formulae, AVBJ, in the management of Vyanabala Vaisamya (Essential hypertension).	World Ayurveda Congress, 2002, held at Kochi (Kerala), 1-4/11/2002
3.	Devi, A. *et al.*	Use of Udumbar (*Ficus glomerata*): Stem bark as Kwatha douche in the management of Leucorrhoea and vaginitis.	2nd World Congress on Bio-technological Development of Herbal Medicine, organized by International Society for Herbal Medicine, held at NBRI, Lucknow. 20-22/2/2003
4.	Dwivedi, G.V. *et al.*	The management of Asthma with single herbs and	-do-

		Vasadikwatha : An Ayurvedic preparation.	
5.	Jaya, N. and Madhavikutty, P.	Salient observation of Vamanakarma as a therapeutic component of Panchakarma on some Kapha predominant diseases.	World Ayurveda Congress, 2002, held at Kochi (Kerala), 1-4/11/2002
6.	Kar, A.C. *et al.*	Role of Rasayana Therapy in the management of AIDS.	Ayurvedic Conference on Rasayana organized by Rashtriya Ayurveda Vidyapeeth, New Delhi.
7.	Kar, A.C. *et al.*	A Study on the effect of Sunthi Guggulu and Godanti Bhasma on Amavata (Rheumatoid arthritis).	4th International Seminar on Ayurveda, held at GAU, Jamnagar, 5-7/1/2003
8.	Kaur, J. *et al.*	An Ayurvedic formulation in the management Menopausal syndrome – A modern Scientific approach.	-do-
9.	Kusumakumari, K.	Clinical Evaluation of the effect of a herbal formula in the management of Medoroga (Obesity and Lipid disorders).	-do-
10.	Madhavikutty, P. and Jaya, N.	Sodhana and Samana effect of Dasamoola Bala Taila on Gridhrasi (Sciatica).	World Ayurveda Congress, 2002, held at Kochi (Kerala), 1-4/11/2002
11.	Menon, T.V. and Nesamany, S.	Comparative clinical evaluation of the effect of herbo-mineral drugs/Panchakarma therapy in the management of Pakshavadha.	Workshop on Research Methodology in Ayurveda, organized by Ayurveda Medical Education, Kerala, held at Thiruvananthapuram, March, 2003.
12.	Nair, P.K.S. *et al.*	Changes in Lipid profile of Rheumatoid arthritis patients undergoing Panchakarma therapy.	World Ayurveda Congress, held at Kochi (Kerala), 1-4/11/2002
13.	Nair, R.B.*et al.*	Effect of Snehapana (Medicated Ghee/Oil) on the lipid profile of patients with rheumatic and neurological disorders.	-do-
14.	Nanda, G.C. *et al.*	Clinical evaluation of herbo-mineral formulation in the management of Arsha.	National Seminar on Ano-rectal diseases and Workshop on Kshara-Sutra, organized by CRI(Ay.), Kolkata,28-30/7/2002
15.	Prabhakaran, V.A.	A comparative study of Jalukavacharana (Sodhana Chikitsa) and Bheshajya	-do-

		Karma (Samana Chikitsa) in the treatment of external piles (Bahya arsha).	
16.	Prasad, R.D.*et al.*	A clinical trial on the efficacy of Shirisa Twak Kwatha in the management of Tamaka Shwasa.	4th International Seminar on Ayruveda held at GAU, Jamnagar (Gujarat), 5-7/1/2003
17.	Rao, M.M.	Comparative Clinical evaluation of modified Kshara-Sutra in the management of Fistula-in-ano.	National Seminar on Ano-rectal diseases and Workshop on Kshara-Sutra, organized by CRI(Ay.), Kolkata, 28-30/7/2002
18.	Reddy, R.G.	Managing Anal Fissure (Parikartika) with Hingul Ghritam.	-do-
19.	Reddy, R.G.	Management of Fistula-in-Ano with Kshara sutra (Medicated thread).	-do-
20.	Sahrawat, D. *et al.*	Management of Urolithiasis – A clinical trial of an Ayurvedic formulation.	4th International Seminar on Ayurveda, held at GAU, Jamnagar (Gujarat), 5-7/1/2003
21.	Sharma, O R.	An outbreak of viral hepatitis (Kamala) in distt. Mandi (H.P.) : Management through Ayurvedic formulation – A clinical study.	World Ayurvedic Congress 2002, held at Kochi (Kerala), 1-4/11/2002
22.	Singh, O.P. *et al.*	Clinical evaluation of Kanchanar Guggulu and Goksuradi Guggulu in the management of manifested cases of Slipada.	Ayurveda World Summit-2003, held at Bangalore, 6-9/2/2003
23.	Singh, R. & Trivedi, V.P.	Preliminary clinical evaluation of Guduchi – Chitrak Yoga for its anti-diabetic activity.	2nd World Congress on Bio-technological Development of Herbal Medicine, organized by International Society for Herbal Medicine, held at NBRI, Lucknow, 20-22/2/2003
24	Singh, R. *et al.*	Evaluation of anti-ischemic potential of Pushkar-Guggulu in the treatment of ischemic heart disease.	-do-
25.	Singh, U.S. *et al.*	Evaluation of combined effect of Vacha (*Acorus calamus*) and Brahmi (*Bacopa monnieri*) in the prevention and management of anxiety	-do-

		neurosis (Manodvega).	
26.	Singh, R. *et al.*	A clinical assessment of *Shirish (*Albizzia lebbeck* Benth.) in cases of Bronchial asthma (Tamak shwas).	11th Foundation Day Celebrations and Seminar on Tamak Shwas (Bronchial asthma), organized by J. of National Sharir Research Institute, Sandila-Hardoi (UP), 7-8/9/2002
27.	Srikanth, N. *et al.*	Ayurvedic management of Urolithiasis – An appraisal of some clinical studies.	Ayurvedic Scientific Seminar on Kidney-Urinary disorders organized by Rashtriya Ayurved Vidyapeeth, New Delhi, 26-27/3/2003
28.	Srikanth, N. & Sharma, K.D.	Prevention of blindness through Ayurvedic medical and para-surgical approaches.	National Seminar on Health for all in the new Millennium, organized by National Institute of Health & Family Welfare, New Delhi, 24-26/2/2003
29.	Srikanth, N. *et al.*	Effect of Daruharidra (*Berberis aristata* DC.) Ashchyotana in allergic conjunctival inflammation – a clinical study.	4th International Seminar on Ayurveda, held at Jamnagar (Gujarat), 5-7/1/2003
30.	Srikanth, N. & Sharma, K.D.	Clinical studies on the role of Ayurvedic medical and para-surgical approaches in the management of chronic simple glaucoma.	World Ayurveda Congress – 2002, held at Kochi (Kerala), 1-4/11/2002
31.	Swamy G.K. & Swamy, R.K.	Palliative and Sodhana therapy in the management of Tamak Swasa – A comparative study	-do-
32.	Venkateshwarlu, G. *et al.*	Comparative clinical evaluation of Kankatri and Krakatri – an Ayurvedic compound in the management of Arsha (haemorrhoids).	National Seminar on Ano-rectal diseases and workshop on Kshara-Sutra, organized by the CRI(Ay.), Kolkata, 28-30/7/2002
B.	**HEALTH CARE RESEARCH AND ETHNO-MEDICINE**		
33.	Audichya, K.C.	Varishta Jano Ka Swasthya Sanrakhana Avam Chikitsa	Senior Citizen's Council, Jaipur, 13/7/2002
34.	Bharti, *et al.*	An insight into common problems in Kshar-Sutra procedure and their management.	4th International Seminar on Ayurveda, held at GAU, Jamnagar (Gujarat),5-7/1/2003
35.	Deep, V.C. *et al.*	Practical implementation of Oushadhakala.	Ayurveda World Summit-2003, held at Bangalore. 6-9/2/2003
36.	Deep, V.C. *et al.*	Dry land (Jangala Desa) is best for health – a critical study.	World Ayurveda Congress 2002, held at Kochi (Kerala), 1-4/11/2002

37.	Gurmet, P.	Ayurveda in Tibet.	-do-
38.	Gurmet, P.	Amchi Medicine and Ayurveda (Hindi).	Seminar on Himalayan Art and Culture, Leh, 2002
39.	Gurmet, P. and Chaurasia, O.P.	Trans-Himalayan medicinal plants and their applications in Traditional Amchi Medicine of Himalayas.	3rd World Congress on Medicinal and Aromatic Plants for Human Welfare, held at Changmai (Thailand),3-7/2/2003
40.	Jadhav, A.D.	Aushadi Vanaspati Va Roga Nivaran.	Seminar on Aushadhi Sugandhi Laqwad Prakriya and Bajarpeth, organized by Marathi Vigyan Parishad, held at Mumbai, 18-19/5/2002
41.	Jadhav, A.D.	Aushadi Vanaspati Utpadan, Purvabhyas and Sadhya Sthiti.	Seminar for Cultivation of medicinal plants – need, reality and problems, organized by Maharashtra Government,26-27/12/2002
42.	Mishra, D.K. *et al.*	Cancer – An Ayurvedic View.	National Interactive Meet (NIM-2002) – Scope and opportunities in Research and Business of Medicinal and Aromatic Plants, held at CIMAP, Lucknow, 17-18/5/2002
43.	Narayan, A.	Health care – An Ayurvedic Approach.	Decentralised Management of Rural Health Care, held at National Institute of Rural Development, Hyderabad,22-23/7/2002
44.	Phuntso, S.T and Gurmet, P.	Role of Amchi (Tibetan) Medicine for Public Health in Himalayan regions.	International Conference on Role of ISM in the 21st Century, held at Chennai,1-2/02/2003
45.	Prasad, P.V.V.	Some folk/tribal claims, herbs and medicinal plants of Andhra Pradesh.	NISSAT Seminar on Folk Wisdom in A.P., held at Hyderabad, 14-15/9/2002
46.	Prasad, P.V.V.	Diet and Dietetics in Ayurveda and their importance in present scenario.	World Ayurveda Congress 2002, held at Kochi (Kerala), 1-4/11/2002
47.	Rawat, M.S. and Shankar, R.	Folk Medicinal Plants in Arunachal Pradesh.	Workshop-cum-Training on Medicinal and Aromatic Plants cultivation and management for sustainable development in Arunachal Pradesh, 18-19/11/2002
48.	Sahu, D.P.	Successful rural practice with herbal preparations for care of pregnant women and mothers.	National Conference on Rural Health, held at Loni, (Maharashtra). 12/2002
49.	Sahu, D.P.	Aetio-Pathogenesis of Fistula-in-Ano.	National Seminar on Ano-rectal diseases and Workshop on Kshara-Sutra, organized by CRI (Ay.), Kolkata, 28-30/7/2002

50.	Shankar, K. *et al.*	Indian Plant lores used in the management of Diabetes	2nd World Congress on Bio-technological Development of Herbal Medicine, organized by International Society for Herbal Medicine, held at NBRI, Lucknow, 20-22/2/2003
51.	Sharma, L.K. *et al.*	Problems and Solutions of Kshara-Sutra preparation.	National Seminar on Ano-rectal diseases and Workshop on Kshara-Sutra, organized by CRI (Ay.), Kolkata,28-30/7/2003
52.	Sharma, L.K. *et al.*	Concept of Ksharnirman used in Ano-rectal diseases.	-do-
C.	**DRAVYA-GUNA, MEDICO-BOTANICAL SURVEY & CULTIVATION**		
53.	Bhatt, A.V.*et al*	Medicinal Plants of Pharmaceutical importance from Kerala.	World Ayurveda Congress 2002, held at Kochi (Kerala), 1-4/11/2002
54.	Chaurasia, O.P. and Gurmet, P.	Conservation, cultivation and sustainable utilization of medicinal and aromatic plants of Indian cold desert.	3rd World Congress on Medicinal and Aromatic Plants for Human Welfare held at Changmai (Thailand),3-7/2/2003
55.	Gurmet, P. and Chaurasia, O.P.	Status and conservation of Trans-Himalayan medicinal plants.	Regional Workshop on conservation of Himalayan Medicinal Plants, Nepal, 2002
56.	Prasad, P.V.V.	Dravyaguna, the Ayruvedic Pharmacology and its role in Globalisation of Ayurveda.	World Ayurveda Congress 2002, held at Kochi (Kerala),1-4/11/2002
57.	Shahi, V.K.	Padap Oushadhi Dravyon Kee Uplabdhi Avum Pramanika Aaj Ke Paripreskya Mein.	National Interactive Meet (NIM-2002) held at CIMAP, Lucknow, 17-18/5/2002
58.	Shankar, R. and Rawat, M.S.	Ayurvedic Medicinal Plants.	Workshop-cum-Training on Medicinal and Aromatic Plants cultivation and management for sustainable development in Arunachal Pradesh,18-19/11/2002
59.	Tiwari, K.C. *et al*	Cultivation of Saffron in the non-habitat area of Ranikhet.	4th International Seminar on Ayurveda, held at GAU, Jamnagar (Gujarat),5-7/1/2003
60.	Tiwari, K.C. *et al*	Behaviour & Habitat of a vulnerable sps. Musk Deer – Animal of Red Data Book.	-do-
D.	**PHARMACEUTICAL, PHARMACOGNOSTICAL & CHEMICAL RESEARCH**		
61.	Alam, M.M. *et al*	Studies on Standardisation and anti-tumour activities of Chayavanprasa.	World Ayurveda Congress 2002, held at Kochi (Kerala),1-4/11/2002

62.	Brindha, P.	Micro morphological standardization in raw drug trade.	National Seminar on Siddha Medicine, held at Tanjore, 9-10/12/2002
63.	Brindha, P. *et al*	Pharmacognostic studies on *Mirabilis jalapa*	National Symposium on Biosciences Advances. Impact and Relevance, held at Bareilly (UP), 27-29/10/2002
64.	Brindha, P. *et al*	Pharmacognostic anatomy of *Canna orientalis*	-do-
65.	Brindha, P. *et al*	Pharmacognostic studies on *Strebulus asper* Lour.	-do-
66.	Brindha, P. *and* Saraswathy, A.	Pharmacognostic standardization of *Toddalia asiatica*.	National Seminar on Bio-active polyphenols, held at Kovilvenni (T.N.),10-11/3/2003
67.	Brindha, P. *et al*	Localisation of tannins and its role in the activity of drug plant.	-do-
68.	Das, M.N. *et al.*	Pharmacognosy of fruit of Pineapple.	90th Session of Indian Science Congress, Jan, 2003
69.	Das, M.N.	Pharmacognostic evaluation of the crude drugs used in the preparation of Kshara-Sutra	National Seminar on Ano-rectal diseases and Workshop on Kshara-sutra, organized by CRI (Ay.), Kolkata, 28-30/7/2002
70.	Das, M.N.	Conservation and utilization on Indian medicinal plants-ancient and modern views with special reference to Pharmacognosy	National Seminar on ISM&H, organized by R.K.Mission, Narendrapur, West Bengal, 25-27/12/2002
71.	Das, M.N. *et al.*	Pharmacognosy of some unorganized crude drugs used in Indian System of medicine.	4th International Seminar on Ayruveda held at GAU, Jamnagar (Gujarat), 5-7/1/2002
72.	Gayathri Devi, V. (Smt.) *et al.*	Medico-botanical identification of *Tephrosia purpurea* (root).	12th Swadeshi Science Congress, held at CTCRI, Thiruvananthapuram, 5-7/11/2002
73.	Girija, P.V. *et al.*	Standardisation of Bal-chaturbhadrika curna – An Ayurvedic formulation.	World Ayurveda Congress 2002, held at Kochi (Kerala), 1-4/11/2002
74.	Hazra, J.	Standardisation of Ayurvedic Drugs with special reference to G.M.P.	National Seminar on ISM&H, organized by R.K.Mission, Narendrapur, West Bengal. 25-27/12/2002

75.	Indira Ammal, M.J.(Smt.) *et al.*	Physico-chemical studies of Vaiswanara curna (prepared by Ashtanga-hridaya method).	12th Swadeshi Sciences Congress, held at CTCRI, Thiruvananthapuram, 5-7/11/2002
76.	Joseph, G.V.R.	Standardisation of *Phyllanthus species* – An efficient hepato protective drug described in Ayurveda.	World Conference Therapies Ethno-Medicine, University of Munich. Germany. 11-13/10/2002
77.	Joseph, G.V.R.	Quality control and standardization of herbal drugs through microscopic studies.	World Ayurveda Congress 2002, held at Kochi (Kerala), 1-4/11/2002
78.	Joseph, G.V.R. and Namboodiri, P.K.N.	Standardisation of herbal drugs used in the Indian System of medicine.	International Conference of ISM&H held at Chennai, 1-2/2/2003
79.	Joseph, G.V.R. and Namboodiri, P.K.N.	Quality control and Standardisation of herbal drugs through microscopic studies –Pt II.	4th International Seminar on Ayruveda, held at GAU, Jamnagar (Gujarat),5-7/1/2003
80.	Mandal, S.(Mrs.)	Chemical analysis of the medicated flax thread used for the treatment of Ano-rectal diseases.	National Seminar on Ano-rectal diseases and Workshop on Kshara-Sutra, organized by the CRI (Ay.), Kolkata,28-30/7/2002
81.	Mandal,S. *et al.*	A new dimeric coumarin –Floramin from Indian Rutaceae, *Boenninghausenia albiflora* R.& M.	90th Indian Science Congress, Jan., 2003
82.	Nair, G.A.	Amino acids and sugars of the flowers of *Woodfordia fruticosa* Kurz.	World Ayurveda Congress 2002, held at Kochi (Kerala), 1-4/11/2002
83.	Padhi, M.M. and Tewari, N.S.	Parameters for evolving standard and acceptable drug from a plant.	National Seminar on Plant Resource Utilisation for Backward Area Development and 27thAnnual Conference of Orissa Botanical Society,held at RRL, Bhubaneshwar,28-29/12/2002
84.	Prasad, B.C.S.	Laboratory parameters to evolve Rakthodusti.	National Workshop on Standardisation of Clinical parameters for Dosa, Dhatu and Mala with special reference to Rasa, Prana, Raktha and Manovaha Srotas, organized by National Institute of Ayurveda, Jaipur,24-25/3/2003
85.	Saraswathy, A	Patents on Phytochemicals from medicinal plants.	Plenary Session, Patent WTP/IP of the Seminar on Medicinal Plants and Species, held at Chennai, 7/4/2002

86.	Saraswathy, A	Bio-active polyphenols and their significance in the identification of Umbelliferous fruits.	National Seminar on Bio-active Polyphenols, held at Kovilvenni, Thiruvarus (T.N.),10-11/3/2003
87.	Saraswathy, A and Sathyanathan, V.	Role of Bio-active polyphenols in the identification of market samples of Agil.	-do-
88.	Saraswathy, A.	Standardisation studies on Traditional medicine.	3rd World Congress on Medicinal and Aromatic Plants for Human Welfare, held at Chiangmai, Thailand,3-7/2/2003
89.	Saraswathy, A.	Studies on the market samples of Agaru.	International Conference on the role of Indian System of Medicine in the 21st Century, held at Chennai, 1-2/2/2003
90.	Saxena, R.B.	Standardisation of Murch-hita Til Taila	-do-
91.	Saxena, R.B.	Quality improvement of Ayurvedic drugs formation and pharmaceutical preparation.	World Ayurveda Congress 2002. held at Kochi (Kerala),1-4/11/2002
92.	Shankar, K. *et al.*	Standardisation of Kumari (*Aloe barbadensis* Mill.) with emphasis on chemical and pharmacognostical parameters.	National Convention on Current Trend in Herbal Drugs. organized by Indian Society of Pharmacognosy and held at K.B.Institute of Pharmaceutical Education and Research, Gandhi Nagar, Gujarat, 22-24/11/2002
93.	Shankar, K. *et al.*	Standardisation of Karavali (*Momordica charantia* Linn.) with chemical and pharmacognostic parameters.	-do-
94.	Shankar, K. *et al.*	Standardisation of Churnas (Chitrakadi, Talishadi, Trikatu, Triphala and Nimbadi): Chemical variation and quality control.	-do-
95.	Shankar, K. *et al.*	Standardisation of Vacha (*Acorus calamus*) : A pharmacognostical and phytochemical investigation.	2nd World Congress on Bio-technological Development of Herbal Medicine, organized by International Society for Herbal Medicine, held at NBRI, Lucknow 20-22/2/2003
96.	Shankar, K. *et al.*	Role of Kumari (*Aloe barbadensis*) in the purification of Kukkutandatwak (shell of Hen's egg), with special reference to heavy metal contamination.	-do-

97.	Sharma, G.N. *et al.*	Studies on Physiological and non-physiological contamination in some phytomedicines.	-do-
98.	Singh, S.P. *et al.*	Standardisation of Turmeric – An Ayurvedic drug.	National Seminar on Medicinal Plants, held at Govt.Ayurveda College, Thiruvananthapuram, 12-13/8/2002
99.	Singh, S.P. *et al.*	An assessment of acid rain in India.	-do-
100.	Singh, S.P. *et al.*	Standardisation of An Ayurvedic drug, Ajowan.	World Ayurveda Congress 2002, held at Kochi(Kerala),1-4/11/2002
101.	Singh, S.P. *et al.*	Comparative study of *Cyperus rotundus* (Musta) and its substitute *Kyllinga triceps.*	12th Swadeshi Science Congress, held at CTCRI, Thiruvananthapuram,5-7/11/2002
102.	Singh, S.P. *et al.*	Acid deposition and its control by critical load determination.	-do-
103.	Singh, S.P. *et al.*	Effect of Pollution on medicinal plants.	4th International Seminar on Ayurveda, held at GAU, Jamnagar, Gujarat, 5-7/1/2003
104.	Singh, S.P. *et al.*	Phytochemical and morphological investi-gation of *Kyllinga triceps.*	-do-
E.	**PHARMACOLOGY**		
105.	Pillai, N.R. *et al.*	Preliminary investigation on the hepato-protective effect of *Murraya koeniggii* in carbon tetrachloride induced liver damages in albino rats.	-do-
106.	Saraswathy, A. and Mageswari, S.	Polyphenols as anti-microbial agents.	National Seminar on Bio-active Polyphenols held at Kovilvenni (T.N.),10-11/3/2003
107.	Saraswathy, A. *et al.*	Anti-microbial activity of *Lansium anamaliayanum* Bedd.	National Symposium on Bio-sciences Advances, Impact and Relevance held at Bareilly (UP), 27-29/10/2002
108.	Singh, R. *et al.*	Evaluation of Anti-depressant potential of Ashvagandha (*Withania somnifera*) and Kapikacchu (*Mucuna pruriens)* : Herbal drugs combination.	2nd World Congress on Bio-technological Development of Herbal Medicine, organized by International Society for Herbal Medicine, held at NBRI. Lucknow, 20-22/2/2003
109.	Venugopal Rao, S.	Application of Pharmacology in Ayurvedic System of Medicine.	ICMR Training Course on Clinical Pharmacology, organized by J.N.Medical College, Mumbai, 22-28/11/2002

F.	LITERARY & MISCELLANEOUS		
110.	Gurmet, P.	Scope for study of ancient Indian Medical Literature in Tibetan Manuscripts.	4th International Seminar on Ayurveda, held at GAU, Jamnagar (Gujarat),5-7/1/2003
111.	Nanda, G.C.	Retrieval of Palm leaf manuscript of Ayurveda in Sanskrit literature – An urgent need.	41st Session of All India Oriental Conference, held at Puri, Orissa, 12/2002
112.	Narayana, A.	History of Medicine with reference to Ancient Indian Surgery.	Annual Meet of Association of Ayurvedic Surgeons of A.P. and C.M.E. Programme held at Govt.Ayurvedic College, Hyderabad, 16/12/2002
113.	Prasad, P.V.V.	History of medicine (Ayurveda) and brief introduction on activities and achievements of IIHM and facilities available thereon.	Seminar of Health Tourism Festival, held at Hyderabad, 7-9/2/2003
114.	Saxena, R.B.	Role of Research on Ancient Histcry of Saffron (*Crocus sativus*)	4th International Seminar on Ayurveda, held at GAU, Jamnagar, Gujarat, 5-7/1/2002
115.	Singh, O.P. *et al.*	Plants used for the treatment of Slipada (Filariasis) as described in Ayurvedic Classics.	National Seminar on Plant Resources Utilisation for Backward Area Development, held at RRL, Bhubaneshwar, 28-29/12/2002

B – SIDDHA

1. Abbreviations Used for Institutes/Units

S.No.	Year of Estt.	Institute/Unit	Abbreviation
1.	1970	Central Research Institute, Chennai	CRISC
2.	1979	Regional Research Institute, Pondicherry	RRISP
3.	1980	Clinical Research Unit, Palayamkottai	CRUSP
4.	1986	Clinical Research Unit, Trivandrum	CRUST
5.	1979	Drug Research Scheme (MD) Chennai	DRS(MD)SC
6.	1979	Drug Standardisation Research Unit,Chennai	DSRUSC
7.	1982	Drug Standardardisation Research Unit, Bangalore	DSRUSB
8.	1981	Drug Standardisation Research Unit,Trivandrum	DSRUST
9.	1971	Survey of Medicinal Plants Unit Palayamkottai	SMPUSP
10.	1979	Literary Research and Documentation Department,Chennai	LR&DDSC

2. CLINICAL RESEARCH PROGRAMME

The Clinical Research Programme in Siddha medicine is being carried out on selected clinical conditions by the Institutes/Units functioning under the Council. During the reporting year, the clinical conditions such as Kalanjagapadai (Psoriasis), Putrunoi (Cancer), Manjal Kamalai (Infective hepatitis), Santhu Vathasoolai (Rheumatoid arthritis), Venkuttam (Leucoderma) etc. were studied.

KALANJAGA PADAI (Psoriasis)

Kalanjaga Padai has been taken up for study by the Central Research Institute, Chennai. The coded drug 777 oil was administered at the dose of 10 ml. with milk two times a day to all the cases selected for trial. The patients were also advised to apply the oil externally on the affected parts of the body. The results of the treatment are as under:

Results of Clinical/Therapeutic Trial of 777 Oil on Kalanjaga Padai (Psoriasis)

Sl.No.	Drug	Total Cases	Results of the trial			
			Comp. Relief	Marked Relief	Moder. Relief	LAMA Relief
1.	777 oil	172	34	102	-	36

VATHA SOOLAI

This disease condition has been described in the Siddha texts under "Vatharogangal". The study is to evaluate the efficacy of Ayaveera Chendooram and Pechangan Charu in the cases of Vathasoolai has been taken up by the Regional Research Institute, Pondicherry. The trial drug Ayaveera Chendooram at the dose of 120 mg. alongwith honey was administered in two divided doses. Fifty six (56) cases were taken up for study during the reporting year. Out of the 56 cases, 33 cases got complete relief, 14 cases got marked relief and 9 cases did not respond to the treatment.

KARAPPAN

The study on this clinical condition was carried out at the Clinical Research Unit,Trivandrum. The efficacy of the drugs Parangipattai Choornam, Sangu Parpam, Idivallathi Mezhugu, Punga Thailam were studied in two groups of at doses of 500 mg., 130 mg. and 130 mg. respectively two times a day. The results of the treatment are as under:

Results of Clinical/therapeutic Trial of Siddha Preparations on Karappan

Sl.No.	Drug	Total Cases	Results of the trial			
			Comp. Relief	Marked Relief	Moder. Relief	LAMA Relief
1.	Parangipattai Choornam Sangu Parpam	110	62	24	7	17
2.	Idivallathi Mezhugu Punga Thailam (External application)	105	46	22	14	23
	Total	215	108	46	21	40

YANAIKKAL NOI (Filariasis)

The effect of Linga Chendooram, Thalampoo Mathirai / Nilavembu Kudineer and Kakkattanver Karkam and their combinations were studied on Yanaikkalnoi at the Clinical Research Unit, Trivandrum. The study was carried out in three groups, in both carrier and manifested cases of Yanaikkal noi at Out Patient level 11 cases were studied during the reporting year. The following table shows the results of the study.

Results of Clinical/therapeutic Trial of Siddha Preparations on Yanaikkalnoi (Filariasis)

Sl.No.	Drug	Total Cases	Results of the trial			
			Comp. Relief	Marked Relief	Moder. Relief	LAMA Relief
1.	Linga Chendooram	6	3	1	1	1
2.	Kakkattan Ver Karkam	3	1	1	-	1
	Total	9	4	2	1	2

SANTHU VATHA SOOLAI (Rheumatoid arthritis)

Santhu Vata Soolai is described in Siddha literature, as one of the 80 Vatharoganal. A study to evaluate the effect of Arumuga Chenduram, Ayakanatha Chenduram Visha mutt/thailam Mahaveera Mezhugu in the management of Sandhu Vatha Soolai has been taken up at Central Research Institute, Chennai. 130 mg. two times a day followed by palm jaggery

was administered to all the 43 cases selected for trial. The results of the treatment are mentioned below:

Results of Clinical/therapeutic Trial of Siddha Preparations on Santhu Vatha Soolai (Rheumatoid arthritis)

Sl.No.	Drug	Total Cases	Results of the trial			
			Comp. Relief	Marked Relief	Moder. Relief	LAMA Relief
1.	Mahavera Mezhugu	43	1	13	19	10
2.	Arumuga Chenduram Ayakanatha Chenduram Vishamutti thaiam	30	21	3	2	4
	Total	73	22	16	21	14

MANJAL KAMALAI (Infective Hepatitis)

The study on this clinical condition has been carried out at the Central Research Institute, Chennai. The trial drug Arunelli Karkam was administered at the dose level of 1 gm. in two divided doses along with water. 1 case was selected for the trial during the reporting year.

VALI GUNMAM (Peptic ulcer)

This disease condition is one of the eight varieties of the Gunmarogangal found in the Siddha texts. The Central Research Institute, Chennai has taken up clinical trial on this disease condition to determine the effectiveness of Suyamagni Chendooram. The patients suffering with severe pain in the epigastric region, nausea, vomiting with both eruption and haematosis etc. were selected for the trial. The diagnosis was further confirmed on modern parameters such as FTM, barium meal X-ray etc. The trial drug administered at the dose of 100 mg. filled in the gelatine capsules,twice a day for five days. Omam bath and gengeli oil bath have been advised on 6th and 7th day. The course was repeated for two more time. Three cases were taken up for study during reporting period. Out of the 3 cases,1 case showed marked relief, and 2 cases were discharged against medical advise.

ELUMBU MURIVU CHIKICHAI(Bone setting)

This disease condition has has been taken up by Clinical Research Unit(Siddha) Trivandrum. The study has undertaken to assess the effect of Odivu Murivu Thirumeni

Thailam, Sivappu Kukkail Thailam. 25 cases were taken up for study out of which 23 cases showed compelte relief and 2 cases showed marked relief.

PUTRU NOI (Cancer)

This disease condition has been described in Siddha text & under "Verananoigal". The study was undertaken in Central Research Institute,Chennai. The coded drugs RGX,VK2 and SKX formulated by the Institute were taken up for the trial. The drugs at the dose of 250 mg. each filled in gelatine capsules were administered, twice daily alongwith milk. Ulcers and tumors were dressed with Nithiyakalayani Karkam and Pachaiennai with Thurusu. It is noted that all the cases showed considerable reduction in the size/growth of ulcer/tumours, reduction/or arrest of the discharge and also reduction of pain. 2 cases were studied during the reporting year.

ERAIPPU NOI (Bronchial asthma)

Eraippu Noi is one of the respiratory diseases described in Siddha literature. The efficacy of the drug Amaoni Oodupanpam were studied at the Clinical Research Unit, Trivandrum. 96 cases were selected for trial during the period. Out of 96 cases, 12 cases showed complete relief, 52 cases showed marked relief, 20 cases showed marked relief 18 cases showed moderate relief and remaining cases did not respond to the treatment.

Out Patients/In Patients Attendance at a Glance

Sl.No.	Instt./Unit	No. of Patients Attended at OPD			No. of Patients Admitted in IPD
		New	Old	Total	
1.	CRI,Chennai	10,827	28,111	38,938	222
2.	RRI,Pondicherry	5,110	15,437	20,547	56
3.	CRU,Palayamkottai	97	1,016	1,113	-
4.	CRU,Trivandrum	1,387	3,724	5,111	-
	Total	17,421	48,288	65,709	278

3. MEDICO-BOTANICAL RESEARCH PROGRAMME

Survey of forest areas for procuring drugs and arranging the supply of required materials for Research purposes occupies an important place. Medico-Botanical Survey Unit functioning at the Govt. Siddha Medical College, Palayamkotai has taken up this task. This Unit was established in 1971.

The Unit is engaged in exploring the availability of medicinal plants especially used in Siddha medicine, in the forest areas of Tamil Nadu. The study includes identifications, quantitative and qualitative analysis of the genuine drugs their substitute/adulterants etc.

During the reporting year, the Survey Unit conducted 21 collection/survey tours in and around Coimbatore, Tirunelveli and Kanyakumari forest areas and also for collecting the medicinal plants to supply to other Units. 295 specimens are collected during these collection tours (Field book No.7578 to 8097) and belong to 124 families 477 genera and 517 species were collected and reported. 295 specimens also collected during tours for herbarium.

All the 295 herbarium specimens were identified and mounted on the Herbarium sheets. Out of the Herbarium specimens added to the herbarium the following are some of the important and widely used plants in Siddha medicine.

Siddha Name	Botanical Name
Sivanar Vempu	Indigofera aspalathoides
Kanjankorai	Ocimum americanum(L.)Cent.
Velvelam	Acacia leucopholea (Roxb.) Willd.
Nokkttamaram	Eryobotrya japonica.
Toon maram	Toona ciliata M.Roem.
Kal aal	Ficus tsjakela Burm.f.
Karaibilangee	Trichilia connaroides
Perumpoonaikali	Mucuna atropurpurea DC.
Kudasappalai	Holarrhena antidysenterica
Vellai poonaikali	Mucuna deeringiana
Mulilavam	Ceiba pentandra (L.) Gaertn.
Manjal karisalai	Wedelia calendulacea Less.
Kattamanakku	Jatropha podagirica

Adatoda	Justicia adhatoda L.
Sirupuladi	Desmodium triflorum (L.)DC.
Siriya nangai	Polygala chinensis L.
Palaikodi	Leptadenia reticulata
Periya kattukodi	Tiliacora acuminata(Lam.)Hook.f.
Aarththividayan	Cryptocoryne spiralis Fisch.
Nai kadugu	Corchorus aestuans L.
Mulkodi	Scleropyrum pentandrum
Surapinnai	Calophyllum polyanthum Wall.
Keezhanelli	Phyllanthus amarus Schum & Thorn.
Ambalai,Pulimangai	Spondias pinnata(L.F)Kurz.
Pampukzaha	Rauwolfia tetraphylla L.
Kazharchi	Caesalpinia jayabo Maza.
Chembaravalli	Cissus discolor Blume.
Indira puspham	Thunbergia fragrans Roxb.
Konchi	Glycosmis mauritiana (Lam.)
Chitrakai	Solanum anguivi Lam.
Kurunthotti	Sida rhombifolia L.
Samutrappachai	Arygyreia nervosa(Burm.f.)Boj.
Neer arali	Asclepias curassavia L.
Vippurudi	Chlorophytum nimmonii
Manjal kurinji	Gymnostachym canescens
Kasithumbai	Impatients chinensis Lam.
Nilamanjal	Globba ophioglossa Wight.
Poothakarappan	Schefflera venulosa Harms
Azhukanni	Drosera indica L.
Kodakkpuli	Garcinia gummigutta(L.)Robs.
Malai konnei	Acrocarpus fraxinifolius
Vellaiagil	Dysoxylum malabaricum Bedd
Neerparani	Ceratopteris thalictroides L.
Sisu	Dalbergia sisoo Roxb.
Mayilai	Vitex altissima L.
Kasithumai	Impatiens klenii W. & A.
Oorilai thamarai	Nervilia carinata (Roxb.)Schitr.
Perumbandali	Litsea deccanensis
Kanavazhai	Aclisia secundiflora
Amalai	Allophyllus serratus(Roxb.)Kurz.
Nirekirambu	Jussiea suffruticosa Linn.
Cheppunerunji	Indigofera endecaphylla Jacq.
Karuvai	Prosopis glandulosa Torrey.
Kattuelam	Alpinia malacensis

Perumpitchi	Gardenia angusta (L.)Merr.
Pon mussuttai	Cissampelos pareira L.
Pachortipattai	Symplocos cochinchinensis
Malaiitcham	Phoenix loureirii Kuntn.
Kurunthotti	Side glutinosa Commers.ex.Cav.
Kodampuzhi	Garcinia gummigutta(L)Robs.
Nagamutti	Tiliacora acuminata(Lam.)Hook.f.
Siruthumbai	Leucas biflora R.Br.
Unnu	Grewia tiliaefolia Vahl.
Pulichakodi	Ceropegia juncea Roxb.
Kurincha	Wattakaka volubilis(L.f.)Stapf.
Paraiotti	Pothos scandens L.
Uroma vrutcham	Bischoflia javanica Blume.
Pachaikiluvai	Commiphora caudate
Pirambu	Calamus rotang L.
Palkodi	Parsonia alboflavescens
Kayampoo	Memecylon edule Roxb.
Poo maruthu	Lagerstromia reginae Roxb.
Vellarugu	Enicostemma axillare
Periyanangai	Polygala javana DC.
Vellarugu	Enicostemma axillare
Nangai	Polygala bulbothrix Dunn.
Siruvirusu	Ehretia ovalifolia Wight.
Mahilam	Mimusops elengi L.
Kazha	Carissa carandus L.
Karai	Canthium parviflorum Lam.
Virali	Dodonaea viscosa L.
Nannari	Hemidesmus indicus (L)R.Br.
Thalaisuruli	Aristolochia tagala Cherv.
Kattu milagu	Piper trioicum Roxb.
Malaitanakku	Hymenodictyon orixense
Karukovai	Solena amplexicaulis
Puzhukkan pattai	Anisochilus carnosus Wall.
Kattu lavangam	Litsea wightiana(Nees.)Hook.f.
Parani	Bolbitis appendiculata
Shutthi	Vernonia arborea Buch.Ham.
Kattukadalai	Osbeckia aspera Blume.
Vellaakil	Aglaia simplicifolia (Bedd.)Harma.
Erumainakku	Pouzolzia bennettiana Wight.
Paulonia	Paulownia tomentoss Steud.
Kuruvichipoondu	Hibiscus ovalifolius(Forsk.)Vahl.
Kanavazhai	Commelina coelestis Willd.

Kattukodi	Mikania scandens
Malaiparuthi	Hibiscus plantanifolius Sweet.
Mudakkartan	Cardiospermum canescens Wall.
Unchai	Albizzia amara Boive.
Vellaimulli	Barleria longiflora L.F.
Chempulichan	Erythroxylum monogynum Roxb.
Mayilmannikam	Ipomoea quimoclit L.
Pulladi	Desmodium repandum(Vahl.) DC.
Kattumullai	Jasminum calophyllum Wall.
Masipatghiri	Artemisia nilagirica(Clarke)Pam
Kalyanamurungai	Erythrina subumbrans
Chempul	Cares baccans Nees
Iviralikkovai	Diplocyclos palmatus(L.) Jeffrey
Kattu Rutratcham	Elaeocarpus munronii
Patchai	Plectranthes wightii Benth.
Iruppaval	Gnaphalium luteo album L.
Kadapla	Bhesa indica
Violet	Viola pilosa Blume.
Orilai	Uraria picta Desv.
Vaividangam	Embelia ribes Burm.
Sorianangu	Girardinia leschnaultiana Dcne.
Arisikorai	Sceleria lithosperma (L.) Sw.
Thogai parani	Odentasoria chinensis
Aartualari	Homonoia riparia Lour.
Surapinnai	Calophyllum apetalum Willd.
Chukala	Aglaia elaeagnoidea Benth.
Thattupputtan	Passiflora edulis Sims.
Kattumumgai	Moringa concanensis
Vertilai Pettai	Callicarpa tomentosa (L)Merr.
Thuvarai	Cajanus cajan
Malai vallarai	Hydrocotyle javanica Thunb.
Narambali	Naglia wallichiana
Luvanga	Luvanga sarmentosa
Kuravankanamooli	Thottea sillquosa
Kattuiluppai	Palaquium ellipticum
Masipatchi	Artemisia parviflora

19 different parts of the plants were collected and added to the Museum collection maintained by the Unit raising the total to 834 drug samples.

105 Folk-medical claims are listed in the report, collected from Paliyars tribes of Srivilliputtur forest division for treating/managing certain diseases like rejuvenation, piles and fistula, bleeding wounds, boils, indigestion, Manjal Kamalai, toothache, fevers, urinary infection, diuretic, insect/poisoness bite, swelling and pain in joints.

47 kg. of different parts of the medicinal plants were collected during the tours and preserved by the Unit. Out of this collection 18.920 kg. dried plant parts were sent to different units of the Council.

4. PHARMACOGNOSY RESEARCH PROGRAMME

The Pharmacognosy Research Programme is being undertaken at Pharmacognosy Research Wing functioning in Central Research Institute(Siddha), Chennai. During the reporting year pharmacognostic study on the following drugs were reported.

1. Pulinaralai - *Cyphostemma setosum*(Roxb.)Alston
2. Peetarohini - *Coptis teeta* Wall
3. Kokkumandarai - *Bauhinia tomentosa* L.
4. Tandri - *Terminalia belerica* Roxb.
5. Kattujeeragam - *Centratherum anthelminticum*(Willd) Kunz.
6. Nuna - *Morinda tinctroia* Roxb.
7. Chenthumbai - *Leonotis nepetaefolia* R.Br.
8. Marukkarai Ver. - *Catunaregam spinosa* Thunb.
9. Thenmaram - *Guazuma tomentosa* Kunth.

The study includes medicinal uses of the drug, its distribution, qualitative availability and description beside macro- and microscopical characters, physico-chemical constants and phyto-chemical screening for the presence of active principles.

Literary Survey

1. Marukkarai - *Catunaregam spinosa* Thumb.
2. Chandanam - *Santalum album* L.

Collection/Procurement

1. Pulinaralai - *Cyphostemma setosum* (Roxb.) Alston
2. Marukkarai Ver - *Catunaregam spinosa* Thunb.
3. Ishvaramuli - *Aristolochia indica* L.
4. Kattujeeragam - *Centra therum anthelminticum*(Willd.) Kuntz.
5. Kuruver - *Coleus vettiveroides* Jacob.
6. Koohai neer - *Maranta arundinacea* L.
7. Seenthil stem - *Tinospora cordifolia* Miers.
8. Kovai - *Coccinia indica* L.

Museum

5 Siddha medicinal plant specimens are added to the Museum raising the total to 45.

5. PHARMACOLOGY RESEARCH PROGRAMME

The Pharmacology Research Programme has been carried out by the Pharmacology Section of the Central Research Institute,Chennai and Pharmacology Wing to Drug Research Scheme (MD),Chennai. The study has been conducted on the pre-determinded experimental models in the laboratory attached to the Institute. The following single/compound drugs are studied for their efficacy and also to determine their effect as anti-inflammatory, antitoxic and analgesic.

1. Athimathuram (*Glycyrrhiza glabra*)
2. Idivallathi Mezhugu
3. Mudakkattan Choornam (*Cadiospermum halicacabum*)
4. Sivappukukil Thailam
5. Thalaga Mathirai
6. Thaazhampoo mathirai
7. Uthamani Choornam (*Pergularia extensa*)
8. Uthamani Thailam
9. Vathakesari Thailam
10. Avuri (*Indigofera tinctoria*)
11. Neermulli Kudineer

ACUTE TOXICITY STUDY:

Acute toxicity study with the drug *Glycyrrhiza glabra* in the dose of 10,000 mg./kg. body weight was found to be nontoxic on albino rats and albino mice. The drug Idivallathi Choornam was found to be nontoxic up to 10,000 mg./kg. body weight in mice and 5000 mg./kg. body weight was found to be nontoxic on albino mice and 10,000 mg./kg. body weight on albino rats. The drug Sivappukukil Thailam in oil form was found to be non tosic up to 40 ml./kg. body weight. In the drugs Thalaga maathirai, and Thaazhampoo maathirai 33.33% and 66.66% mortality were observed in the dose of 10,000 mg./kg. body weight respectively. The drugs Pergularia extensa in Choornam form and Thailam form were found to be nontoxic up to maximum doses i.e. 10,000 mg/kg and 50 ml/kg body weight, respectivelty. The drug Vathakesari Thailam was found to be nontoxic up to the dose of 40 ml/kg, body weight. The drug *Indigofera tinctoria* (Chloroform extract) in graded doses on albino rats and mice was found to be nontoxic up to 10,000 mg/kg body weight.

ANTI INFLAMMATORY STUDY:

Carrageen induced paw odema study on albino rats with the drug Idivallathi mezhugu in the doses of 50, 100, 250, 500 and 1000 mg./kg. It showed maximum 52.12% anti-inflammatory activity in the does of 500 mg/kg. *Cardiospermum halicacabum* in choornam

form showed 73.01% anti inflammatory activity in the doses of 500 mg./kg. Thaazhampoo maathirai in the dose of 200 mg/kg body weight showed 54.24% antiinflammatory activity. *Pergularia extensa* in Thailam form in the doses of 7.5 ml/kg body weight showed maximum 82.89% anti-inflammatory activity in rats. Neermulli Kudineer in the doses of 20 ml and 30 ml/kg body weight showed 62.68% anti-inflammatory activity.

ANTI-ARTHRITIS STUDY

Formaldehyde induced arthritis study on albino rats with the drug *Pergularia extensa* in Thailam form in the doses of 1, 2, 5 and 10 ml/kg body weight and with the drug Vathakesari Thailam in the doses of 2 and 5 ml/kg. body weight were carried out. The data are to be analysed statistically and the results will be communicated in due course of time.

6. PHARMACEUTICAL/ STANDARDISATION RESEARCH PROGRAMME

The drug standardization plays an important role for obtaining authentic medicinal preparations and genuine single drugs for the therapeutic efficacy. It also occupies important place in both drug and applied clinical research because this provides approach data for obtaining genuine single drugs and authentically prepared compound medicines. The standardization work has been taken up by the Council to study Siddha Formulary (Part-I) and also the single drugs which are entering into those formulations. The study was entrusted with Drug Standardisation Research Unit at 1. CRI(S), Chennai 2. Drug Standardisation Research Unit at RRI(DR), Trivandrum and 3. Drug Standardisation Unit at RRI(Ay.) Bangalore.

The Programme aims at the study of single drugs, pharmaceutical process involved in the manufacture of the formulations and finished products including laying down analytical standards.

List of single drugs on which phyto-chemical studies have been done (Analytical studies)

S.No.	Name of the drug	Parts Analysed
1.	Naval (*Syzygium cumini*)	Bark
2.	Kattujirakum (*Vernonia anthelmintica*)	Seeds
3.	Kuruver (*Coleus vetiveroides*)	Root
4.	Pulinaralai (*Cissus setusa*)	Aerial parts
5.	Koohaineer (*Maranta arundinacea*)	Tuber
6.	Marukkarai (*Catunaregam spinosa*)	Root
7.	Kookaiheer (*Maranta arundiracea*)	Starch
8.	Thumbai (*Leucas aspera*)	Root
9.	Peetarohini (*Coptis teeta*)	Root
10.	Milagaranai (*Toddalia asiatica*)	Aerial parts
11.	Paccu nir (*Areca catechu*)	Seed juice
12.	*Paspalam scrobiculatum* Linn.	Seed
13.	*Tephrosia purpurea* Pers.	Root
14.	Pasumpal	
15.	Pasumor	
16.	Tayir	
17.	Tayirtilevu	
18.	Venney	
19.	Pasuvenney	

20.	Manithanman taiodu	
21.	Naiman taiodu	
22.	Kasturi	
23.	Sambalpoosanikayi (*Benincasa hispida*)	Fruit and seed
24.	Pasalakkirai(*Basella alba*)	Leaf
25.	Peyppirakam(*Luffa acutangula*)	Leaf,fruit,seed
26.	Vepam(*Azadirachta indica*)	Leaf
27.	Amanakku(*Ricinus communis*)	Leaf

Prepared Medicine

1. Palakarai parpam
2. Venkara parpam
3. Karappan tailam
4. Ulundu tailam
5. Mayana tailam
6. Maandha enney No.1
7. Merugulli tailam
8. Virana sanjeevi tailam
9. Maandha enny No.2
10. Murukkan vidai matyirai
11. Vasantha kusumakaram
12. Amurtadi kuligai
13. Lavangadi maathirai
14. Padigalinga chenduram
15. Rasa Chenduram
16. Arumukha chenduram
17. Chandamarutha chenduram
18. Naga chenduram
19. Sanjeevi Maathirai
20. Kazharchi tailam
21. Venkara podi
22. Raja Rajaswaram
23. Paavana kadukkai
24. Biramananda bairavam
25. Elavangaathi mathirai
26. Salotharamani
27. Kakkana mathirai
28. Thalaka karuppu
29. Kanthaka rasayanam
30. Karisalai legiyam
31. Naraathai legiyam
32. Parangi rasayanam
33. Sarapunga vilvaathi legiyam
34. Erasa kenthi mezhugu
35. Vida muttith tailam(Elaku)
36. Kazharchichi tailam
37. Vida muda muttith tailam
38. Vellai mezhugu
39. Thooduvalai ney
40. Padikara neer
41. Karisalai legiyam
42. Mahavalaathi legiyam
43. Irunelli Karpam
44. Muttuchippi parpam
45. Pavala parpam
46. Velvanga parpam
47. Uloka mandura Chenduram

Phyto-chemistry

1. Pidangunari - *Premna tomentosa*
2. Brahmi - *Bacopa monnieri*
3. Kuruvi chedi - *Ehretia microphylla*
4. Kattucheerakam - *Vernonia anthelmintica*

Literary Survey(Single drugs)

1. Cow's milk
2. Whey
3. Kattucheerakam - *Vernonia anthelmintica*
4. Koohaineer - *Maranta arundinacea*
5. Milagaranai - *Toddalia asiatica*
6. Vetchi - *Ixora coccinea*
7. Kuruvichedi - *Ehretia buxifolia*

7. PHARMACY

The Pharmacy attached to Central Research Institute (Siddha), Chennai is engaged in the preparation of classical preparations found in the Siddha literature and also chosen trial drugs for the Institutes/Units of Siddha medicine under the Council.

The raw drug requirement of the Pharmacy met by the Medico-ethno-botanical survey projects also from the local markets. Thus collected drugs are identified through experts in the field of Siddha medicine and pharmacognosy to determine its genuineness/authenticity.

The prepared medicines based on the method given in the literature are strictly followed in the Pharmacy. Varieties of preparations both required for research and general use are being prepared in the pharmacy such as Parpam, Chendooram, Choornam, Thailam, Nei, Parpam, Ennai, Kalkam etc. During the reporting period 1081 kg. of Chendooram, Choornam, Parpam etc. and 1351.9 litres of oil based preparations were prepared.

8. LITERARY RESEARCH PROGRAMME

Literary Research Programme has been carried out by the Literary Research and Documentation Deptt., Chennai. The work carried out during the reporting year are as given under.

1. Bogar Karukkadai Nigandu-500,: Compared corrected and ready for printing.
2. Ramadevar-1000:compared corrected and ready for printing.
3. Agathiyar Pancha kaviya Nigandu-800:Compared, corrected and ready for printing.
4. A compact disc was prepared consisting of all information of 100 cudjan leaves manuscripts.
5. The Council's publication were sold for Rs.49,406/- during this period.

9. PUBLICATIONS & PARTICIPATIONS (SIDDHA)

I. PUBLICATIONS

Sl. No.	Name of the Author(s)	Title of the Paper	Name of the Journal	Date of Publication
1.	Brinda, P. *et al.*	Micro morphological standardization on Pulinaralai – A Siddha medicine.	Indian Med. & Homoeo. J., Vol.2 (No.1) : 26-36	2002
2.	Ethirajulu, S. *et al.*	On the standardization of Seenthil Sarkkarai (Guduchi satva).	BMEBR, Vol.XXI (No.1-2) : 37-45, 2000	2003
3.	Ramesh, C. *et al.*	Study design of the clinical trial of traditional Siddha anti-diabetic formulation.	Indian Med. & Homoeo. J., Vol.1 (No.4)	2002
4.	Rao, K.K.(Smt.)	Treatment of Arthritis Siddha and allopathy methodology.	Indian Med. & Homoeo. J. Vol.2 (No.1) : 37-43	2002
5.	Saraswathy, A. & Rukmani, S.	Analysis of Vallaraney and Brahmi Taila.	Sachitra Ayurved, Vol.55 (No.9) : 701-703	March, 2003
6.	Saraswathy, A. *et al.*	Analysis of some Siddha medicines used for Kamala.	BMEBR, Vol.XXI(No.1-2) : 73-79, 2000	2003
7.	Saraswathy, A. *et al.*	Studies on the standardization of some Siddha medicines used in leucoderma.	BMEBR, Vol.XXI(No.1-2) : 60-72, 2000	2003
8.	Saraswathy, A. & Brinda, P.	Veterinary uses of plants.	BMEBR, Vol.XXI(No.1-2) : 15-26, 2000	2003
9.	Saraswathy, P. *et al.*	Standardisation of Uppu Chenduram – A Siddha preparation.	Aryavaidyan, Vol.26 (No.1) : 20-22	2002

II. PARTICIPATION

Sl. No.	Name of the Author(s)	Title of the paper	Name of the Conference/ Seminar/Workshop and Date of Publication.
1.	Anandan, T. & Sivaprakasam, K.	Scope for automation of pulse reading : A non-invasive simple diagnostic tool used in Siddha System of Medicine.	International Conference on the Role of ISM&H in the 21st Century, held at Chennai, 1-2/2/2003

2.	Chelladurai, V.	Export potential of Medicinal Plants through Tutucorin harbour.	New Millennium Seminar on Medicinal Plants held at Tirunelveli, 11/2002.
3.	Gayathri Devi, V. (Smt.) *et al.*	Comparative study of a Siddha drug, Murukkan Vidai Mathirai and its market sample.	World Ayurveda Congress 2002 held at Kochi (Kerala), 1-4/11/2002
4.	Gnanasekari, G. (Smt.) *et al.*	Digitalization of medical information.	National Convention on Virtual Medical Libraries in India, organized by MLAI,New Delhi, 23-25/12/2002
5.	Gnanasekari, G. (Smt.) *et al.*	Expert system as an effective tool in organizing digital knowledge.	International Conference on the Role of ISM&H in the 21st Century, held at Chennai, 1-2/2/2003
6.	Gopal, V. *et al.*	Preliminary pharmacological screening and testing for anti-asthmatic activity of *Acalypha indica* Linn. (Euphorbiaceae) in human.	-do-
7.	Jega Jothi Pandian, S. *et al.*	Athithoola Rogam (obesity) and its management through natural products.	-do-
8.	John, A. (Smt.) *et al.*	Physico-chemical evaluation of Aya Birunga Rasa Karpam.	World Ayurveda Congress 2002, held at Kochi (Kerala), 1-4/11/2002
9.	John, A. (Smt.) *et al.*	Standardisation of Elaku Vida Muttith Thailam using chemical methods.	12th Swadeshi Science Congress, held at CTCRI, Thiruvananthapuram, 5-7/11/2002
10.	Meenakshi Sundara Moorthy, K. *et al.*	Thinai and its influences of three humours in Siddha System of Medicine.	International Conference on the Role of ISM&H in the 21st Century, held at Chennai, 1-2/2/2003
11.	Mohanta, G.P.	Anti-bacterial and anti-fungal activity of *Andrographis echinoids*.	National Seminar organized by Annamalai University, held at Annamalai Nagar, 3/2003
12.	Padma Soma Subramanian, M.	Lesser known potent herbs from the rural folks of Tirunelveli.	New Millennium Seminar on Medicinal Plants, held at Tirunelveli, 11/2002
13.	Rajalakshmi, S. (Smt.) *et al.*	Protocol for evaluation of the efficacy of the coded herbal drug on Psoriasis.	International Conference on the Role of ISM&H in the 21st Century, held at Chennai, 1-2/2/2003
14.	Rao, K.K. (Smt.) *et al.*	Scientific evaluation of Siddha Metal Therapy.	National Conference organized by Tamil University, Thanjavur, 12/2002

15.	Rao, K.K. (Smt.) & Veluchamy, G.	Toxicological profile boon or ban for Siddha.	International Conference on the Role of ISM&H in the 21st Century, held at Chennai, 1-2/2/2003
16.	Sasikala, E. (Smt.) *et al.*	Standardisation of *Premna tomentosa* Willd.	-do-
17.	Saraswathy, A. *et al.*	Anti-hepatotoxic study of Raca Kanti Meluku – A Siddha compound drug.	National Symposium on Bio-Sciences Advances Impact and Relevance, held at Bareily (UP),27-29/10/2002
18.	Saraswathy, A. *et al.*	Standardisation studies on two Siddha medicines.	International Siddha Congress-2002, held at Kilavayal (TN), 24-26/5/2002
19.	Vasanth, S.(Smt) *et al.*	Analytical and HPTLC methods to standardize Piramy Ney.	National Conference organized by Tamil University, Thanjavur,12/2002.
20.	Vasanth, S.(Smt)	Unique plants in SiddhaSystem of Medicine Chemistry & Biology	International Conference on the role of ISM&H in the 21st century, held at Chennai, 1-2/2/2003.

IV. ACKNOWLEDGEMENT

The Director of the Council places on record its deep appreciation for the services rendered by the members of the Governing Body, Finance Committee and Scientific Advisory Committees. The valuable assistance, guidance and continued support given by them to the Council in the conducting of its work is acknowledged with gratitude.

The Director of the Council also places on record his gratitude and deep sense of appreciation to scientists and scholars of various disciplines of medical system and other ancillary sciences, Universities and Government agencies who are directly or indirectly associated with this Council and officials of all the research projects including the Headquarters office for their cooperation in implementing the various programmes undertaken during the period under report.

The Council avails this opportunity to convey its profound thanks to Government of India, Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of AYUSH for their continuous support, helpful attitude and co-operation which enabled the Council to pause its activities in the field of research and hopes to receive their continued support and co-operation in future also for the over all development of Ayurveda and Siddha.

The Council places on record the effort of Deputy Director (Technical), Programme Officers, Statistical Officer, Nodal Officer and Research Officer (Ay.) for bringing out the Annual Report in the present form.